

ASHA AG. N. 15

1.621



আশা আর্কাইভ	
1.621	
ASHA ARCHIVES	

१॥ गङ्गाधरी कर्मविधि ॥ ॥ यत्कृत्विधानमालकावधाय ॥ कृत्तु सचतुसमन्त्र
दिनवानलावसिधलनपीचकवाय ॥ ॥ यत्कृत्मानयूयराजन ॥ नृयादि ॥
वाक् ॥ ॥ यीयीयीध्व
सुदवरायागकामनयावावाहनिमिरवायायासादसुवर्कलहाधजावला
हनसिद्धाग्निभूयतादूगियत्कृत्तुथिकर्मनि कर्तुं यूयराजनसमर्थयामि ॥
॥ ॥ गीसम्बर्कमलुलार्ककमपदनिदितानन्दहाकिमृगमासृष्टं न्यायचतुष्टकं
मृकूलकूलगर्ग्यश्वर्कवान्यषट्कं चत्वार्यायश्वर्कान्ययूनचयिचतुर्वं तरुनाम

लुलदं ससृष्टं यनतस्मै नमस्तु नृवरं रुचवं श्रीकृजं ॥ ॥ स्यामानकादिनरा
स्तनरुचनमितामर्कमार्कगगमि विम्वारोचानू (लगायुतनजयना मयलाच
त (लगा) देवा (इवम्) (लगा) वनवनवृक्ष भववला कंठरागा सामथी कृद्विकाखा
विनसाक्षानदिवोद्यमाद्यं ॥ ॥ उत्कृष्टं वृज कर्षिकाय विगतायी सिद्धिलक्ष्म्या यना क
यूचसृष्टिकन्दकन्दधवलानि ॥ ॥ (लगा) यथा (लगा) यथा सँसाना लूवदूख ॥ ॥ यं कदरुनि निष्क
स्यनसृष्टे दायी मयश्च मुखाम्बुजा दक्षगुजा यगस्त्रिताया गुव ॥ ॥ वक्रादिमुखे ॥ सूत्र
लाकया लेख्यचूनाय ययतमुतस्थित्व भवयं रुचवमादिदवं सृष्ट्यश्च साखी धनर्षय

यथा॥ ॥ त्रैलोक्यविष्णुमायाचदेत्यदुर्गनासिनी॥ रुद्रितस्याभवत्तुङ्गी गङ्गाय
त्रिसंस्तिगा॥ ॥ सर्वचक्रगणरुक्मा चतुर्विद्विस्तृषिगा॥ नत्तवातामहाकाशानाना न
त्तविस्तृषिगा॥ रुद्रितयष्टजगन्धृष्टसदा रुद्रितक्षविधी॥ स्वर्गमूर्तचयातालस्तिनि नू
यनसंस्तिगा॥ गृहहसमहादेशकदम्बवृक्षवासिनी॥ तिष्ठति यो ० नेमर्त्य नानायति न २
मासुते॥ ॥ पूर्वदक्षिणयत्त्रिभारुत्रिवायुर्वीदिवामासिकादेश॥ वदहृत्तदुर्ग
वर्णं रुद्रमन्त्रनाथयत्र॥ ॥ मन्त्रनष्टवन्मादिदेवद्विगुण॥ साकादिदाययरा नित्यानन्द
मथायुमादितसदावल्यादियुजाविधि॥ ॥ सिद्धिप्रदुक्तिया नभूवद्विप्रमुधनागभयुष्टि

नमः सनी नमः ॥ नमः नमः नमः ॥ सर्वविघ्नो ह्यमनं सर्वभूतानि कर्तुं गुरुं नमः ॥
 नमः कामेश्वर लक्ष्मी संपत्तिवर्द्धने ॥ यथावानय रुद्रानां कवचं रुद्रवृत्तानि ॥ तत्तद्देव
 विष्णुगर्भा नमः रुद्रवृत्तानि ॥ यथा राजनं समर्पयामि ॥ आचार्यो ह्यवज्ञाय ॥ ॥ अथ
 कलसाचनं ॥ ॥ स्तुत्यादि ॥ ॥ गुरुनमस्काव ॥ गुरुवत्तुमस्तु ता कार्त्तव्याकं यनचचाचनं
 तस्य दन्दं तं यन ॥ तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ गुरुर्वक्त्रं गुरुर्विष्णुं गुरुदत्तं महेन्द्रं ॥ गुरुद
 वज्रं गत्सर्वं तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ नमः गुरुवे नमः ॥ नमः गुरुवे नमः ॥ नमः गुरुवे नमः ॥ नमः
 गुरुवे नमः ॥ नमः गुरुवे नमः ॥ नमः गुरुवे नमः ॥ नमः गुरुवे नमः ॥ नमः गुरुवे नमः ॥ नमः

॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० क० नि० वि० का० य० न० म० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० भू० ना० मि० का० य० न० म० ॥
ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० म० ध० मा० य० न० म० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० ग० ऊ० न्या० य० न० म० ॥ ॐ हं स०
म० लू० ज० या० य० ग० गु० ष्टा० य० न० म० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० क० ल० ग० ल० य० ष्टा० य० न० म० ॥ ॐ हं स०
न्या० म० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० द० द० या० य० न० म० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० लि० व० स० खा० रु० ॥ ॐ ३
हं स० म० लू० ज० या० य० लि० खा० य० वो० षट् ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० क० व० वा० य० दू० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या०
य० न० ग० या० य० व० षट् ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० भू० मा० य० रु० ट् ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य०
जा० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य० द० द० या० य० न० म० ॥ ॐ हं स० म० लू० ज० या० य०

जिनमस्यारु॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय जियाये वोषट्॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय कवचाय दू
॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय नरुगयाय वषट्॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय नूसाय रुट्॥ नूवारु
नसाय नचन्दनाक्षरयूष्यं नमः॥ (धनू मूर्त्ती दर्शयन्॥ ॥ गायति॥ ॐ शं स॥ नू मृतीऽ
यविद्मरु मृत्युं जयाय धीमही न नानरुयचादयात्॥ ॥ नूद्यं युजा॥ नूद्यं यासाय न
मः॥ ॐ शं स॥ द्वादयाय नमः॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय जिनमस्यारु॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय जि
खाय वोषट्॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय कवचाय दू॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय नरुगयाय वषट्
॥ ॐ शं स॥ मृत्युं जयाय नूसाय रुट्॥ नूवारु नसाय नचन्दनाक्षरयूष्यं नमः॥ (धनू या

मूढादर्शयत् ॥ ॥ रत्नमुद्रि ॥ ॐ ईं निवृत्तिकलायाः यद्गुरुत् ॥ ॐ ईं यतिशक्तः
लायाः यद्गुरुत् ॥ ॐ ईं विद्याकलायाः यद्गुरुत् ॥ ॐ ईं नृकलायाः यन्नमः ॥
ॐ ईं नृत्तगीतकलायाः यद्गुरुत् ॥ ॐ ईं सः अमृतामरुत्तवायन्नमः ॥ ॥
आत्मयुजा ॥ आत्मनामस्तु ॥ आत्मनिनस्युष्यन्नमः ॥ आत्मास्त्रायन्नमः ॥ आत्मसू
र्यन्नमः ॥ ॥ आसन ॥ ज आक्षत्रकन्नमः ॥ ज अनकासनायन्नमः ॥ ज कन्दस्त्रायन्न
मः ॥ ज नात्रास्त्रायन्नमः ॥ ज यशस्त्रायन्नमः ॥ ज कर्षात्रास्त्रायन्नमः ॥ ज कर्षिकास्त्रायन्नमः ॥
ज यद्वास्त्रायन्नमः ॥ ॥ ध्यान ॥ विनयसद्वर्णा नं जटाखण्डमलिनं । कपालमालिनं ॥ ॥

नं यागसमकसंस्तिरं॥ वाद्यचमोवर्चवृद्धं नागद्यानमिरुषिगं॥ विष्णुर्लंवाद्यभूगच
विनाईदका(एकन॥ कयालं कलिकां सवायागमूडाकलद्वयं॥ कूर्यात्मसूज दर्वम
त्युत्रागविनासनी॥ ॐतिश्चानयूर्यनमः॥ ॥ यूजन॥ ॐ ईं स॥ सूर्यजयायसंयूर्क
लसमूर्यनमः॥ ३॥ वलि॥ ॥ ॐ वक्रा(वनमः॥ ॐ विष्णुवनमः॥ ॐ वृद्धायनम
॥ ॐ सदागिवायनमः॥ ॐ ॐीष्टवायनमः॥ ॐ गङ्गादिसेकसुमूदखानमः॥ ॐ
यक्षायनमः॥ ॐ माग्नादिमासूर्यनमः॥ ॐ सगरवनमः॥ ॐ सम्वत्सवायनमः॥ ॐ
क्षानादिकसमूदखानमः॥ ॐ नन्दादितिथिस्थानमः॥ ॐ नू सून्यादिनक्षत्रस्थानमः॥

ॐ विष्णुं राधिका (ग) र्यानमः॥ ॐ मूर्ध्नि र्यानमः॥ ॐ आदित्यादि नवग्रह र्यानमः॥
ॐ मेषादि द्वादश राशिर्यानमः॥ ॐ वाल्मीकिदि मय सप्त र्यानमः॥ ॐ अश्वि सुमार्ग
अश्वि चित्रा विर्यानमः॥ ॐ अदि द्वादश कया र्यानमः॥ अनन्तादि अष्टकूलनाम
र्यानमः॥ ॥ चूडचक्षुः॥ श्री चूडचक्षुः देवी यादुकां॥ श्री चक्षुः देवी यादुकां॥ श्री चक्षुः ५
या देवी यादुकां॥ श्री चक्षुः नायिका देवी यादुकां॥ श्री चक्षुः देवी यादुकां॥ श्री चक्षुः वरा देवी
यादुकां॥ श्री चक्षुः त्रया देवी यादुकां॥ श्री अग्नि चक्षुः का देवी यादुकां॥ ॥ नैऋत्यं संपूर्णक
लसमूर्ध्नि र्यानमः॥ वलि॥ ॥ शिवा अश्लि॥ नैऋत्यं कूलयुद्धम॥ ॥ हासनसं

मारुनसकलगतमनुदवताकलगतवतावाधिययवक्त्रविष्णुब्रह्मात्मविद्याजिव
गत्वायद्मोमूर्त्तिपीसंयुक्तकलसमूर्त्तमनमः॥ ॥ अ० ॥ ॐ ईं स० मुख्यजयायः
ददया ॐ ईं स० मुख्यजयाय निवभस्याह॥ ॐ ईं स० मुख्यजया
यतिखा ॐ ईं स० मुख्यजयाय कवचाय दू॥ ॐ ईं स० मुख्यजयाय
अस्माय रु॥ वलि॥ ॥ क्रसकन॥ विमनमः॥ सिंधुमूढ॥ लञ्जेनमः॥ आवाहनसू
यनचन्दनादगतयुष्मन्मः॥ ॥ धनूमुदादगमयत्॥ ॥ ॐ न्यादिकलयुजा॥ लूं ॐ न्यायन
मः॥ तूं ॐ न्यायनमः॥ मूं यमायनमः॥ दूं न्यायनमः॥ वूं वनूयनमः॥ यूं वा

यवनमः॥सूँकूवनायनमः॥दूँशीलनायनमः॥मूँमूयकन्दायनमः॥तूँडू
कन्दायनमः॥॥जिवहाकि॥तूँरूँसः॥मूँयजयायहाकि॥सहिनायनमः॥॥ग
हा॥मूँगहायनमः॥॥युनू॥तूँयुनूमूँयनमः॥॥दूँ॥दूँदूँयालायन
मः॥॥यागिनी॥याँयागिनीयानमः॥॥शीलश्री॥शीमूँयनमः॥दूँलश्रीमूँ
यनमः॥॥मूँ॥तूँदूँमूँकलशयनमः॥॥वासु॥तूँदूँदूँदूँवाहाधिकय
वक्रलनमः॥॥मूँकिकयष्टिक॥तूँदूँमूँकिकलशयनमः॥तूँदूँयष्टिककलशयन
मः॥॥यदू॥यदूहा॥तूँयदूयनमः॥तूँयदूलनमः॥॥शीलश्री॥तूँयनमः॥तूँल

ॐ नमः॥ ॥ सायनाग॥ ॐ वनूषाय नमः॥ ॥ मृत्युञ्जय॥ ॐ शंभु॥ मृत्युञ्जयाय नमः॥
॥ आदित्य॥ ॐ आदित्याय नमः॥ ॥ नागद्य॥ ॐ वनूषाय नमः॥ ॥ धनुर्ल॥ नवा
क्षत्रि॥ ॥ कर्वा॥ ॐ सूर्याय नमः॥ ॐ यमुयतिरुद्वानकाय नमः॥ ॐ गनूठनाय नमः॥
ॐ मानव्यवदवताय नमः॥ ॐ स्रष्टवताय नमः॥ ३ ॥ ॐ वनूषाय नमः॥
धनदिगकलक्षयूजा॥ ॥ वदीयूजा॥ ॐ वृक्ष॥ ॐ वनूषाय नमः॥ ॥ दक्षिण॥ ॐ सिद्धि॥ ववा
य नमः॥ ॥ यन्त्रि॥ ॐ शिवाय नमः॥ ॥ उरु॥ ॐ मायादेवे नमः॥ ॥ कीलका
यूजा॥ ॐ ॐ न्दाय नमः॥ ॐ नूग्नय नमः॥ ॐ यमाय नमः॥ ॐ नेम्याय नमः॥ ॐ व

बृहस्पति नमः॥ यूं वायु वनमः॥ सूं कूट वायु नमः॥ दूं शीत नाय नमः॥ ॥ चतुर्धा
नयूजा॥ यूर्ध्व॥ लूं॥ निकला दाला यनमः॥ ॥ दक्षिण॥ लूं॥ विशा कला दाला यनम
॥ ॥ यन्त्रिम॥ लूं॥ निवृत्ति कला दाला यनमः॥ ॥ उत्तर॥ लूं॥ युनिष्ठा कला दाला य
नमः॥ ॥ नन्दादि नयूजा॥ आ॥ ग्रय॥ लूं॥ नन्दा येनमः॥ ॥ नेमत्या॥ लूं॥ रुद्रा येनमः॥ ॥
॥ ॥ वायुवा॥ लूं॥ जया येनमः॥ ॥ शीत॥ लूं॥ सका येनमः॥ ॥ म॥ क्ष॥ लूं॥ युष्म येन
मः॥ ॥ यथा दत्त स्य कम मल्लयूजा॥ ॥ वलियूजा॥ का॥ च॥ शिदवा॥ लूं॥ ज न वा सन
यया द्दकी॥ लूं॥ ज मयूना सना यया द्दकी॥ लूं॥ ज मू॥ सना यया द्दकी॥ लूं॥ ज॥ थू॥ पस्त नदी

यदमुकिद्वीमरुध्वंक्षक्षयालाययादूकां॥ वलि॥ नंजगींकां कूलयूगवगुवर्न
थययादूकां॥ वलि॥ नंजगं गंगीं ग४ गंभी कूलगा॥ ध्वत्राययादूकां॥ वलि॥ आवा
रुनादि॥ गङ्गनी दलु गजमूडी दक्षिण॥ ॥ दावद्वदूसां नं मसिना इरुत्रवायय
दूकां॥ नं नू नू रत्रवाययादूकां॥ नं नलु रत्रवाययादूकां॥ नं काध रत्रवाययादूकां
॥ नं डसरु रत्रवाययादूकां॥ नं कयाली ४ रत्रवाययादूकां॥ नं शीषरु रत्रवायया
दूकां॥ नं संहार रत्रवाययादूकां॥ ग नू गायन म४ नं ज नं टं ० रं टं हं व्वां यी विष्णुवीः
विष्णुयादूकां॥ ३॥ वलि॥ म४ इ॥ ॥ त्वाकमरुवलि॥ नं जकांकां दूक्षं ४ ३ दूक्षयावा

[illegible]

ययादूकी॥ नेंज मूष्म सनाययादूकी॥ नेंज (धूम्र) यस्म नदीयदमु किदवी मरुध्वी द
क्षयालाययादूकी॥ वलि॥ नेंज श्री कौकल श्री यगवदूक नाथययादूकी॥ वलि॥
नेंज मंगी गंग ४ (सं) श्री कल ग (हृद्व) नाययादूकी॥ वलि॥ आवाहनादि॥ तर्जनी दलु ग
जमूदादधीयतु॥ ॥ चिया झलि॥ नेंज द्रुम द्रुम श्री यादूकी॥ वलि॥ (दुं) दौ दू दौ दू दौ दौ
नमः॥ ३॥ वलि॥ यगु दू॥ खुं ददया (धूम्र) (धूम्र) यथादि॥ आवाहनादि॥ वाकमरु व
लि॥ ॥ गला उलखा॥ किदवी॥ नें नना (धूम्र) सनाययादूकी॥ नेंज मयूना सनाययादू
की॥ नेंज मूष्म सनाययादूकी॥ नेंज (धूम्र) यस्म नदीयदमु किदवी मरुध्वी दक्षयालाय

यादूकां॥ नंजधींकां कूलयूगवदूकनाथययादूकां॥ नंजगं गंगुंग४॥ ग्लेंगीकूलग
(हव्वनाययादूकां॥ वलि॥ आवाहनादि॥ नऊनीदलुगजमूडांदनयन॥ गुंकांकां
हंकांकांनम४॥ वलि॥ आवाहनादियानिमूडांनयन॥ ॥ त्वाकमहावलि॥ नंज
कांकांकांकां४॥ दंगयानायवलिगृक२॥ स्वाहा॥ नंजधींकां कूलयूगवदूकनाथयवलि त
गृक२॥ स्वाहा॥ नंजगं गंगुंग४॥ ग्लेंगीकूलग॥ हव्वनायवलिगृक२॥ स्वाहा॥ जदूकमह
कनवीनममनाधियनयवलिगृक२॥ स्वाहा॥ जदूकगीसिद्धिचाम॥ हव्वनीवलिगृक
२॥ स्वाहा॥ जआकासचाविमिस्वोन्मथावलिगृक२ ॥ स्वाहा॥ जसर्वथासर्वस्वरथावि

सा चर्या वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ज स चर्या ० ० द व ग र्या वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ आ वा रु न
शायन च लु ना द त य र्घ्यं न म ॥ आ नि मू डा द र्घ्यं य त ॥ ॥ दू मा इ ॥ रि दे व ॥ निं ज न रा
स ना य या दू कां ॥ निं ज म यू ना स ना य या दू कां ॥ ज मू षे स ना य या दू कां ॥ निं ज (धूम्रं) य स्त
व द य द मु कि द वी म रु धी द र्घ्यं य ला य या दू कां ॥ निं ज र्घी कौ कू ल य र्घ्यं व दू क ॥ ना था
य या दू कां ॥ व लि ॥ गं गी गूं ग ४ (सं) र्घी कू ल ग (ए) ष्व ना य या दू कां ॥ व लि ॥ आ वा रु ना दि ॥
त र्जु नी द लु ग र्ज मू डा द र्घ्यं य त ॥ ॥ रि या ३ र्घ्यं लि ॥ निं ज द्रु ॥ आ न न्द ष कि रे व वा न न्द वीः
ना धि य त य द्रु ॥ आ न न्द ष कि रे व वा न न्द र्घी म रु वि ॥ या ना ष्व नी द्रु ॥ र्घी या दू कां ॥

वलि॥ ॥ अ० ३॥ आवाहनादियानिमूर्धादर्थयत्॥ ॥ त्वाकमहावलि॥ नं० ३॥
दो० दो० ४० दो० यालायवलि० गृ० २० स्वा० ॥ नं० ३॥ गो० को० न० य० व० दू० क० ना० थ० य० वलि० गृ०
२० स्वा० ॥ नं० ३॥ मं० गी० गूं० ग० ४० (सौ०) पी० कूल० ग० ॥ ६० व० ना० य० वलि० गृ० २० स्वा० ॥ दू० म० क० क० न०
वी० न० म० ४॥ ना० धि० य० त० य० वलि० गृ० २० स्वा० ॥ श्रु० पी० सि० द्वि० च० मू० छ० य० वलि० गृ० २० स्वा० ॥ १०
आ० का० ४॥ वा० नि० स० च० ॥ ग० त्या० वलि० गृ० २० स्वा० ॥ ५० ॥ स० च० र० या० ह० न० र० या० स० च० र० या० धि० म० च० र० या० स०
च० र० या० ॥ दू० द० व० ता० त्या० वलि० गृ० २० स्वा० ॥ आ० वा० ह० न० षा० य० न० च० न० द० ना० दू० ग० य० र्घं० न० म० ४॥ आ०
नि० मूर्धा० द० र्ध० यत्॥ ॥ (ग०) द० जा० स० ॥ मू० ४॥ स० ना० य० पा० दू० कां० ॥ वलि० ॥ मं० गी० गूं० ग० ४० (सौ०) पी० कूल० ग०

(ह)व्वनाययादका॥ वलि॥ यूजा॥ ॐ नन्दारे नमः॥ ॐ सुन्दारे नमः॥ ॐ सुरीमाये
नमः॥ ॐ सुनीनाये नमः॥ ॐ सुमनादनाये नमः॥ थवश्नं वलि॥ ॥ अथ कोमालिः
यूजा॥ मयूनासनाय नमः॥ चं चूं जूं जूं ॐ कूं चं कोमात्राचलुरे नवाय नमः॥ वलि॥
॥ ॥ सलगनयूजा॥ शिर्षांजलि॥ ३॥ ॐ कूं ॐ कूं ॐ कूं ॐ कूं नमः॥ ॥ धूय॥ दिव्यग
न्धसमायुक्तं सर्वदेवपियात्रं ॥ आर्घ्यं सर्वदेवानां धूयार्थयति गृह्णतां ॥ धूयारुभय
रुगवान् विष्वक्पुत्रीमहेश्वरी ॥ धूय नान्ययदेवलिपुत्रीणां यत्र नमः श्रुता ॥ ॥ दीप॥ सुय
काक्षमहार्जं सर्वतस्मिन्नाय दे॥ वाक्कायकन्यातिदीपार्थयति गृह्णतां ॥ अतिर्दम्भ

[illegible]

[illegible]

नञ्चनीष्टदवगायनम॥ श्रीसुष्टदवगायनम॥ ४ ॥ श्रीवनूतनागजायनम॥
॥ ॥ सुष्टदवनममुखं गुण्डवनमानम॥ स्नानदवमुसर्वेषां योजागृह्णन्मास्तु
त॥ ॥ अथ क्लृप्तमीयंगत्वा ॥ हाताडरुं नारिमुखकर्मन॥ यद्गुरुं ह्यसनसचा
न॥ ॥ शितलेन॥ आचमनं॥ खुँकीं तात्मगत्याय स्वाहा॥ खुँकीं विद्यातत्याय स्वाहा॥ खुँ
कुँ जिवगत्याय स्वाहा॥ ॥ सूर्याय॥ वाक्॥ मानव(गण) यजमानस्य पीपी जयस्त्व
गीत्यमन्त्रदववर्मोऽधीधीधीस्वष्टदवगायीति कामनया यासाहनिमित्तवायीषा
सादसुवर्लुकैलक्षजावलारुनसिद्धान्निस्यूनादूतियद्गुरुं चिकम्पिनिकुंठनूक

मार्कटमहारे नवाय मूर्धनमः॥ वर्धनं वीजमूद्वय तस्याय त्रिलिखं नमः॥ आदिम
ध्यावष्टान्तु मूर्धनय वीरुषितं वर्धनं दधिर्गुत्वा सावित्र्या चैव मूद्वय तः॥ नयकूटव
नः॥ यष्टा महामार्कटु नवः॥ ॥ गुननमस्कावः॥ नैका यीशुः॥ अखलु महुला का
नं वाक्यं न च नाच नः॥ तत्पदं दर्शितं न तस्मै यीशु न वनमः॥ न्यासः॥ खूं सकलः॥ फु
यमथ निमृशु यरुट्॥ ५॥ कलः॥ धनः॥ ॥ खूं यनमर्दसिनी मृदुष्टाय नमः॥ खूं निर्वी
हमाग्ने देवी तर्जनी स्वाहा॥ खूं विषमाय द्रव्य समनिमश्च माये वो मट्॥ खूं सकलद्वि
ताविष्टुः॥ स दलनिमृनामिका यद्वं॥ खूं सर्वो यदा भूषितं नलिक निष्ठिका यव मट्॥

ॐ स्वकलः प्रथमथनिगुमाय रुट् ॥ ॐ तिक न न्यास ॥ ॥ ॐ नमः सर्वसिद्धि यागिनी
या उद्धवकुनाथयादुकां ॥ ॐ नमः सर्वसिद्धि माहत्या यूद्धवकुनाथयादुकां ॥ ॐ नमः
निखादिगानन्दनन्दिगाये देहि वकुनाथयादुकां ॥ ॐ स्वकलकूलचकुनाथिकाय
उद्धवकुनाथयादुकां ॥ ॐ रगतये चकुनाथयादुकां ॥ ॐ नमः सर्वसिद्धि यागिनी या उद्धवकुनाथयादुकां ॥ ॐ तिक न न्यास ॥ ॥ ॐ य नमः सिनि
सर्वरुगादयानमः ॥ ॐ निर्वह माग्नेय विष्णु नमः स्वाहा ॥ ॐ विष्णु माग्नेय वयसम
निगुनादिवाधनिखाये वो वट् ॥ ॐ स्वकलद्विगाविष्णु कृष्णदलनिखनकु कवचायदु ॥

[illegible]

स४स४स४यत्रादवीश्वरं वमवमस्वाहा॥ उवासाधनी॥ ॐ द्यौं द्यौं द्यौं द्यौं द्यौं नमः॥
३॥ ॐ हृदयाय नमः॥ ॐ जिवमस्वाहा॥ ॐ शिवाय वोषट्॥ ॐ कवचाय द्यौं॥ ॐ नरगः
साय वोषट्॥ ॐ अस्त्राय रुट्॥ आवाहनादि॥ आनिमूढादगैयग॥ रुगमुदि॥ नंद्यौं यौं द्यौं
क्षौं क्षौं द्यौं यौं द्यौं न॥ ॥ आत्मयूजा॥ ॐ आत्मन च च न नमः॥ ॐ अक्षरं नमः॥ ॐ सिं द्यौं
न नमः॥ ॐ सर्वजनभारुनी नमः॥ यथा॥ ॐ द्यौं द्यौं द्यौं द्यौं द्यौं नमः॥ आत्मन यथा नमः
॥ विन्दुय॥ ३॥ ॐ सकलक्षयमथनि अस्त्राय रुट्॥ ॐ आत्मयूजा॥ ॥ ह्यानखप्रासा
धनी॥ ॐ सकलक्षयमथनि दवीश्वराय रुट्॥ ॥ गद्ययतिवलि॥ गंगद्ययतयवलि

गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ क्षत्रवलि ॥ क्षांक्षत्रयालायवलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ दग्धवलि ॥ दूंदूग्ध
यवलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ दिगवलि ॥ दिगश्चवलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ आवाहनादि ॥ आनि
मूर्धादक्षयिणी ॥ ॥ ध्रुव ॥ दिवागन्धसमायुक्तं सर्वदेवायि आनूहं । आद्याहं सर्वदेवा
नां ध्रुवाय यतिगृह्ण ॥ ध्रुवाहं प्रचरुगवान् विश्वव्यामहं ध्रुवनी । ध्रुवनाभनदवः
क्षिप्रयागां यनमध्वनी ॥ ॥ दीप ॥ सूर्यकाक्षमहामहं सर्वगतिमिवायहं । सवाक्
यननं आनिदायाय यतिगृह्ण ॥ आनिदं अमि ॥ ॥ अन्नं महानसं दिवां अक्षयस
र्वसम्वितं । मयानिवादिहं रुक्मा गृह्णत यनमध्वनि ॥ नेवद्यं गृह्ण ॥ दवी रुक्मि मन्त्रवर्ग

कूत्र॥ मयमह्यरुनंदविषयचयनाङ्गि॥ रुलपूर्यांताम्बूलधूपदीप००दं
नेवाद्यन्नमः॥ ॥ आय॥ गं स्वाहा॥ १०॥ द्रां स्वाहा॥ १०॥ दूर्द्धाये स्वाहा॥ १०॥ दिग्ग
स्वाहा॥ १०॥ ॥ स्तुति॥ यूर्वदक्षिणायत्निभार्कनजवायूर्वाधिवासानिकाद्गुरु॥ स व
द्रुष्टगदूग्नेरुनर्हं रुन्म्वनाथाय च॥ ॥ नमः॥ नमस्तुमादिदेवविशुद्धसाकादिदायाय १३
रुनित्यानन्दमयीयमादितसदावत्यादियुजाविधि॥ ॥ मृगगन्धादि॥ ॥ मृक्छेदः
विमर्जनं॥ सुं सकलशक्रयमथनिदवी मृक्छेदः॥ स्नानश्चैव॥ ॥ मृक्छेदः
नाजाविद्वयही॥ सुं सकलशक्रयमथनिदवी मृक्छेदः॥ ॥ गयगीमनुष्यकुलुनि

नीक्षणी॥ ॐ ह्रूं सिद्धिलब्धा विद्महे नवव्यधिकधीमहि ननालब्धा ॥ ४ ॥ यत्रादया
त॥ ॥ अथ अग्नि क्लृप्तकादहा संस्कारे ॥ ॐ ह्रूं सकलक्षयमथ निदवाग्ना
यहृत् ॥ ॥ १ ॥ ॐ ह्रूं सकलद्विगानिष्टक्षदलनिकवचाययादुका ॥ अ
वगुहने ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं नंदो गी ड नमूलन ॥ गादन ॥ ॐ ह्रूं सकलद्विगानिष्टक्षदलन
कवचाययादुका ॥ ॥ ॐ ह्रूं युनदी ॥ ४ ॥ ॐ ह्रूं गी ह्रा समा कवदी ॥ ५ ॥ ॐ ह्रूं न क्लृप्त
मनयाकावदगय ॥ ॥ ॐ ह्रूं सवन ॥ ६ ॥ ॥ ॐ ह्रूं वृद्धन ॥ ७ ॥ ॐ ह्रूं ह्रीं स माऊन ॥ ८ ॥ ॐ
ह्रूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं लवन ॥ ९ ॥ ॐ ह्रूं यत्र मरु सि नि ह्रूं याददी ॥ १० ॥ ॐ ह्रूं निर्वोद माग्नेदवी

श्री (सावर्ही ॥ ११ ॥ ॐ निनु काठहा कू घु सं स्वा न ॥ कर्तव्य ॥ निंज खुं सकल दृष्टि ना
 विष्ट ज्ञे हा दल नि क व चा य द्वा ॥ नि सु र न कू घु यं च सु र हा व द्वा न या य ॥ ॥ मू
 मू क कू घु य न ग दा स न न म ॥ ॥ मू य द्वा ॥ मू म न न निंज खुं सकल हा कू
 य म थ नि मू म य रु ट ॥ ॥ वा वा य ॥ खुं य न म द्वा नि कू (न न र य र य सा त्वि का १५
 वा ठ सी गा म सी ॥ निंज खुं सि द्धि ल श्री वि द्वा ह न व ल्य धि क धी म रु ग न्ना ल श्री य
 वा द या न ॥ म य र मू य द्वा ॥ ॥ यं च ग वा निंज खुं ११ स क द्वा द्वा व द्वा व जी क
 न हा ॥ ॐ मे रु च घु र ज स क र्ष णि का लि म न्ना न रु ४ ॥ व र्ण ११ ॥ ॥ कू न ग म य

विनक्तु ४ यथा ॥ ॥ जे १ खूं सिद्धिल आ विद्मरु न वल्य धि क धी म हि ग न्ना ल श्री य
वा द या त ॥ ५ ॥ ॥ जे १ य न म रू सि नि न क धा न्य द य न ॥ ॥ अ धा न न वा हि द य न
जे १ अ धो न द्वां थ धा न द्वां धा न धा न न न दू रूं स र्व ग ४ स र्व स र्वे जूं स ४ जूं नू द
नू य दूं या दू का ॥ ॥ न वा द्ध न ह द्यु ता स न ॥ ॥ जूं दूं रूं रूं द्वां कूं न म ४ ॥ ग न व न
वा द्ध न ह सू व हू न ज ग य द्ध न व न हू न ॥ ॥ जे १ स क ल ४ कृ य म थ नि मू क्रा य
रू ट ॥ यू र्थ ॥ ॥ क व च न स मी धं ॥ जे १ खूं स क ल दू वि ता वि दू रूं ४ द ल नि क व
वा य दू ॥ ॥ मू मु न कू ल ग ॥ जे १ खूं स क ल ४ कृ य म थ नि मू क्रा य रू ट ॥ ॥ क व च न

[illegible]

॥ कौं वागीश्वर्ये नमः ॥ कौं वागीश्वराय नमः ॥ आवाहनादि (धनं आनिमूढौ) ॥ यज
मानः काष्ठमादाय ह्यतादाय यतः ॥ ह्यता काष्ठं मूर्ध्नि धातुं कनयाञ्च ॥ नृजं ह्युं सक
लं यममथ निमृशाय हट् ॥ ॥ गोयत्याष्टं यतः ॥ नृजं ह्युं सिद्धिं लब्ध्वा विमरु न वर्य
धिकधीमहि तन्नालं यत्रादयात् ॥ ॥ नृजं कौं कौं ह्युं कुं मरुतं ह्युं नृजं संकषति
कालिमनु नरु ॥ काष्ठं निधाय ॥ सिका ४ नमः २ सिका ३ ह्य ता ३ ताना ॥ ॥ नृजं ह्युं तत्
नरुत्काष्ठं सयूय ॥ म (ध) ॥ नृजं ह्युं नमः ४ सर्वसिद्धिं यागिनाय ४ यीयादूको ॥ ॥ नृजं ह्युं म (ध) यू
॥ नृजं सर्वसिद्धिं माहृत्या यादूको ॥ काष्ठं दद्विहवा (ह) ॥ नृजं नमानित्यादि तानन्द न

न्दितायेयीयादूकां॥सवामका॥(६)॥नेंजसकलकूलचकनायिकायेयीयादूकां॥कृष्ट
 स्या॥(७)॥नेंजयचादूनहक॥(८)॥ननूवयातन॥चतसिधनजजमकाखानकाय॥थ्व
 कामसियुजा॥॥गुग्निमादाय॥मूलकृष्टुवायमनु॥नेंजद्रा॥खुं॥गुग्निमानाय॥
 नेंजद्रं॥स४॥आतिमलुलाययादूकां॥गन्धादिरिसंयुक्त॥॥न॥नें॥वादनहगुग्निगु १८
 हात्वा॥गुं॥द्रं॥हं॥रुं॥द्रं॥कां॥नम४॥॥नेंजद्रा॥मू॥क॥(६)॥न्य॥नें॥नयान्या॥रुध॥वर्क
 यत्रियाम्य॥॥वाक्क॥मानव॥गुग्निजमा॥नें॥नें॥नस्य॥ही॥ही॥जय॥रुय॥नी॥न्द॥मन्त्र॥द
 ववर्म॥ह॥ही॥ही॥ही॥स्व॥द॥व॥गा॥या॥ति॥का॥म॥नें॥नें॥नया॥या॥या॥ह॥नि॥मि॥र॥वा॥यी॥या॥सा॥द

सुवर्णकलशध्वजावलाहनसिद्धान्तश्रुयतादूतियरुचुर्थिकर्मनिश्रुतिशाय
नसमूहकसुखाह॥विजयवैश्वंश्रुनिष्ठायेनसमूहकसु॥श्रुतिशायन॥ॐ
नांनान्वैवद्विचैतन्यायस्वाह॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसमूहकसुखाह॥
नन्द॥कि०सुरीमासुष्टंन्यायचक्र॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसमूहकसुखाह॥
चत्वारयचकान्ययूनवपिचक्र॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसमूहकसुखाह॥
गणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रुतिशायन॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

मं नं सच्चिदा श्रीमत्यश्रमस्वाम्यजादहशुजायतस्मिन्नायाशुव ॥ ॥ ददयादि स
ॐ (गनयूजा ॥ खूं दयाय नमः ॥ खूं जिनमस्वाहा ॥ खूं जिस्वाय वोषट् ॥ खूं कवचाः
यदूं ॥ खूं नग्न यायवषट् ॥ खूं मूक्याय रुट् ॥ मग्निपूजनं ॥ नं ज्ञां नीं (नंदूं अं
दूं रुट् स्वाहा ॥ ॥ स्वस्तिवाक्यं (०१॥ स्वस्ति केश्यासदाविघ्न स्वस्ति मारुतु भवच १२
। यागिनी स्वर्गि सच्चिद्व्य स्वस्ति यी भव्यं द्रुक्का ॥ पूर्वन्ददि एत ४ यश्वात करुं वा द्वधन
स्तथा ॥ स्वस्ति सद्गाममस्तु गुकाय कटदवतां ॥ रुनवा रुनवी सा ॥ स्वस्ति ४ स्व ४ स्व ४ स
४ चक्रकां ॥ स्वमनु ४ स्वमदा ४ स्वयू ४ यत्रिकात्रिकां ॥ ग्रहनक्षत्राणि स्मृ ४ स्वस्ति सर्व

स्वसफय ॥ स्वस्ति वीनाय मन्त्रा ॥ आगि न्या गहन नायका ॥ स्वस्ति देवाधिदेव त्वं मनु नार्ज
नि न नर्ज ॥ रुवाय नालि रुका ॥ स्वस्ति कूलान्निदेवता ॥ स्वस्ति नाजाय जनानु यजमान
स्वस्ति सर्वदा ॥ ॥ यं चालि विय ॥ कूलु या खवस ॥ कूलु या द्दवन वलि स ॥ ॥ मयूना सः
नायया दूकी ॥ नं गुरुं रीं कौ कूलयू वदू कनाथया दूकी ॥ धनं वलि ॥ ॥ नना सनायया
दूकी ॥ नं गुरुं रीं ॥ धूमं यस्म नदीय दमू को दवी मरुध्व कदगुया लायया दूकी ॥ वलि ॥
हावा सनायया दूकी ॥ नं गुरुं रीं ॥ आगिनी याया दूकी ॥ वलि ॥ ॥ नं गुरुं यकचिद्या गी
निनी वी ॥ जा दूजा सूरुजा यागजा गुरुजा कूलजा सन्दा रुजा यकचिद्या गिनी नां खचनी

हवनी (गवनी नवा दनी ददनी शदनी वरु ४ य ३ य ४ सफा कर कन वा द नार्थ गिऊ
गमीनीनीय (था य य न्तानी वलि गृह २ म म सिद्धि कूर्च नु दं ३ रुट्खा ला वलि ॥ ॥
पुता सनाय यादू को नें १ खुं ३ ५ पी सिद्धि वामू छी ५ व नी यादू को वलि ॥ ॥ मू ५ सनायः
यादू को नें १ खुं ३ गी गी गी ४ ५ कूल ग (६ ५ वा य यादू को धन न वलि ॥ ॥ आ वा रु न २०
दि ॥ दधु गऊ नी यानि विन्दू गज मू द द ध य न ॥ ॥ जाय ॥ यी दौ खा ला ॥ १० ॥ (५) यी दौ खा ला ॥ १० ॥
॥ यी दौ खा ला ॥ १० ॥ ॥ यी दौ खा ला ॥ १० ॥ ॥ यी दौ खा ला ॥ १० ॥ ॥ दं ज यं गृहा ह खा ला ॥ ॥ स्का ॥ ॥ गी य
पूर्ण कू मा च ग ५ ग ह न न रु री दं य यं या गिनी च त्रामू छी च धु चू यादू वि त रु य रु न वि

ॐ जै जै कौं कर या नाय यादू कीं ४॥ ३

द्वनार्थग (हृषी) यथायाधुयदीयाविषमत्रुमरिष्यजिगारुषिगान्ना चकैसंयूयकं वि
द्यविद्यरुहुरुकिमूयदागा॥ गुरुगन्धदि॥ ॥ निदव॥ जननासनाययादूकां॥ जमयू
नासनाययादूकां॥ जमू॥ सनाययादूकां॥ वलि॥ ॥ निंगयीं कौं कलयूगवदूकनाथया
दूकां॥ वलि॥ ॥ निंजगंगीगुंग४॥ ग्सेयीकूलग (हृषी) नाययादूकां॥ धनंनैवलि॥ आवारुना
दि॥ गङ्गनीदुगुगजमूदा॥ ॥ ददयनआचमन॥ खुं यत्रमरुसिनिस्वर्कूनाददया
यनम॥ मनसंयूय॥ कवचन॥ खुं सकलदूविष्टाविष्टकृष्टदलनिकवचायदू॥ ॐ
धननयच्छय॥ ॥ तुं कौंचिगुपिङ्गवरुन२यच२दरु२स्वर्कूनाययस्याला॥ तुं अग्निष

दलितं वन्दे जातवदं दूताहनी। सर्वल्लवर्णसमलं ससिद्धं सर्वतामख॥ ॥ अमुखाय
दक्षिणं निजं सुं सकलं कुर्यामथ निजं सुमाय रुट्॥ ॥ अदयादनी॥ वदयूजा॥ आसनं॥ नि
यादुकां॥ दौयादुकां॥ श्रीयादुकां॥ कुंयादुकां॥ कृणुयन्ति नित्यं॥ ॥ यूचं॥ वदन्ती नम
॥ वदन्ती मूर्तये नमः॥ सुं य नमः॥ सिनि सर्वज्ञा का ददयाय नमः॥ जह्नुं डाठियानया २१
० श्रीयादुकां॥ वलि॥ ॥ दक्षिण॥ सिद्धं च वायनमः॥ लुं सिद्धिलक्ष्मी मूर्तये नमः॥ सुं य
नमः॥ सिनि सर्वज्ञा का ददयाय नमः॥ जह्नुं जालंधनया ० श्रीयादुकां॥ ३॥ वलि॥ ॥ य
थिम॥ लुं सुं दौ श्रीनिवायनमः॥ लुं निवादेवी मूर्तये नमः॥ सुं य नमः॥ सिनि सर्वज्ञा का

[illegible]

न कं य ए व न न कं त स्म श दू या त द द य न म्नि स म्खी क न हं ॥ खूं य न म र्द सि नि
स च्च ह्म का द द या य न म ॥ निं ज वे क्क (हं ॥ द मा स न या दू को ॥ व क्का ॥ निं ज य ही ता
य ॥ द मा स न न म ॥ य नि त ॥ निं ज आ ता स ना य या दू को ॥ ॥ ति च ना स न ॥ ॥ य
ही न सं स्का ने ॥ अ म्भु न अ र्ध या श द के न सि च य त् ॥ निं ज खूं स क ल ग फ य म थ नि अ म्भु २२
य रु ट् ॥ ॥ क व च न य त यो ही ॥ खूं स क ल द वि ता वि रु क्त ग द ल नि क व चा य द्दं ॥ ॥
अ म्भु न क्क (हं न स म्भु नि ॥ निं ज खूं स क ल ग फ य म थ नि अ म्भु य रु ट् ॥ ॥ निं ज कां अ म्भु न
गं ग यो या दू को ॥ वा ग क ल ख न द्या य न थ न ॥ व क्का यू ज न ॥ निं ज कां व क्क (हं न म ॥ निं ज

कों चतु नान नाय यादू को॥ नें ज सुष्टि क लो य यादू को॥ य ही त यूजा॥ नें ज को य ही त या
दू को॥ नें ज को विष्णु व न म ४॥ नें ज को य न मा त्स न यादू को॥ ॥ ठ द्वि। ए व क्का ह्म य न॥
स्म ॥ यी न या रं चतु र्वा द्वा व क्का ह्म चतु नान न। रु स या नं १२ वि ज्ञा नं द ह्म द्वा क म लु
नू॥ ॥ ठ रु न य ही त ह्म य न॥ स्म ॥ नून नं य लु नी का द्वा रु ना द ह्म १३ त य रं वि शू द्वा
म य ती का ह्म कू म्मा नू टं य यू ज य न॥ ॥ यू च्च व न् यू ज न॥ व क्का यू जा॥ नें ज को व क्का। ए या
दू को॥ नें ज को चतु नान नाय यादू को॥ नें ज सुष्टि क लो य यादू को॥ ॥ य ही त यू ज न॥ नें ज
को य ही त यादू को॥ नें ज विष्णु व यादू को॥ नें ज को य न मा त्स न यादू को॥ ॥ कू। ए न य वि स्त

वर्धं॥ खुं यत्र मरुं सिनि सर्वज्ञा तादृकया यत्र म॥ ॥ वद्विषुजा॥ खुं वेधनत्रजात
वद्वेधुवावरुलाहितादृकसर्वकर्माणि साधयस्वाहा॥ ॥ ततार्थवदासाधनं॥ दः
द्वि(एकमस्तु नृपुष्यराजनं॥ शिष्यविगच्छदनादिषादृहीयाग आश्रमाली च नृस्माली
शकुपवाप्तं मार्जनं॥ उदययमन समिधद्वयी उदुखन मूढन सूर्य आश्रमिन्त गधुल २३
जायमा लायाग दद्विषुग्मयूग्मयूग्मान्यात्वेन॥ खुं यत्र मरुं सिनि सर्वज्ञा तादृकया य
त्र म॥ ॥ नृमुनयविगच्छदने॥ खुं सकलशक्यमथ निशुक्राय रुट्॥ ॥ दृकयनयवि
गवंधनं॥ खुं यत्र मरुं सिनि सर्वज्ञा तादृकया यत्र म॥ ॥ नृमुनयादृहीयादृक्या॥ खुं स

कलहकृपमथनिग्राहयद् ॥ ॥ ददयननयार्थं ॥ खूं यनमदं सिनि सचह्लाका
ददयायनमः ॥ ॥ कवचनयचगवा ॥ खूं सकलद्विताविष्ट्रैर्दलनिकवचा
यद् ॥ गृभुहसंमार्जन ॥ खूं सकलहकृपमथनिग्राहयद् ॥ ॥ ददयाननगृहिव
यूजा ॥ खूं यनमदं सिनि सचह्लाका ददयायनमः ॥ ॥ गिनसायविष्ट्रैर्दलन ॥ खूं
निव्वोहसाम्नेद्वीतिहलिनसखा ॥ ॥ नगृहददंगदयं ॥ खूं सचयिदाभुषितन
गिनगृयायवसद् ॥ ॥ मूलनसचद्वीग्राहानचसिचयत् ॥ खूं दों दूं रुं रुं दों दों
नमः ॥ ॥ खादेलीगृनिपुटीगयाम्नेद्वी ॥ ॥ नगृहकृकृवासाधनं ॥ चतुःस

स्कात्र॥४॥ अमुद्ययदात्र॥ खुं सकललक्ष्म्यमथनिगुम्मायरुट्॥ ॥ ददयनय
नय्येर्ष॥ खुं यनमरुं सिनि सव्वहाकाददयायनम४॥ ॥ अमुद्ययमार्जन॥ खुं सक
ललक्ष्म्यमथनिगुम्मायरुट्॥ ॥ खादधीजलनकवचनायश्च॥ खुं सकलद्विगावि
ष्टुक्लक्ष्म्यनिस्यनककवचायद्वं॥ ॥ गिरलेन॥ धन॥ खुं कां ग्रासनखायवद्व॥ २४
खाद॥ कृष्णमूलनगुवामूलसं॥ ॥ खुं कां विद्यानखायविष्णुवखाद॥ सुवामध्वसक
मध्वनं॥ ॥ खुं कृष्णिवरखायसदाजवायखाद॥ ग्रायनग्रायस॥ ॥ लामविलाः
मन॥ ॥ गीवसि सुष्ठु वद्वनं॥ ॥ धनया कृष्णग्रासनयादवजवसन॥ ॥ ग्रायस

लीसस्का नात् ॥ अमुद्ययकाल्य ॥ खुं सकलः फ्रयमथनि अमुद्ययकाल्य ॥ ॥ ददय
नयगर्थं ॥ खुं यत्रमहं सिनि सर्वे ह्यका ददयायनमः ॥ ॥ अमुद्ययमार्जनं ॥ खुं
सकलः फ्रयमथनि अमुद्ययकाल्य ॥ ॥ ददयन ददयन ददयन निधाय ॥ खुं
यत्रमहं सिनि सर्वे ह्यका ददयायनमः ॥ ॥ ददयन ॥ अग्नि सक्तुय ॥ खुं यत्रमहं सि
नि सर्वे ह्यका ददयायनमः ॥ ॥ ददयन कृष्ण दयायनमः ॥ ॥ ददयन चिन्तनं निधाय ॥ खुं यत्रमहं सि
नि सर्वे ह्यका ददयायनमः ॥ ॥ कृष्ण दयायनमः ॥ ॥ ददयन ददयन ददयन ॥ खुं यः
त्रमहं सिनि सर्वे ह्यका ददयायनमः ॥ ॥ अमुद्ययमिगलायुटनं ददयन ददयन ॥ खुं

सकलक्षयमथनिश्रुतायरुद्र॥ ॥द्वीद्वदयनयनयोर्द्वी॥खुंयनमरुसिनिम
वृक्षाकाददयायनम॥ ॥कवचनात्यद्वी॥खुंसकलद्विगाविष्टवृक्षादलनि
कवचायद्वी॥ ॥निखायाद्यनश्रुतायन॥खुंविषभायलवयममनिश्रुतादिवाधनि
खायेवोषट्॥ ॥श्रुतवृक्षायस्त्रिदयनात्यवन॥खुंसकलक्षयमथनिश्रुतायरुद्र २३
॥ ॥द्वदयनसंश्रुवन॥खुंयनमरुसिनिमवृक्षाकाददयायनम॥ ॥कवननात्मा
नमत्यद्वी॥खुंसकलद्विगाविष्टवृक्षादलनिश्रुतायनम॥ ॥यूजन॥चन्दना
दिनिंजयचयलवायनम॥ ॥धनूमुद्रा॥आश्रवद्वी॥आश्रयायनरुद्रद्वी॥आश्रयाय

रुनयनी। आश्रमसूत्रगद्य॥ सर्वसर्वमाश्रयनिष्ठिरं॥ ॥ वाद्वीधयूचैवत॥ ॥ शिवसा
 यविश्वमाश्रयनी॥ खुं निर्वोहमाग्नेदवीस्वाहा॥ शिवस॥ ४॥ नगलडदङ्गय॥ खुं सः
 वीयदांभ्राधिरननिनगयायवषट॥ ॥ मूलमकुलानि ससिंया॥ खुं कौद्रुं हों हों
 कांनम॥ ॥ कवचनकूलुममर्ष॥ खुं सकलदूविष्टाविष्टवैदलनिस्वतनु कव
 वायद्रुं॥ ॥ नक्षोद्रुनत॥ खुं शुवयतयस्वाहा॥ खुं शुवनयतयस्वाहा॥ खुं हतानीय
 तयस्वाहा॥ ॥ मध्यादकयहीननिधाय॥ सयविश्ववह्मनखड्ग॥ नग॥ यक्कवाच्चैर्न॥ ॥
 ॥ ॥ खुं सिद्धयन्महारेववगीयादका॥ यक्क॥ श्रीसिद्धिलश्रीयादः

कां॥ प्रवा॥ ॐ श्रीं शिवं किं नमः॥ ॥ श्रीं हृदयं मनः क्लृप्तं मांदाय॥ ॐ सक
लं हृदयं मथ निःशुभं यद्दृष्टं॥ यत्तु॥ यानि मूढा॥ ॥ श्रीं हृदयं किं नमः॥ ॐ श्रीं हृदयं न
मः सिनि सर्वे हृदयं किं नमः ददं याय र्गो धनं नाय स्वाहा॥ ॥ ॐ श्रीं हृदयं नमः
हा॥ ॥ ॐ श्रीं हृदयं निर्वो हं मां गे ददं हृदयं किं नमः शिवं स सिमं क्लृप्तं नमः नाय स्वाहा॥ ॥ २७
ॐ श्रीं हृदयं विषमं यद्दृष्टं यद्दृष्टं मनिःशुभं नादि वाधं किं नमः शिवं याय जातं कर्म स्वाहा॥ ॥
ॐ श्रीं हृदयं सकलं दृष्टं नादि वाधं किं नमः क्लृप्तं नमः नाय स्वाहा॥ ॥
ॐ श्रीं हृदयं ~~सर्वं~~ ~~सर्वं~~ ~~सर्वं~~ ॐ श्रीं हृदयं नमः श्रीं सिद्धां नमः श्रीं सिद्धां नमः नाय स्वाहा॥

स्वाहा॥ ॥ खूं रगवत्ये बहुकायालिने उद्धवकाय रुलयासनाय स्वाहा॥ ॥ खूं रगवत्ये
बहुकाया लिने उद्धवकाय मूनयागनाय स्वाहा॥ ॥ नंज खूं नमः सिद्धियागिनीत्यः
पूर्ववकाय चूणकनय स्वाहा॥ ॥ नंज खूं नमः सिद्धियागिनीत्यः पूर्ववकाय कर्ण
वधनाय स्वाहा॥ ॥ नंज नमः सर्वसिद्धिमाहत्यादक्षिणवकाय वरु कनय स्वाहा॥ ॥
नंज नमः सिद्धिमाहत्यादक्षिणवकाय वरु माहाय स्वाहा॥ ॥ नंज खूं सकलक
लवकायाय स्वाहा॥ ॥ नंज खूं रगवत्ये बहुकायालिने
उद्धवकाय चूणय स्वाहा॥ ॥ अग्निपुत्रि स्वाहा॥ नवाक्ष नययं च वकुल॥ अग्निपुत्रि

[illegible]

[illegible]

षुद्धवाचनं॥ॐ वक्र (ह) नमः॥ॐ युष्मिन्नाय नमः॥ॐ डाडिया नाय नमः॥ॐ जा
लक्ष्मि नाय नमः॥ॐ यूष्मिन्नाय नमः॥ॐ कामयूयाय नमः॥ॐ न्याय नमः॥
॥ॐ अग्नि नाय नमः॥ॐ जमाय नमः॥ॐ नेमत्याय नमः॥ॐ वनूनाय नमः॥ॐः
वायू वनमः॥ॐ कूव नाय नमः॥ॐ न्याय नमः॥ॐ दुर्ज्ञाय नमः॥ॐ मूक्षाय २८
नमः॥ॐ कांक्षि नाय नमः॥ॐ कांक्षु ४ यं नाय नमः॥ॐ कांदवागय नमः॥ॐ
कांदि (ह) नमः॥ॐ कांविदि (ह) नमः॥ॐ कांस्वर्माय नमः॥ॐ कांमर्षाय नमः॥ॐः
कांयातालाय नमः॥ॐ कां (ग) र्माय नमः॥ॐ कांक्षु नमः॥ॐ कांस्वन्दाय नमः॥ॐ

ॐ ह्रीं सूर्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं चन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं यागिष्वनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं महायागीष्व
नाय नमः ॥ ॐ ह्रीं हृदयान नमः ॥ ॐ ह्रीं मयिस्थान नमः ॥ ॐ ह्रीं आसविस्थान नमः ॥ ॐ ह्रीं
सर्वस्थान नमः ॥ ॐ ह्रीं देवस्थान नमः ॥ ॐ ह्रीं शिवस्थान नमः ॥ ॥ नमो देवस्य उरु न ॥
स्वधायि हृदय दक्षिण ॥ ॥ ॐ ह्रीं चन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रमिन्द्राय स्वाहा ॥ ॥ चक्राय नमः ॥
दक्षिण रागादत्तमकुक्षमादाय दक्षिण ॥ ॐ ह्रीं अग्नये स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मग्नये ॥ ॥ वामन
चक्रवामरागात् ॥ ॐ ह्रीं सामाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सामाय ॥ ॥ हृतीयनग्नमध्वरागात् ॥
ॐ ह्रीं अग्निधामाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मग्निधामाय ॥ ॥ सप्तविंशमाश्रमादाय वक्रवक्र ॥ ॐ

[illegible]

ये हूं हं का वि का ये स्वाहा ॥ नं ज हूं हं का वि का ये हूं वल का ये स्वाहा ॥ नं ज हूं वल
का ये हूं ड वा ट नो स्वाहा ॥ नं ज हूं ड वा ट नो हूं मृ थ य दा ये स्वाहा ॥ नं ज हूं मृ थ य दा ये
हूं मृ कि दा ये स्वाहा ॥ नं ज हूं मृ कि दा ये हूं सर्व सिद्धि दा ये स्वाहा ॥ ॥ मृ फा य रु ट स्वा
हा ॥ न व जि का कृ द न ॥ ॥ न क जि का स्वा य न ॥ नं ज हूं सर्व सिद्धि दा ये स्वाहा ॥ नं ज हूं
हूं खं स्वाहा ॥ ॥ ग ना व कु शि द्या न हं ॥ हूं हं स द्या ॥ जा ना य स्वाहा ॥ य त्वि म ॥ य
मृ ग स ह ॥ हूं हि वा म द वा य स्वाहा ॥ ड क न ॥ हूं हूं मृ द्या ना य स्वाहा ॥ द द्दि (६) ॥ हूं
हूं य ग त्पू नू य स्वाहा ॥ यूर्व ॥ हूं हूं श्री म ना य स्वाहा ॥ म (६) ॥ नृ ति संपू य स्वाहा नं घृ ता

दूतिंदूत्वारिद्यान॥ ॥ नगानुसंधानं ॥ ॐ ह्रीं स्यायागवामदवात्यां स्वाहा ॥ यः
स्त्रिमंडलं ॥ ॥ ॐ ह्रीं दूत्वा मदवमद्याना स्वाहा ॥ उरुवददिष्टा ॥ ॥ ॐ दूत्वं मध्यं
वगत्य नूयात्यां स्वाहा ॥ दक्षिणं पूर्व ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं गत्य नूष ॥ ॥ नात्यां स्वाहा ॥ पूर्व नमः
॥ ॥ द्यूतधन ॥ ॥ तथा गदकुकीकनस्य ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्यावामद्यानगत्य नूष ३०
॥ नय ४ स्वाहा ॥ वकुदानयर्थकावमस्य द्यूतधनस्य क ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्यावामद्यानगत्य नूष
॥ ॥ नय ४ स्वाहा ॥ वकुदानयर्थकावमस्य द्यूतधनस्य क ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्यावामद्यानगत्य नूष
॥ ॥ नय ४ स्वाहा ॥ वकुदानयर्थकावमस्य द्यूतधनस्य क ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्यावामद्यानगत्य नूष
॥ ॥ नय ४ स्वाहा ॥ वकुदानयर्थकावमस्य द्यूतधनस्य क ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्यावामद्यानगत्य नूष

अमाद्यादिष्टुदष्टरुयायासायीयसिद्धिलम्बी ॥ जंजनां नानां नृपकवर्षिणनयनदरुः
नरुनवसकजिह्वं गरुष्ठासिद्धिलम्बी कनकचतुर्धनं धाकिप्रवोसकाय ॥ वकुर्वी
यतसंस्तुमज्जानदयप्रिमूरुयदास्यदीर्घं आगच्छं ॥ निकावीदष्टादिष्टावलिनाया
दुवाग्निदवः ॥ ॥ गगावदाकृति ॥ ॐ ह्रीं वदन् ॥ (ह्रस्वाह) ॥ त्यागमरु ॥ नव ॥ ॐ ह्रीं वृ
थिवोस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मृगयस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वदन् ॥ (ह्रस्वाह) ॥ ॐ ह्रीं यजायनयस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं
दवस्य ॥ ॐ ह्रीं मयि स्य ॥ ॐ ह्रीं चन्द्राय ॥ ॐ ह्रीं यज्ञाय ॥ ॐ
ह्रीं मयि स्य ॥ ॐ ह्रीं सदस्य ॥ ॐ ह्रीं मृगमय ॥ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धये नमः ॥

स्वाहा॥ॐ॒ क्रां॑ मू॒न नी॒दा य॒ स्वाहा॥ॐ॒ क्रां॑ वा॒य व॒ स्वाहा॥ॐ॒ क्रां॑ व॒द्म (६) स्वा॒रु त्या॒दि॥२॥
ॐ॒ क्रां॑ नि॒वा य॒ स्वाहा॥ॐ॒ क्रां॑ दि॒व स्वा॒हा॥ॐ॒ क्रां॑ सूर्या॒य स्वा॒हा॥ॐ॒ क्रां॑ व॒द्म (६) स्वा॒रु त्या॒
दि॥२॥ॐ॒ क्रां॑ मा॒या य॒ स्वाहा॥ॐ॒ क्रां॑ दि॒ग्ग ४ स्वा॒हा॥ॐ॒ क्रां॑ च॒न्द्र म॒म स्वा॒हा॥ॐ॒ क्रां॑ व॒द्म
(६) त्या॒दि॥२॥ ॥ ग॒ग॒न॒सि॒य॒श्च॒राम॥ॐ॒ ह॒ स्वा॒हा॥ॐ॒ द॒ म॒ग्न॒य॥ॐ॒ नु॒ व॒ ४ स्वा॒हा॥ॐ॒ न्यं॒ ३१
वा॒य व॒॥ॐ॒ ह॒ ४ स्वा॒हा॥ॐ॒ द॒ सूर्या॒य॥ॐ॒ ह॒ नु॒ व॒ ४ ह॒ ४ स्वा॒हा॥ॐ॒ द॒ य॒ जा॒ य॒ य॥ ॥
ॐ॒ वे॒ध॒न॒ न॒ जा॒ न॒ व॒ द॒ ॐ॒ ह॒ च॒ रु॒ हा॒ दि॒ ना॒ द॒ स॒ च॒ व॒ क॒ मा॒ नि॒ सा॒ ध॒ य॒ स्वा॒हा॥३॥ॐ॒ द॒ ग॒ न॒ थ
॥ म॒ ७ म॒॥ॐ॒ स॒ रु॒ सा॒ त्रि॒ ष॒ द॒ द॒ या॒ य॒ स्वा॒हा॥ त्या॒ग॥ॐ॒ ह॒ सि॒ य॒ ध॒ य॒ नि॒ न॒ स॒ स्वा॒हा॥ ॐ॒

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ धूम्रपायिन कवचाय स्वाहा ॥ ॐ सफजिह्वाय न
मो स्वाहा ॥ ॐ धनूद्वजाय स्वाहा ॥ ॐ गंगाय नमः ॥ ॐ श्रीगंगाय नमः
वन्दे सर्वजन भक्तमानस्य स्वाहा ॥ ॐ गंगाय नमः ॥ ॐ गंगाय नमः ॥ ॐ गंगाय नमः
॥ गंगामूलमनुहा ॥ वदन्ति देवता चैव केका कवचार्थं यच्च विंशत्याश्च द्वादश
त्वा स्वात्मानि देवता मे श्रीविश्ववयम् ॥ ॥ मूलन ॥ नाडीसंधानार्थं मकादशावाचं च
तद्गत्वा अष्टमं वन्दे देवता नामकमाद्विंशत्वा ॥ योजनं ॥ ग्रीवाय नमः ॥ सप्तवय
सीतनिधाय ॥ ॥ ग्रीवाय नमः ॥ मालिनीय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीरुद्रवाच

॥ जं जं जं यत्वं मासिनी दत्ता निर्मलमलनाजिनी ह्यानः किं पुरुषदेवी वृद्धिस्त्वं न
जवद्धनी ॥ जननी सर्वरुगानां संसात्रस्मिन् ववस्तिता माता वीवावली दत्ता क
नृत्वं कनूवत्सल ॥ जयति यत्र मगत्व निर्वो हं संहति न आ मया निःसृता वकः
नूया यत्राहमः किं ह्वमिच्छा विद्यामङ्गला मद्धि न स्वासुलखायूनः सकना ॥ ग ३२
रुवर्वत्कृष्णलाका न नूया पुरुषत्वादिः किं सुसंगीय मं रासूना अति नूया स्व नू
याऽप्यसिवा अष्टनामा च वामा च नोदी मना स्वासिका विन्दु नूया वधूना द्वन्द्व क
निह्वयिका एष गूढमका न नूका नडाका न संयाजिन कत्व माय सगत्स नूयाऽप्यनूय

व
यास्व नृपा च रुग्ण का न स्मयिनी आदिग ४ द्वा न क रत्वा इ वा या नि स्व नृपा ही क ह स व
धना नृपा माता नथान न्य द कि ४ सुष्ठु आ रि मूर्ख म नी क्ष वि ही रा न र ति सि धि थी क्षा स्मि काः
स्मा हू र ता रु ना द्वा च अ ही ह रो ती ह स या स्मि का नृ ग्र ह क्षा त्रि ता र्त्वं कु न सा इ म रु स न स
रा गिनी आ उ क्ष ना मृ ता वि न्द स द्वा रि नी स न्द द रु र्त्ता । अ य स मा क य नान न्द नि वी त सो
ख य द रु न वी यान को ण नृ द कि ४ य न मा वि ही नृ द कि ४ ख गी सि धि या । ग ल्व नी सि धिः
मा ता वि रु ४ द न गी रि या न्या हू वी वा न्वि रु द्वा रि वा सि द्ध वा । ग ल्व वि मा रु का सि धि मि च्छा
क्रिया म द्ग ला सि धि ल आ वि र ति ४ स र्त्ति गे ति ४ क्षा व ता खा नि ना ना य ही न क च ह्म क न

लक्ष्मण मन्त्रया मन्त्रा कुम्भया गयिया त्वं जयन्त्या यत्रा जिगा नूद सभाहिनी त्वं नवाः
साखा देवस्य चात्सङ्गयाना लिता मन्त्रमाग्नौ नगे मन्त्रि रिता नयानानुवक्तुः ॥ सूरको
॥ सूर्यसूत देवीयश्च मन्त्रे दिवा या नात्सवे मन्त्रु कालकाया लिनी न कजना द्विजना
जना वक्तुः ॥ यश्च यद्यकना रुवे ॥ मन्त्रे वे स्येना न ॥ मन्त्रे ॥ रुन्नु वे फयस मयमांस
यिय मन्त्र विद्यावता रुसि रि मन्त्रु कं कालकाया लि रि दिवा च यो नू नूटे न मन्त्रा नूतुः
का नसा रुस्यधा का नवोषटवषटका नदू का नरुटका नजाति रि नते ॥ मन्त्रा रुवा चा
वि रि वा मन्त्रु रुसि रि न रुस्ये वा वलो जाय रि ॥ साधु के ॥ यून के ॥ मन्त्रु रि मन्त्रु लक्ष्मिः

नथागिरिर्थागिनीवृन्दमलायकेनूदकोशलसेऽयूषस्यथागिनीयागसिद्धियुददवि
लेयद्रायशायमेवचिनेऽस्ररूपूलेसुसंयमस्रगस्यादिवानविद्वस्त्रिगामयकयाता
लसंखचनीसिद्धिनवाकृतावरुतेरुकितायऽयऽ॥०॥दृष्टुंमककालंद्विकालंदिकालं
चतुऽयऽप्रपद्यकचाक्षुविऽस्रभयऽस्रदामानवऽसायिचोनाग्निरासुर्वयवर्तनाय
यिसनञ्जसदवियुगानूनागमरालञ्जयिअरुमचोनानादानानूकऽववद्वद्यऽगद्यः
मरुदाअदृष्टाविमूक्षकि संस्मृतदवित्वदायमूर्खयुलूचनान्काविहूचद्विवासाति
वसत्कुलुलाद्युष्टगलुक्तलंयऽपितवद्वाट्टट्टवर्धनेनैर्नागयाहिरुजावद्वयांगुलेरुपित्वना

मसंकीर्तनादविमूक्षन्निद्यानेमोहावाधिरि४४ संसृत्ययादात्रविन्दद्वयं नमस्तु का
लिकाग्निर्गज४४ यरुस्कन्दवक्रन्दवन्दार्कयूषायाधे मालिमालालिसत्यद्रकिजः
ल्लसत्यिज्ञनसर्ववीनाम्विकरेनवीरेनवर्क्षः४४ नलगातादं दमस्वदं मस्वायना
धंदमस्वायनाधंलिव॥ नवैमुनामरुदवीरेनवनमरुत्तना। गतालिङ्गविनिर्दि ३४
अनिर्गतायनमध्वनी॥ ॥ ॐ निसालिनीदलुकशुभं समार्क॥ ॥ नेंजयासायनाय
नादवीखगस्त्वस्वस्वपिपीसूत्रलाकगतासीम्या आयानु०० रुमलुल॥ नृगान्निमः
लुलसी। गसंनिधिरि॥ ॥ आवाहनादियान्याकमूदानत्रकयदर्शयन्॥ ॥ नृथयांशः

[illegible]

संस्तवयतीति निश्चयः ॥ ननाद्यतादूनि ॥ विदवा ॥ (धूमं) यस्तु नदीयदमुकोदवा मरु
ध्वं द्रुग्यालाय स्वाहा ॥ नंजर्षां कौकलयुवदुकनाथा ॥ यस्वाहा ॥ नंजर्षां गौंगुंग ॥ गौंगुः
कूलग ॥ एष्ववाय स्वाहा ॥ यां या निनीत्य ॥ स्वाहा ॥ ॥ मूनितामदि ॥ वक्रा ॥ अदि ॥ कां मूनि
ताद्वरे नवाय मूवक्रा ॥ एकि सहिताय स्वाहा ॥ ॥ कां नू नू रे नवाय कं माह्व विहाकि ३५
सहिताय स्वाहा ॥ ॥ कां चतुरे नवाय चं को माविहाकि सहिताय स्वाहा ॥ कां काधरे न
वायटं वेष्टुवी ॥ एकि सहिताय स्वाहा ॥ ॥ कां उतमरु रे नवाय तं वा वाही ॥ एकि सहिताय
स्वाहा ॥ ॥ कां कयासि सरु नवाय यं वूदा ॥ एकि सहिताय स्वाहा ॥ ॥ कां रोमहर नवा

यंचामूष्मिणकिमहिनायस्वाहा॥ ॥ कौंशं कवरेव वायं मरुतश्चापकिमहिनाय
स्वाहा॥ ॥ ॐ ह्यदि॥ लूं ॐ ह्यदि॥ लूं ॐ ह्यदि॥ लूं ॐ ह्यदि॥ लूं ॐ ह्यदि॥ लूं ॐ ह्यदि॥
स्वाहा॥ ॥ वूं वनूषयस्वाहा॥ यूं वायूवस्वाहा॥ सूं कवनायस्वाहा॥ दूं ॐ ॥ नायस्वाहा
॥ मूं मूननायस्वाहा॥ लूं वनूषयस्वाहा॥ ॥ ययादि॥ कौं ययागमरुदक्षयालायस्वाहा॥
॥ ॥ कौं वनूषयस्वाहा॥ ॥ कौं कालायूलमरुदक्षयालायस्वाहा॥ ॥ कौं ॐ
दक्षयमरुदक्षयालायस्वाहा॥ ॥ कौं जयनीमरुदक्षयालायस्वाहा॥ ॥ कौं वनीम
रुदक्षयालायस्वाहा॥ ॥ कौं नकासुकमरुदक्षयालायस्वाहा॥ ॥ कौं दवीकाटमरुदक्ष

यालायस्वाहा॥ ॥ रुद्रकादि॥ कां रुद्रकदेश्यालायस्वाहा॥ ॥ कां शिवानककदेश्या
लायस्वाहा॥ ॥ कां अग्निवगानकदेश्यालायस्वाहा॥ ॥ कां अग्निजिह्वादेश्यालायस्वा
हा॥ ॥ कां कालाक्षदेश्यालायस्वाहा॥ ॥ कां कलालिनकदेश्यालायस्वाहा॥ ॥ कां नक
यादक्षदेश्यालायस्वाहा॥ ॥ कां शिमनूयक्षदेश्यालायस्वाहा॥ कां रुद्रकदेश्यालायस्वाः ३३
हा॥ ॥ कां गगनक्षदेश्यालायस्वाहा॥ ॥ वक्राब्धदि॥ कां अं वक्राब्धीदेवीस्वाहा॥ ॥ कां कं मा
हेश्वरीदेवीस्वाहा॥ ॥ कां चं कोमाविदेवीस्वाहा॥ ॥ कां टं वेसुवीदेवीस्वाहा॥ ॥ कां गं वात्रा
दीदेवीस्वाहा॥ ॥ कां यं नून्दादीदेवीस्वाहा॥ ॥ कां यं चामूलादेवीस्वाहा॥ ॥ कां णं महालक्ष्मी

देवी स्वाहा ॥ वक्रा ॥ वक्रा (ल स्वाहा ॥ ॥ यही न ॥ यही नाय स्वाहा ॥ ॥ वदि ॥ वक्रा (ल स्वा
हा ॥ सिद्धि स्व नाय स्वाहा ॥ निवाय स्वाहा ॥ माया ये स्वाहा ॥ ॥ न्दुय स्वाहा ॥ न्ग्नय स्वा
हा ॥ मूंय माय स्वाहा ॥ दूं नेमयाय स्वाहा ॥ वूं व नूलाय स्वाहा ॥ यूवायूव स्वाहा ॥ हूं वू व
नाय स्वाहा ॥ दूं न्ना नाय स्वाहा ॥ ॥ नूं नून नाय स्वाहा ॥ ॥ नूं वक्रा (ल स्वाहा ॥ सिद्धा नि
॥ ॥ यंच वलि ॥ वटुक ॥ यीं यीं कूलयूग वटुक नाथय स्वाहा ॥ ॥ द्वा ॥ ॥ थूं यस्म नदी यः
कमु को देवी महा धीं द्वा द्वा या लाय स्वाहा ॥ ॥ या निनी ॥ यीं या निनी य ४ स्वाहा ॥ ॥
वा मूला ॥ धूं यी सिद्धि वा मूला ये स्वाहा ॥ ॥ ग (ल स ॥ गं गीं गूं ग ४ ग्लें कूल ग (ल स्व नाय स्वा

॥ कलहा ॥ ॐ ईं स४ म४ य४ य४ य४ स्वाहा ॥ ॥ जवहाकि ॥ ॐ झां ॐ ईं स४ म४ य४ य४
याय म४ म४ ती४ व४ नाय म४ ल४ ल४ झी४ हाकि साहिताय ॐ ईं स४ स्वाहा ॥ ॥ ॐ न्यादि कलहा
या ॥ यू४ व४ ॥ ॥ हाकि ना न४ य४ स्वाहा ॥ म४ म४ ग४ ला४ दा४ नाय स्वाहा ॥ ॐ लूं ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॥ ग्रा
म४ य४ ॥ ॐ झां वि४ द्वि४ ना न४ य४ स्वाहा ॥ ॐ झां वि४ द्वि४ दा४ नाय स्वाहा ॥ ॐ नूं म४ न४ य४ स्वाहा ॥ ॥ द ३१
दि४ हा ॥ वि४ या४ ना न४ य४ स्वाहा ॥ म४ रु४ रु४ दा४ नाय स्वाहा ॥ ॐ म४ य४ मा४ य४ स्वाहा ॥ ॥ ने४ म४ य४ ॥ ॐ
झां की४ र्ति४ ना न४ य४ स्वाहा ॥ ॐ झां की४ र्ति४ दा४ नाय स्वाहा ॥ ॐ दूं ने४ म४ य४ य४ स्वाहा ॥ ॥ या४ म्ब
म४ ॥ नि४ वृ४ र्ति४ ना न४ य४ स्वाहा ॥ क४ र्था४ हा४ दा४ नाय स्वाहा ॥ वं४ व४ नूं य४ स्वाहा ॥ ॥ वा४ य४ व४

॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **कुं**दायुष्टिदा नायस्वाह ॥ **कुं**यं वायवस्वाह ॥ ॥
॥ **डकुं**नायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **आ**नायदा नायस्वाह ॥ **कुं**सं कृव नायस्वाह ॥ ॥
॥ **श्री**मान ॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **कुं**सिद्धिदा नायस्वाह ॥ **कुं**दू० ॥ **श्री**मान नायस्वा
ह ॥ ॥ **श्रु**ध ॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **कुं**श्रुन नायस्वा
ह ॥ ॥ **उद्व**या ॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **कुं**दायुष्टिदा नायस्वाह ॥ **कुं**कुं वक्र (६) स्वाह
॥ ॥ **जि**वनाकि मनु ॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ **कुं**दायुष्टिना नमः यस्वाह ॥
नायकुंदायुष्टिना नमः यस्वाह ॥ ॥ **ग**(६) स ॥ **ग**ंगाय नमः यस्वाह ॥ ॥ **गु**न ॥ **गु**नमूर्तयस्वाह ॥ ॥

ॐ ॥ कौंकर्यालायस्वाहा ॥ ॥ यागिनी ॥ यांयागिनीह ॥ स्वाहा ॥ ॥ यदयदली ॥ यं
दायस्वाहा ॥ यदनोस्वाहा ॥ ॥ पीलञ्जी ॥ प्रियेस्वाहा ॥ लञ्जेस्वाहा ॥ ॥ भक्तिक ॥ युक्तिक
॥ ॐ ॥ भक्तिकल ॥ यस्वाहा ॥ ॥ युष्टिक ॥ ॐ युष्टिकन ॥ यस्वाहा ॥ ॥ पीलञ्जी ॥ पीमूर्क
यस्वाहा ॥ कौलञ्जीमूर्कयस्वाहा ॥ ॥ मूसु ॥ ॐ कौंमूसुकल ॥ यस्वाहा ॥ ॥ वासु ॥ ॐ ३८
कौंकोङ्कवास्त्राधियनयवन्म ॥ स्वाहा ॥ ॥ नागद्य ॥ ॐ शंस ॥ वनूषयस्वाहा ॥ ॥ मृत्युंज
य ॥ ॐ शंस ॥ मृत्युंजयायस्वाहा ॥ ॥ धनुलयार्ग ॥ ॐ कौंङ्क ॥ कौंङ्क ॥ कौंङ्क ॥ कौंङ्क ॥ नमः ॥ ॥ गम
यलिन ॥ ॐ शंस ॥ मृत्युंजयायस्वाहा ॥ ॥ ध्वधानाय ॥ वनूषयस्वाहा ॥ ॥ कलस ॥ ॐ शं

सः मृदुजयाय स्वाहा ॥ कमया ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥ ॥ यंच वलि ॥ नेंज खुं
गोंडों कूलयगुवदुकनाथयादुको ॥ ॥ नेंज खुं ॥ थुं यस्तनदीयदमुकीदवीम
राक्षीददगयालाययादुको ॥ ॥ नेंज खुं यांथा ॥ गिनीयायादुको ॥ ॥ नेंज खुं गी
सिद्धिचामुलीध्वनीयादुको ॥ ॥ नेंज खुं गंगीगुंग ॥ सोंकूलग ॥ एध्वनाययादुको ॥
॥ ॥ नेंज थुं यस्तनदीयदमुकीदवीमराक्षीददगयालाययादुको ॥ ॥ नेंज खुं गीं डों
कूलय ॥ गुवदुकनाथयादुको ॥ ॥ नेंज खुं गंगीगुंग ॥ सोंकूलग ॥ एध्वनाययादुको ॥
हा ॥ ॥ यांथा गिनीयास्वाहा ॥ ॥ ददायुजा ॥ पूर्व ॥ ॐ स्वस्त्यस्तु ॥ ॥ दक्षिण ॥ ॐ सि

इत्यत्रायस्वाहा॥ ॥ यत्त्रिम॥ ॐ त्रिवादेवोस्वाहा॥ ॥ उरुत्र॥ ॐ मायादेवोस्वाहा॥ ॥
कालकाष्ठकयूजा॥ ॐ रुद्रायस्वाहा॥ ॐ अग्नयेस्वाहा॥ ॐ उमायस्वाहा॥ ॐ नेमया
यस्वाहा॥ ॐ वनस्पतयेस्वाहा॥ ॐ वायवेस्वाहा॥ ॐ कृवनायस्वाहा॥ ॐ श्वानायस्वाः
हा॥ ॥ नन्दादिनयूजा॥ ॐ अग्नये॥ ॐ नन्दायस्वाहा॥ ॥ नेमया॥ ॐ रुद्रायस्वाहा ३२
॥ ॥ वायवे॥ ॐ उमायस्वाहा॥ ॥ श्वान॥ ॐ उमायस्वाहा॥ ॥ मन्त्र॥ ॐ पूषाय
स्वाहा॥ ॥ सगम॥ ॐ द्यौर्द्वारं द्यौर्द्वारं द्यौर्द्वारं नमः॥ ॥ वसिष्ठवसुवी॥ ॐ द्यौर्द्वारं वसुवीदे
वोस्वाहा॥ ॥ द्रुवाविवा॥ सर्वथाहर्गयः॥ सर्वथाविश्ववयः॥ ॐ उ

ॐ ह्रीं क्लीं द्रुं ह्रीं द्रुं द्रां क्लीं नमः स्वाहा ॥ गलालनाम ॥ ॐ ह्रीं क्लीं द्रुं ह्रीं द्रुं द्रां क्लीं
नमः स्वाहा ॥ ॥ दमाइलेम ॥ निंज ॥ आनन्दकिरेनवानन्दवाधियग
यय ॥ श्रीपद्मममूलस्वनरुदा ॥ विकायस्वाहा ॥ गहा ॥ ग्रीं श्रीं क्लीं
गलालनाम ॥ यस्वाहा ॥ ॥ ग्वयस ॥ ॐ य ॥ शुभ्रग्वमाइस्वाहा ॥ ॥ कीमात्रा ॥ निंज ॥ वं
ह्रीं जं मं ॥ ॐ श्रीं क्लीं कोमाविविर्वास्वाहा ॥ ॥ कवा ॥ श्रीसुयायस्वाहा ॥ श्रीपद्मयति रुद
नकायस्वाहा ॥ ॥ श्रीगनूतनायनायस्वाहा ॥ श्रीमानध्वनीरुदवतायस्वाहा ॥ श्रीस्व
दवतायस्वाहा ॥ श्रीवन्ध्यायस्वाहा ॥ ॥ नवासा ॥ निंज ॥ ॐ ह्रीं क्लीं द्रुं ह्रीं द्रुं द्रां क्लीं
आनन्दकिरेन

[illegible]

[illegible]

॥ नमो लाकि नो स्वाहा ॥ नमो काकि नो स्वाहा ॥ नमो साकि नो स्वाहा ॥ नमो हाकि नो स्वाहा ॥ ॥ व
ट्टु दत्ति निंजधूमं ॥ वृत्त कालिका लिकां ॥ मरु कालिकां ॥ मीम (भातिगणजनिदू
नेक केसु मुखी ॥ देवी को मां मां यश्च नुः ॥ गव ४ स्वाहा ॥ निंजन मीरु गवती दृष्ट चामुल
नरु नृधिन मां ॥ रुदही कया लख द्वांग भाविता रुन २ दह २ वच २ यच २ दू ३ नमः ॥ ५१
मानय २ यम २ द्वां द्वां दू दू रुट्ट स्वाहा ॥ निंज नृधा नृधां थधा नृधुं धा न २ ग नृधां द्वां सर्व
न सर्वधुं नमः नृद नृधुं नृधुं स्वाहा ॥ निंज द्वां डली सिसम दिया द्वां सवयूल वि
यवा ध ५ या द्वां दि सिसा सिड लिखिया द्वां सर्व दू दू लिखिया स्वाहा ॥ निंज दू गुरु कः

द्विकदंरुदकां नकं मरुनकं ताम् (७) वनो नखाहा ॥ नंज श्रुं श्रुं कांकां दूँ सर्वो यद
वानरुयने चूष्मिषया गदिकं यने कर्गं कालिर्गं कलिषा ॥ ६ ॥ नितातु हेन श्रुं दं
कलालिजांकां दूँ हों दूँ पीयुक्त कृद्विकं खाहा ॥ ॥ ७ ॥ यच ॥ ॥ ८ ॥ कां नार्जं यद श्रुं ८
गुचलुन वमद निदूँ दूँ सदा नदर त्वां मां इं समर्थे रु ननम खाहा ॥ ॥ व ॥ ॥ ९ ॥
मूत्वा ॥ नंज ॥ १० ॥ कां वगला मुखि सर्वदृष्टा नां मुखं वा चं फेरय जि कां कोलय श्रुं द्विना ॥
य श्रुं ११ ॥ खाहा ॥ ॥ १२ ॥ कि ॥ १३ ॥ कां दूँ नं वद वेला चना यदूँ श्रुं दूँ खाहा ॥ ॥ १४ ॥ रुन रुन
वा ॥ १५ ॥ कां दूँ श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं दूँ रुद खाहा ॥ ॥ १६ ॥ नावलया ॥ नंज ॥ १७ ॥ दूँ ॥ १८ ॥ नृप

[illegible]

[illegible]

॥ वृक्षनायस्वाहा ॥ गन्धर्वनायस्वाहा ॥ ॐ ननायस्वाहा ॥ वक्रावायस्वाहा ॥ मासायस्वाहा
॥ समस्तनायस्वाहा ॥ सावयवायस्वाहा ॥ देवानूनायस्वाहा ॥ अय्यनमस्वाहा ॥ दे
वायस्वाहा ॥ नागायस्वाहा ॥ सागनायस्वाहा ॥ यवनायस्वाहा ॥ सास्त्रावस्वाहा ॥ दिवा
देवायस्वाहा ॥ मानूषायस्वाहा ॥ नागायस्वाहा ॥ यन्नगायस्वाहा ॥ ॐ नानमनूषायस्वाहा ॥ ४३
॥ नक्षत्रायस्वाहा ॥ यक्षासिस्वाहा ॥ स्रवक्ष्मिस्वाहा ॥ पिशाचायस्वाहा ॥ यथिविस्वाहा
॥ ऋषयस्वाहा ॥ यक्षायस्वाहा ॥ वनस्पतयस्वाहा ॥ रुद्रायस्वाहा ॥ वरुचिर्विषय
स्वाहा ॥ आयायस्वाहा ॥ अवायस्वाहा ॥ सासायस्वाहा ॥ धृतरायस्वाहा ॥ मुनिनायस्वाहा ॥

नूनाय स्वाहा ॥ यत्युषाय स्वाहा ॥ यशसाय स्वाहा ॥ वत्सयतय स्वाहा ॥ मूढनि स्वाहा
॥ वासेनाय स्वाहा ॥ हृष्याय स्वाहा ॥ गवदीयाय स्वाहा ॥ कुवनाय स्वाहा ॥ मरुप्त स्वाहा
॥ मिश्राय स्वाहा ॥ मूयकाय स्वाहा ॥ कालमगव स्वाहा ॥ जन्मपुरुषाय स्वाहा ॥ सर्वेश
॥ ४ स्वाहा ॥ देवय ४ स्वाहा ॥ सर्वग ४ स्वाहा ॥ ॐ सर्व ४ स्वाहा ॥ सर्वेश ४ स्वाहा ॥ ॥ ॐ नित्य
लायागनविधि ॥ ॥ दक्षायगनविधि ॥ रे नवमूषा न स्वाहा ॥ ॥ किमूषा न न्यवी स्वाहा
॥ ॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा
॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा ॥ ॐ नूनाय स्वाहा

का॥ कांकाधरे नवाय स्वाहा॥ नंजकुं वेसुवा स्वाहा॥ कांडसकरे नवाय स्वाहा॥ नं
कुंवात्रास्त्र स्वाहा॥ कांकपालिरे नवाय स्वाहा॥ निकेन्दो स्वाहा॥ कांरिषधरे नवा
य स्वाहा॥ नंकांसेनामूषाय स्वाहा॥ कांसंरुनरे नवाय स्वाहा॥ कांसंरुलस्त्र स्वाहा
॥ कुंशंसंरुमामरुध्वनाया स्वाहा॥ कांसंरुनमानावाय एषयरागचं॥ कांकांशंरुदं ४४
दंरुयालाय सर्वविघ्नहनस्त्र स्वाहा॥ यकूलिया॥ कांकांशवाय स्वाहा॥ कांविद्यादका
य स्वाहा॥ यकूलिदेव॥ कांसंरुध्वनाकिमहिगाय स्वाहा॥ कांदंरुयालाय स्वाहा
॥ गंरुक्ति॥ गंरुगलवतय स्वाहा॥ कांदंरुयालाय स्वाहा॥ मयनमभवत्स्व॥ गंरु

यतिविश्रयि०॥ गद्ययगयस्वाहा॥ कौं० स० नमानावात्मयस्वाहा॥ १०॥ त्रियस्वाहा
॥ ल० स्त्र० स्वाहा॥ कौं० ग० नूत्तमस्वाहा॥ कौं० स० न० स्वयेस्वाहा॥ कौं० ग० नूत्तमस्वाहा॥ कौं० स०
दाजिवायस्वाहा॥ कौं० कौं० स० सूर्यायस्वाहा॥ कौं० क्षे० यालायस्वाहा॥ क०॥ हं० ह० न० मः
नस्वाहा॥ हं० कान० वृ० न॥ सकान० वृ० न॥ यस्त्रिम॥ कौं० क्षे० यालायस्वाहा॥ य०॥ कौं० जि० वाः
यस्वाहा॥ वां० वट्टकायस्वाहा॥ ग्लूं० गद्ययगयस्वाहा॥ कौं० (ग०) योस्वाहा॥ हूं० ईं० स० म०
मृ० गी० सर० न० वायस्वाहा॥ या० का० ग० च्छ०॥ ईं० स० ना० ग० यति० यि॥ कौं० क० न० क० र० न० वायस्वा
हा॥ ॥ ध० न० दू० थू० या॥ ॥ कौं० नि० (ग०) न० स० दा० जि० वायस्वाहा॥ गीं० कौं० व० लु० धा० य० यस्वाहा॥

कुंशसंमर्दं नारायणाय स्वाहा ॥ गुरुं गणपतये स्वाहा ॥ किंमर्थं नमः ॥ कांतिवाय
स्वाहा ॥ कनिमा ॥ मूलदेवताया ॥ गुरुं गणपतये स्वाहा ॥ श्रीं श्रीं ॥ वक्राक्षः
दि ॥ लूमाट ॥ वक्रादि ॥ का ० च ॥ नंदू मरुकाकनवी नमः ॥ श्रीं श्रीं ॥ नारायणाय
स्वाहा ॥ कुंशसंमर्दं नारायणाय स्वाहा ॥ वृषिं ग ॥ कांक्षया नारायणाय स्वाहा ॥ र नू ४५
हाट ॥ गुरुं गणपतये स्वाहा ॥ गल ॥ कांक्षं नारायणाय स्वाहा ॥ गव देवता ॥ कांक्षं नमः
नारायणाय स्वाहा ॥ श्रीं नारायणाय स्वाहा ॥ कांक्षं गल ॥ कांक्षं नारायणाय स्वाहा ॥ कांक्षं नारायणाय
स्वाहा ॥ मूल ॥ लूमा ॥ गुरुं गणपतये स्वाहा ॥ पिथ ॥ कांक्षं नारायणाय स्वाहा ॥ गुरुं गण

यस्य स्यात् ॥ ॥ ध्यायिनाय ॥ ॥ कौनवदुर्गस्य स्यात् ॥ ॥ त्वंगत ॥ ॥ द्वांद्वयालाय स्यात्
॥ ॥ वेथ ॥ ॥ द्वांद्वयालाय स्यात् ॥ ॥ कथ ॥ ॥ वक्राद्यदि ॥ ॥ कथनाच्च ॥ ॥ वक्राद्यदि ॥
॥ ग्लंगतयस्य स्यात् ॥ ॥ कथ ॥ ॥ मृगिताक्षदि ॥ ॥ ग्लंगतयस्य स्यात् ॥ ॥ कथ ॥ ॥ कौनवयाय स्यात्
॥ ॥ कुं नाटव्याय स्यात् ॥ ॥ द्वांद्वयालाय स्यात् ॥ ॥ काच्च ॥ ॥ ग्लंगतयस्य स्यात् ॥ ॥
॥ कथनाच्चया ॥ ॥ द्वांद्वयालाय स्यात् ॥ ॥ धनलंघ ॥ ॥ कुंकलंकव्याय द्वांद्वयालाय स्यात्
॥ ॥ ॥ ककुवलसिक् ॥ ॥ ॥ ॥ रुंगव्याय ॥ ॥ कुंकलंकव्याय स्यात् ॥ ॥ कौसः नानायस्य
स्यात् ॥ ॥ यूनकवल ॥ ॥ ॥ ॥ उगनाथा ॥ ॥ गकू ॥ ॥ रुयनश् ॥ ॥ विद्यायी ॥ ॥ वलिस्विक ॥ ॥

[illegible]

आत्मादि॥ ८॥ ॥ नैंदौ रुमवयेखाहा॥ दौ चन्दुधवायखाहा॥ कौ सौ चन्दुधव्यखा
हा॥ कौ गाममहाकारेखाहा॥ दौ जेदुधवायखाहा॥ दौ वचुलादेवखाहा॥ दौ
विक्रमनावायनायखाहा॥ गहा॥ नैंजदेगुवालायखाहा॥ दौ दग॥ नैंजमू॥ दग॥
॥ दौ दौ दगयखाहा॥ दौ यदायखाहा॥ दौ जदिलेखाहा॥ ॥ दौ लये॥ दौ
॥ दौ लक्ष्मीखाहा॥ दौ वनूषायखाहा॥ दमाइया॥ ॥ वामूषा॥ दौ ३॥ दौ नूँरुद
यखाहा॥ दौ लूं सचिदेव॥ मानवनीया३॥ यिथूसकल॥ विहससूर्य॥ सग॥ मूधाः
वा॥ मरु॥ वंकलिया॥ दूधूसकल॥ ॥ वहिद्विनीगहा॥ थवदगुलिया॥ दूवनयाहा

रिज ॥ मूलमनु १०८ ॥ द्युतादू नित्यूर्ध्ववाक् ॥ नंजवक्त्राविष्णुमहर्षी सूत्रयतिद
नी कालनक्षत्रता वातायक्षुनाग ॥ गरुगघसहिता हृदिवा नागिथाग आगिः
नक्षत्राया गघयतिवट्टकाक्षुयालादि सर्वे गव ४ कूर्चनु ॥ निखरिमगरुलदा
आश्रयूर्ध्वदूतनखाका ॥ यासयुताधि नृजुजदक्षकयूगा यश्चककादि नगा वक्त्रग ५१
नी विरुद्रयुक्तगिरिनिलय दक्षत्राजवसनी ॥ नृस्त्रविन्दुगुणत्वमगरमयनूवि
व्यस्त्रमोयवर्मा यागुयी सिद्धिलक्ष्मी शरिमगरुलदा कुलनूपय विचिंत्य ॥ मरुसा
नाकुजगंधवी चंद्रिकायलि संसृता गियश्च नय संयुक्ता दक्षवाक् मरुवली ॥ ॐ

निद्यतादूतिपूष्पा ॥ द्युतावनवथं ॥ ॥ अथ कामयागपुष्टि ॥ खुं सकलः
यमथनिमृक्ताय रुट् ॥ यादृष्ट ॥ ॥ खुं सकलद्विगाविष्टं कलनिष्टं ननु कः
वचायदू ॥ तादन ॥ ॥ खुं सकलः यमथनिमृक्ताय रुट् ॥ संमार्ज्ज ॥ ॥ (थ च
ननस्त्रिकवाय ॥ यश्च यदव ॥ नवाक्षत्र ॥ द्यामन ३ ॥ ॥ तिलं गुलं मृदुय
वदूधविद्युतकस्त्रि साखलं कूलदू मूलिणीरुलम्ब १ द्ययसमिध २ ॥ मृदुमाला
॥ कामखालिक २ ॥ यागसगय ॥ मयणीनदृष्टाक्षजाया १० ॥ मूलमालामनुनयं चक्ष
जाय ॥ अठ (गनयूजनं ॥ ॥ अजमानन कामयागंधत्वा ॥ वाक् ॥ यदुस्यात्वं यतिष्टुहि

निर्विघ्नं यद्गुरुकर्मणि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमानादि सर्वेषु
नाजानासु गुरुदय सर्वेषां निकृष्टवत्सर्वद्वेषघ्नसुखय ॥ एवममुगृहीत्वा च
सर्वेषां निकृष्टनामदं ॥ सर्वद्विगतनामय लक्ष्मी सर्वार्थसिद्धिदा ॥ यजमान न नम
स्तुते ॥ ॥ संकल्प ॥ अग्नये वेधे नलाय यथा यत्रिमिता दूति संकल्पसिद्धि नमु ॥ ॥ ४८
नंजल्यमग्नौ ध्वनं नंजं याव नंय नमं यतः ॥ तस्मात्त्वे दीयदत्यक्ष संस्कारयत यथा
मिने ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ निलादूतिविय ॥ ॥ निदव ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
वीमकाक्षं दक्षं गवां लाय स्वाहा ॥ ॥ यीक्षां कूलयूथवदूकना ॥ ॥ यथा स्वाहा ॥ जगं गंगू

ग० लो० कूलगा० ल० व० वाय० स्वा० ॥ यां या० नि० न० ४ स्वा० ॥ ॥ अ० सि० तां० ग० दि० ॥ व० द्रा० ॥
दि० ॥ कां० अ० सि० ता० इ० रे० न० वा० य० मू० व० द्रा० ली० ण० कि० स० हि० ता० य० स्वा० ॥ ॥ कां० नू० नू० रे० न० वा० य० कं०
मा० रु० व० वि० ण० कि० स० हि० ता० य० स्वा० ॥ ॥ कां० व० धु० रे० न० वा० य० वं० को० मा० वि० ण० कि० स० हि० ता० य० स्वा०
॥ ॥ कां० का० ध० रे० न० वा० य० टं० वे० सु० वी० ण० कि० स० हि० ता० य० स्वा० ॥ ॥ कां० ड० त्म० रु० रे० न० वा० य० नं०
वा० ना० हि० ण० कि० स० हि० ता० य० स्वा० ॥ ॥ कां० क० या० लि० स० रे० न० वा० य० यं० नू० द्रा० ली० ण० कि० स० हि० ता० यः
स्वा० ॥ ॥ कां० री० म० ह० रे० न० वा० य० यं० वा० मू० धु० ण० कि० स० हि० ता० य० स्वा० ॥ ॥ कां० गं० ह० न० रे० न०
वा० य० नं० म० ह० ल० अ० ण० कि० स० हि० ता० य० स्वा० ॥ ॥ नू० द्रा० दि० ॥ लू० नू० द्रा० य० स्वा० ॥ नू० अ० नः०

यस्वाह॥ मूंजमायस्वाह॥ दूंनेमयायस्वाह॥ वंववृक्षयस्वाह॥ यूंवायूवस्वाह
॥ सुंववनायस्वाह॥ दूं०॥ नायस्वाह॥ मूंमननायस्वाह॥ तुंववक्ष्म(तस्वाह॥
॥ ॥ ययागादि॥ कांययागमहाक्षययालायस्वाह॥ कांववृक्षक्षययालायस्वाह
॥ तुंकालायलमहाक्षययालायस्वाह॥ कांमृदुहसमहाक्षययालायस्वाह॥ कांज ४२
यनामहाक्षययालायस्वाह॥ कांववीरुमहाक्षययालायस्वाह॥ कांनकामकेमहा
क्षययालायस्वाह॥ कांदवीकाटक्षययालायस्वाह॥ ॥ हुरुकादि॥ कांहुरुकक्षययाला
यस्वाह॥ कांशिव्रानकक्षययालायस्वाह॥ कांमृनिवतानक्षययालायस्वाह॥ कांमृ

निजिदादगयालायखाहा॥ कांकासाददगयालायखाहा॥ कांकलासिनदगयालाय
खाहा॥ कांनकपाददगयालायखाहा॥ कांशिमनूयदगयालायखाहा॥ कांरुटकद
गयालायखाहा॥ कांगगददगयालायखाहा॥ ॥ वक्राब्धि॥ कांभुवक्रादीदेवोखा
हा॥ कांकमादुववीदेवोखाहा॥ कांचंकोमाविदेवोखाहा॥ कांटंवेभुवीदेवोखाहा॥ कां
गंवावाहीदेवोखाहा॥ कांयं० न्याहीदेवोखाहा॥ कांयंचामुमुदेवोखाहा॥ कांशंमहास
श्रीदेवोखाहा॥ ॥ वक्रा॥ वक्रा॥ वक्रा॥ वक्रा॥ यद्वासनसुगंदं॥ रंससुश्रवचाननी॥ यी
नंयीतंननुवीदं॥ कदीकुमुदपुसुर्क॥ ॥ यहीत॥ यहीतायखाहा॥ यद्वासुंगाश्रीमानू

[illegible]

कुमारंगगहननहिर्गद्वयंयागिनीचचामुल्लुचलुचूयाद्वितरुयहनंविद्युर्न
र्थग(हर्ष)।यथाश्राधूयदीयाविषममृमरिष्यच्चिताहृषिताभीचकसंयूयकंविद्यु
रुहुरुकिमुकियदागा॥॥कल॥॥कुंइंसं४मृयु३यायस्वाहा॥गुहृगानंनितवयः
मदयेनमंसर्वगणकष्वनंसानन्दस्वननायकस्यरुगवान्संयूयकामयदंवागी
ध्वननदद्ववायुवयदंवामादिगकष्वनंवाधिसाकविनाहृकृष्टरुयहनंमृयुंजय
गहिमा॥॥नितवगकि॥॥कुंइंसं४मृयुंजयायमृमृतीध्वनायमहालक्ष्मीगकिस
हितायकुंइंसं४स्वाहा॥मृमृगमृमृगयविश्वहिर्धंसनायच।यनायनस्वनूयायन

[illegible]

द्वाराय स्वाहा ॥ ॐ हूं नेमत्याय स्वाहा ॥ बक नरु सर्वो बूटं नालात्यलदलयरं । कः
याहियाहिसमाद्यं पितृर्न नादुसंयनं ॥ ॥ यन्त्रिम ॥ निवृत्तिना नमय स्वाहा ॥
कल्याणद्वाराय स्वाहा ॥ वेंव नृत्तय स्वाहा ॥ यादरुकात्मकंद वंजन नाडं महाव
ली ॥ (१) गवर्तु महाभंजं नाग नाडं नमामहे ॥ ॥ वायूवा ॥ ॐ हूं जांयुष्टिना नमय स्वा
हा ॥ ॐ हूं जांयुष्टिद्वाराय स्वाहा ॥ ॐ यंतायुव स्वाहा ॥ आशीर्वाक विहंग्मयं विलासक
उक्षविहं यादरुगुरुगानीं रुविहं नमामहे ॥ ॥ डरुन ॥ युतिष्टा ना नमय
स्वाहा ॥ आभागद्वाराय स्वाहा ॥ ॐ हूं कंठे वाय स्वाहा ॥ यदादिना शुभ सर्वसी सामव

जयकीर्तिगठगदायागुधनावायकोवाशयनमासुगे॥ ॥ॐ॥ न॥ ॐ॥ खां॥ सिद्धिः
 गानक्षयस्वाहा॥ ॐ॥ खां॥ सिद्धिदावायस्वाहा॥ ॐ॥ दूँ॥ ॐ॥ शानायस्वाहा॥ सर्वविधाः
 धियंदर्वमीशानामनामनामगठगुलयाहमहादेवगुलाकादीश्वरनमः॥ ॥
 मू॥ ॐ॥ खां॥ मू॥ धदावायस्वाहा॥ ॐ॥ खां॥ मू॥ धगानक्षयस्वाहा॥ ॐ॥ मू॥ नकायस्वाहा॥ ॥ ७२
 यन्नमधियतिदेवमूनकानामविभुर्गयागालवसगनित्येनानायननमासुगे
 ॥ ॥ उ॥ द्या॥ ॐ॥ खां॥ उ॥ द्वागानक्षयस्वाहा॥ ॐ॥ खां॥ उ॥ द्वादावायस्वाहा॥ ॐ॥ ॐ॥ वक्रा॥ ल
 स्वाहा॥ यद्यमानिचतुर्मुक्तिमूर्द्धिस्माननिवासिनासृष्टिकर्तात्मकानित्येनसो

चक्राक्ष (नमः) ॥ गण ॥ गंगयनयस्वाहा ॥ सर्वकार्यसूकर्तृवा सर्वविघ्नः
निवातलं विघ्नरुचंगल ॥ १ ॥ मुखानुरनमामाह ॥ ॥ गुन ॥ गुनमूर्तयस्वाहा
॥ कृष्णमावर्तुसन्दर्भमद्वयसूक्तकक्षत्रिल ॥ सर्वगसुहृन्तत्त्वह सर्वसा ॥ गुनसू
तं ॥ ॥ दृग् ॥ द्वांद्वगपालायस्वाहा ॥ नगसनसमानुरवायुवातदि ॥ लक्ष्मिर्गं स
र्वग्रहसमास्तु ॥ द्वांद्वगपालं नमामुभ ॥ ॥ यागिनी ॥ यांयागिनीय ॥ स्वाहा ॥ उलाः
क्यापिनीदेवी कलिकाया लक्ष्मिनी विघ्नमर्दकवीर्यदेवी ॥ यागिनीत्वीनमामाह
॥ ॥ यद्वज्रद्वली ॥ यद्वायस्वाहा ॥ यद्वन्यस्वाहा ॥ जद्वध्वनं जदनार्थं विघ्नानां क्षय

नायवयूर्यं सर्वो रुना सुवसं नक्षत्राणि वा ह्यया ॥ ॥ **शीलम्** ॥ **प्रिये स्वाहा** ॥ म
कनाङ्गस्त्रिगां देवी लाकरयसूयुजिता ॥ सिंदूरनात्यलया हिर्यां श्रीदर्वीयहमाम्नाः
हं ॥ ॥ **लम्** **स्वाहा** ॥ कूर्मयी भसनासीनां तुषात्रकूमूदाद्वनी ॥ यद्मदय्यहसंय
कां **लम्** **देवी नमामाहं** ॥ ॥ **भानिक** ॥ **युक्तिक** ॥ **कुंभानिक** **कलभयस्वाहा** ॥ **भानि** ७३
श्रीनक्तनीक्षं द्विगिनयिचरं थभानि वत्तोषधीष्य विभ्वं देवाभ्यभानि विधिचयित
वनावद्विन्दुष्यभानि ॥ वाहस्यस्यभानो न विहासिह विम्ववसाहं ससर्वे ४ सन्त्य
दूत्याचयसां स्वयुक्तविधिनाभानि युष्मसूदूत्या ॥ ॥ **कुंभयुक्तिक** **नभयस्वाहा** ॥ द

वामत्यङ्गयास्वाकृविविधिकमलायावर्तगस्कन्दमाहजिबुर्दत्रम्वना(थामनसिज
यवनामंगलाश्लोषधी४४कृगव४कृव्वेनुयुष्टिधनसूतवनितासंयुतासर्वदाहि
युष्ट्यादृष्ट्यावजहृगुनमूषविधिनायुष्टियुष्ट्याकृगनस्वाहा॥ ॥ गीलश्री ॥ श्रीमूर्ति
यस्वाहा॥ कोलश्रीमूर्ति यस्वाहा॥ यासायद्रासनस्त्रविपूत्रयदंतायद्रयणाय
ताद्रीगंरीनावर्तनाशिरुनरुत्रधमितापुत्रवस्त्रार्तिनीया। लश्रीदेवागजन्द्या
मृनिगद्यसहिताहमवर्तरेनित्यंसायद्राहस्यारुशुश्वसदासर्वमाङ्गल्ययुक्त
॥ ॥ श्रीमूर्ति ॥ हुंकां श्रीमूर्ति कलशायस्वाहा॥ श्रीध्वानस्त्रिताददहमवर्तसुयोव

ना। निघ्नः। नि क ना देवी। अमु मूक न मा मुने॥ ॥ वा मु॥ ॐ कौं कौं कौं वा स्त्रि
धिय गय वक्र (धस्वा हा॥ यी ग व लु म हा दा फं च रु वी दू सु (ध रु नं यू सु कं
वा दू सु ग ३३ वा मु व क्रा न मा मुने॥ ॥ ना ग द्य॥ ॐ ईं स ४ व नू ल य हा हा॥
श्रु न ना ना ग ना ज न्द म हा य द्म स्व ग द्म कं क लिकं ४ ४ ख या न ध्य वा मु की यः ७४
दू ना ग या॥ क कौ ट का द यो द वा म लि व त्ता नि धि धि य ४। ना (ग न्द य न म मु
र्यं या ता ला धि य ग य न म ४॥ ॥ म ल्य ३३ य॥ ॐ ईं स ४ म ल्य ३३ या य हा हा॥ ॐ
द्व ३३ नं लि व य ३३ द प न मं स च्च (ग ४ कं ४ व नं सा न न्द स्व न ना य क स्य रु ग

वान् ॥ संयुक्तं कामयदं वागीश्वरं नदयुक्तं वागुक्तं वा मादिह केन वा
धिषां कविनाम कुरुयुक्तं मयैजयताहि मा ॥ ॥ नृदिह ॥ कांसादिह य
स्वाहा ॥ मरुसायुं मरुगैर्जं मनिक्कुलमलुगं । कुर्यां किममीयात् । कवचं न
त्तविगुहं ॥ ॥ धदिह यारं ॥ कुंकोदं हं हं कां नमः ॥ ॥ इह नृत्तं नृत्तं कविना यनि
गता श्रीसिद्धिलक्ष्मीयना कयूत्रं मृदिकेन्द्रं कुरुधवगानि । एकयायायहा ॥ संमानात्
वदं ॥ श्वयक्तं कुरुविनिस्कयमममदा श्रीमत्यश्रुमया नृत्तं दहं नृत्तं यनं स्त्रियायायु
व ॥ ॥ ममयलिग ॥ कुंकोदं सः मृत्युश्रयाय स्वाहा ॥ पुद्गलं नृत्तं निवयुहं ॥ दयनं सर्वं

[illegible]

[illegible]

ये स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ सका ये स्वाहा ॥ ॥ सग्वहा ॥ ॐ दौं दूँ दौं दूँ दौं दूँ दौं नमः ॥ ॐ
 लाम्बुज कर्णिकाया विगता श्री सिद्धिल आ यना कर्ण वस्तु निकेन्द कलुध वनानि ॥
 मया यथा यदा संमानात्त वद ॥ स्वयं कर्ण वस्तु निके यम मसर्वदा श्री मत्यः ॥
 लाम्बुजादहा युजा युगा युगा युगा युगा ॥ ॥ वलियाट ५ वेसु वी ॥ ॐ दौं दूँ वेसु वी दः ॥
 ये स्वाहा ॥ वेसु वा विष्णु माया च देवदुर्ग नना सिनी रुचिरा मवर्ण मी नै ग जय
 विमं स्तिगा ॥ ॐ स्वचक्र गदा रुक्मा चतुर्बाहु विहसिता ॥ नल दाला मरु का ज नाना न
 त विहसिता ॥ रुचिरा पूषा शुभ गन्धः सदा रुचिरा विही ॥ स्वर्ग मत्य चया ल स्तिगि न

[illegible]

विष्णुकायविगतासीतिद्विलम्बायवा। कर्पूत्रसूटिकेन्दुकन्दधवलानि॥१॥प्रयासाय
हा संसात्रार्थवदुःखयंकदरुनीनिर्घयसंसर्चदागीमत्यश्चमखास्वजादुःख
जायतश्चितायापुत॥ ॥दमाइ॥आमानन्दहाकिरेत्रवानन्दवीनाधियनयमृ
गीयस्त्रिममूलस्त्रनरुदाविका ॥ येस्वाहा॥आमानकादिनरासनरनन ॥
मितामरुमातङ्गमामिविम्बाष्टावायून्नरायथूतनजघनामखनात्रत्त॥
वा॥इवस्त्रु॥आरुतनवनकसूमवर्चनकाहाराप्रसाभयीकृत्तिकाकाविनत्रुतनसा
ज्ञानदिद्योद्यमाद्यं॥ ॥गहा॥॥सोयीकूलग॥॥हवनायस्वाहा॥रुकासाखादुःखसमि

ॐ

[illegible]

वी. न. क. मा. सा. व. सा. वि. य. का. ला. य. श. म. का. द. न. व. ट. व. द. नि. वा. सि. नि. नी. या. मा. यी. ॥ ० ॥
गानि. त्यं. का. मा. नि. च. न. मा. मु. न. ॥ ॥ क. वा. ॥ स्तु. या. य. स्वा. रु. ॥ य. सू. य. नि. रु. दा. नि. का. य. स्व.
रु. ॥ श्री. ग. नृ. न. ना. य. ना. य. स्वा. रु. ॥ श्री. मा. न. स्व. नी. सु. द. व. ना. ये. स्वा. रु. ॥ श्री. स्व. सु. द. व. ना.
ये. स्वा. रु. ॥ श्री. व. नृ. ण. य. स्वा. रु. ॥ ००. सु. द. व. न. म. सु. र्यं. गु. नृ. द. व. न. मा. न. म. ॥ स्व. न. द. व. सु. ॥ ७८
॥ च. र्च. सां. यु. जा. गृ. द्रं. न. मा. मु. न. ॥ ॥ न. वा. त्मा. ॥ श्री. श्री. न. न. द. ण. कि. रे. न. वा. न. न. द. वी. ना. धि. य.
ग. य. श्री. ॥ न. वा. त्मा. गु. नृ. म. सु. ल. रु. दा. नि. का. ये. स्वा. रु. ॥ ॥ क. र्म. ॥ श्री. श्री. न. न. द. ण. कि. रे. न. वा.
न. द. श्री. वी. ना. धि. य. ग. य. ॥ ॥ श्री. श्री. नृ. र्यं. वि. श्री. ण. नि. क. र्म. रु. श्री. दा. नि. का. ये. स्वा. रु. ॥ ॥

मूल॥ नं० अङ्गां आनन्दं किं रेनवानन्दवावाधियतशम्भुं पीयन्निममूलस्व
नरुदात्रि मुं कायस्वाहा॥ ॥ उम्बलस्वना॥ नं० कोणीं मुं द्वां मुं पीजयः
उम्बलस्वना पूदवायेस्वाहा॥ ॥ गखा॥ झूं झूं झूं पीमि मुं मुं मुं स्वाच्छन्द
रेनवायस्वाहा॥ ॥ मरुकात॥ नं० अङ्कं मरुकातमरुकरेनवाय पू सर्वज्ञः
कृपमथनायस्वाहा॥ ॥ डयचलु॥ तुं कोनाजयदङ्कुं डयचलुविष्मदनाङ्कुं
कुं सदानन्दशर्त्तामीइं स० मरुं रुनस्वाहा॥ ॥ डयचलु॥ तुं कोनाजयदङ्कुं ड
यचलुविष्मदनाङ्कुं कुं सदानन्दशर्त्तामीइं स० मरुं रुनस्वाहा॥ ॥ मूल॥ नं०

ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं नमः ॥ ॥ कालि ॥ ॐ ह्रीं सिद्धि कला लिङ्गं ह्रीं क्रीं ह्रीं
नमः स्वाहा ॥ ॥ विष्णु ॥ नमो विष्णवे कदाचित् नमः स्वाहा ॥ ० नमो नाथात्मिके
महाविष्णवे नमः स्वाहा ॥ ॥ यन्त्रवक्त्रात्मिका स्वाहा ॥ ॥ सट् यागिनिर्गुण
धामा माय स्वाहा ॥ धामा माय स्वाहा ॥ धामा माय स्वाहा ॥ धामा माय स्वाहा ॥ न ॥
विष्णवे स्वाहा ॥ विष्णवे स्वाहा ॥ ॥ सट् यागिनी ॥ श्यांता कान्ये स्वाहा ॥ नमो नाकि
न्ये स्वाहा ॥ नमो लाकिन्ये स्वाहा ॥ नमो काकिन्ये स्वाहा ॥ नमो साकिन्ये स्वाहा
॥ नमो लकिन्ये स्वाहा ॥ ॥ सट् यागिनिर्गुण ॥ नमो कालिका ॥ लिङ्गं मायामात्मिका

तलजनिदुं नक कृष्ण मुखदवाकां मां मां यश्च नुहव ४ स्वाहा ॥ नंजनमारुवती
 दृष्टवामुल्लाली ४ कृष्ण नृधिनमां ४ रुदलीकपालद्वंगधनिहीरुन २ रुद २ वच २ य
 व २ दूँ ३ मू मूकं मा नय २ य म २ कां जां दूँ दूँ रुद स्वाहा ॥ नंजनमूधा नकां थया नकुं ३
 धा न २ न नकां जां सर्वग सर्व सर्वेश्वरं नमस्तु नूद नूय न्नां स्वाहा ॥ नंजकां ड कालि अ
 समदिया जां सवयूल वियवाध ॥ या जां दिलिया सिडलिलिया जां सर्वदेव दः
 लिखिया स्वाहा ॥ नंजकां गु अ कृडि क दूँ रुद जां नक मरु नक वामु लुश्व नीन स्वाहा
 ॥ नंजकां न्नां न्नां जां जां दूँ सवयिद वानमरु यरु नू लुय या गदिकं अनरुतं कालि रं कलिष

[illegible]

स्वाहा ॥ हूं श्रीं कौं ह्रीं मूला सिद्ध समय हूं रे न विद्या बल श्री त व न य द स्वाहा ॥ श्रीं ह्रीं कौं मूला
 ह्रीं वीरु ल श्री वीरु ट २ स्वाहा ॥ ॥ कौं श्रीं हूं हूं रुट स्वाहा ॥ हूं न मारु ग व ति सिद्धि लः
 श्री वीरु ट स्वाहा ॥ ॥ सिद्ध वीरु नं कौं श्रीं हूं कौं कौं हूं श्रीं श्रीं न न द रे न व सिद्ध वीरु
 य स्वाहा ॥ ॥ अथ का ला या ग न ॥ हूं विष्णु व स्वाहा ॥ न व ॥ नू हूं दाय ॥ हूं दाय स्वाहा ॥ य ५१
 जा य ग य स्वाहा ॥ व दाय स्वाहा ॥ व क्ष य स्वाहा ॥ च नु स स्वाहा ॥ स प य स्वाहा ॥ य न न
 य स्वाहा ॥ ग न्ध र्वा य स्वाहा ॥ हूं म न्वा य स्वाहा ॥ व न्न (ह) स्वाहा ॥ मा सा य स्वाहा ॥ स म्ब त्स ना य
 स्वाहा ॥ सा व य वा य स्वाहा ॥ द वानू ग य स्वाहा ॥ मू यून स स्वाहा ॥ द वी र्वा य स्वाहा ॥ ना ग य

स्वाहा॥ सागनायस्वाहा॥ यर्वनायस्वाहा॥ सास्त्रायस्वाहा॥ दिव्यदेवायस्वाहा॥ मानूषाय
स्वाहा॥ नागायस्वाहा॥ यन्नगायस्वाहा॥ ऋतवान्मानूषायस्वाहा॥ नदीसिस्वाहा॥ यदीसि
स्वाहा॥ सुवर्षायस्वाहा॥ विमलायस्वाहा॥ दृष्टिचक्षुस्वाहा॥ डामधयस्वाहा॥ यज्ञवस्वाहा
॥ वनस्यरायस्वाहा॥ हृगयमायस्वाहा॥ वरुचिधयस्वाहा॥ आयायस्वाहा॥ क्वायस्वाहा
॥ मामायस्वाहा॥ धृगयस्वाहा॥ भूनिनायस्वाहा॥ भून्नायस्वाहा॥ यत्पूमायस्वाहा॥ यरा
सायस्वाहा॥ वत्सयरायस्वाहा॥ भूहनिस्वाहा॥ वासनायस्वाहा॥ हृष्यायस्वाहा॥ नवदीया
यस्वाहा॥ रुवनायस्वाहा॥ नरसस्वाहा॥ मिश्रायस्वाहा॥ मूयकायस्वाहा॥ कामभगवत्स्वा

हा॥ निरुस स्वाहा॥ मिशाय स्वाहा॥ जन्मयुतय स्वाहा॥ सर्वेश्वर ४ स्वाहा॥ दशरथ ४ स्वाहा॥
 सर्वेश्वर ४ स्वाहा॥ ॐ सर्वेश्वर ४ स्वाहा॥ सर्वेश्वर ४ स्वाहा॥ ॥ ॐ नित्यकालायाननविधि॥ ॥
 दशायाननविधि॥ रे नवमध्या न स्वाहा॥ गकि मध्या न स्वाहा॥ कौ नमिता न रे न
 वाय स्वाहा॥ नं ग कौ व द्या स्वाहा॥ कौ नू नू रे न वाय स्वाहा॥ ॐ कौ मा रु व यो स्वाहा ५२
 ॥ कौ व लु रे न वाय स्वाहा॥ कौ को मा यो स्वाहा॥ कौ का ध रे न वाय स्वाहा॥ नं ग दू वे सु वी
 स्वाहा॥ कौ ड स रु रे न वाय स्वाहा॥ नं दू वा ना रे स्वाहा॥ कौ क या लि रे न वाय स्वाहा॥
 नं ग दू ॐ द्या स्वाहा॥ कौ रि स ह रे न वाय स्वाहा॥ नं कौ मे वा मू द्यु रे स्वाहा॥ कौ स द्या

वरुन वायु स्थाह ॥ कां मरुत ओ स्थाह ॥ ॐ ईं स४ ड मा मरुत वायु स्थाह ॥ कां स४ न
 माना वायु ए रात च ॥ कां कां ईं द४ द रा पा ला य स च विद्यु र न २ स्थाह ॥ कां कां जि
 वायु स्थाह ॥ कां विद्या द हा य स्थाह ॥ अक्क लि द ५ ॥ कां मरुत वायु कि स हि ता य स्था
 ह ॥ कां द रा पा ला य स्थाह ॥ ग४ ॐ ति ॥ गृं ग ए य न य स्थाह ॥ कां द रा पा ला य स्थाह ॥
 स य न म ग व र्ज ५ ॥ ग ए य ति वि श्या पि ७ ॥ ग ए य न य स्थाह ॥ कां स४ न माना वायु ए
 य स्थाह ॥ १० ॥ जि ये स्थाह ॥ ल ओ स्थाह ॥ कां ग नू त म स्थाह ॥ कां स न ह ये स्थाह ॥ कां ग
 नू त न स्थाह ॥ कां स दा जि वा य स्थाह ॥ कां कां स४ सूर्या य स्थाह ॥ कां द रा पा ला य स्थाह

॥ क॥ रुं रुं नम न स्वाहा ॥ रुं का न वृ न ॥ सका न वृ न ॥ य न्वि म ॥ दों दे र पा ला य स्वा रू
 ॥ रं ॥ जां नि वा य स्वा हा ॥ वां व द् का य स्वा हा ॥ गूं ग द य त य स्वा हा ॥ जां (गं) य स्वा हा ॥ रुं
 शं स ४ मृ मृ ती स रं न वा य स्वा हा ॥ या का त च्छ ॥ शं स ना ग य ति पि ॥ जां क नं क रं न वा
 य स्वा हा ॥ ॥ ध नं दू धू या ॥ ॥ जां नि (ह) न स दा नि वा य स्वा हा ॥ रीं जां व लु वा य य स्वा हा ॥ ५३
 ॥ रुं शं स ४ म रुं व वा य स्वा हा ॥ गूं ग द य त य स्वा हा ॥ कि स व न स ॥ जां नि वा य स्वा हा ॥
 क नि मा ॥ मू ल द व या ॥ गूं ग द य त य स्वा हा ॥ श्रू श्रू ॥ ॥ व क्रा ल्प दि ॥ लू मा ट ॥ व क्रा ल्पः
 दि ॥ का च्छ ॥ रुं रुं म रुं क न वा न म म ना  य स्वा हा ॥ रुं शं स ४ ना ग य स्वा हा

॥ वृषिं गाल ॥ कांक्षया नायस्वाहा ॥ रुद्राग ॥ ग्लुंगद्यतयस्वाहा ॥ गलज ॥ कांम
४ नायनायस्वाहा ॥ तव देवल ॥ कांरुनुमानायस्वाहा ॥ कां नागव्रमहा रुद्र
वायस्वाहा ॥ कांममं वस्वनायस्वाहा ॥ कांक्षया लायस्वाहा ॥ मूललंघ ॥ ग्लुं
गद्यतयस्वाहा ॥ विधू ॥ ॥ कांमूनकलिगयस्वाहा ॥ ॥ ग्लुं गद्यतयस्वाहा
॥ ॥ क्षावां नाय ॥ ॥ कांनवदुर्गायस्वाहा ॥ लगदा ॥ कांक्षया लायस्वाहा ॥ ॥
वैधू ॥ कांक्षया लायस्वाहा ॥ कथू ॥ वक्रादि ॥ ॥ कूपलाक्ष ॥ वक्रादि ॥ ग्लुं
द्यतयस्वाहा ॥ कथू ॥ मूसिनामादि ॥ ग्लुं गद्यतयस्वाहा ॥ दधू ॥ कांमिवायस्वाहा ॥

कूं नाटव नाय स्वाहा ॥ ॥ दोंदं रा नाय स्वाहा ॥ ॥ को च ॥ गूं ग हा य रा य स्वाहा
॥ ॥ ॥ तु य ना च या ॥ दोंदं रा नाय स्वाहा ॥ ॥ थ न लं व ॥ कूं क लं कं व नाय दोंदं रा
या ला य स्वाहा ॥ ॥ कं क हा ल सिका ॥ ॥ द्रूं रं रं व नाय स्वाहा ॥ ॥ कूं क लं कं व
नाय स्वाहा ॥ ॥ दों स ४ ना नाय हा य स्वाहा ॥ ॥ ॥ यू ला न द व न ॥ ॥ ज ग ना थ ॥ ॥ ग ५४
नू ॥ ॥ तु य न श ॥ ॥ वि या वि णी ॥ ॥ वं थू लि खे क ॥ ॥ ग हा स ॥ ॥ आ ग म ॥ ॥
न द्वा कू ति णं क न ना नाय हा ॥ ॥ य द्द व न ॥ ॥ वि वि क म ना नाय हा ॥ ॥ रु वि णं
क न ॥ ॥ वूं व नू हा य स्वाहा ॥ ॥ ॥ टं वं वू वी ४ ॥ ॥ आ का ग र व न ॥ ॥ वं जि ध न ॥ ॥ गूं हा

नाम॥ नादादवलयया॥ ॥ कलावाहलया॥ ॥ मधुन॥ कांयसुयनयस्वाहा॥ ॐ शुं
लीनामस्तुयमानवना॥ ॐ दवनायस्वाहा॥ कांमनरुनायस्वाहा॥ कांमनूना
नायस्वाहा॥ कांतिवमाधवरुदाविकायस्वाहा॥ कांकांकाकारववायस्वाहा
॥ कांममलववायस्वाहा॥ कांनानववायस्वाहा॥ कांरुनूमनस्वाहा॥ कांमनकलिम
यस्वाहा॥ ॥ कांनामकषुसुरदायस्वाहा॥ ॐ शुं ॥ कलत्रवर्चस्वाहा॥ ॥ वक्रा
लमदि॥ ॥ त्रिंकारुगवलेस्वाहा॥ कांच ॐ शुं ॥ रुद्रववायस्वाहा॥ कांसीवन्द्यय
स्वाहा॥ कांतागदमारुकायस्वाहा॥ कांजद्व ॐ शुं ॥ वायस्वाहा॥ कांवचुवादेयस्वाहा॥

कां विविक्क मना नायत्तय स्वाहा ॥ गहा ॥ जेज देव ना लाय स्वाहा ॥ आं देव ॥ जेज देव ॥
॥ ॐ ॥ कां देव ना लाय स्वाहा ॥ कां यदाय स्वाहा ॥ कां जे देव स्वाहा ॥ ॐ ॥ कां विदेव ॥
॥ कां लोका स्वाहा ॥ कां वनूय स्वाहा ॥ दुमाइया ॥ ॥ वामुल्लुम्ब ॥ ३ ॥ कां नू ॥
॥ दाय स्वाहा ॥ कां सुं सचिदेव स्वाहा ॥ मानं नीया ३ ॥ ॥ यिथूसकल ॥ विष्णुसूर्य ॥ ५ ॥
॥ भाग ॥ मध्या ॥ गुरु ॥ वं कुलिया ॥ दूधसकल ॥ ॥ वहिद्वर्ग गहा ॥ थवदगुरु ॥
॥ सियार्ग ॥ दूव नयाकाशि ॥ ज ॥ ॥ कलसयतिष्ठा ॥ मूर्त्ति ॥ वक्का लुमुख ॥ मूल ना
कपाले रुवायुगाय ॥ यही गुरु ॥ तं ॥ त्वमवयं रे नवमादिदर्व ॥ मूर्त्ति जया स्वाहा ॥ न

[illegible]

सहितद्वर्गं च यत्कृतं न ह्यहम् ॥ सर्वं यत्कृतं न ह्यहम् ॥ सर्वं यत्कृतं न ह्यहम् ॥
नमः श्यामि सिद्धि लब्धाय यदा ॥ ॥ ॐ नितिलाकृतियुद्धम् ॥ ॥ ० ॥ ॥ अथ यथाः
कर्म याय ॥ गता यजमाना चार्थे न ह्यहम् ॥ मंथय ॥ वाक् ॥ ॐ मया पूर्वः
सुसंस्मृता नन्दायाः यच्च दत्ता ॥ सुधीनाः सुखदाया नि मया मय विमर्शिता ॥ ७७
यजितं यत्कृतं निम्नायं रुद्रिगं च यत्कृतं च ॥ च ॥ ॐ नितिलाकृतियुद्धम् ॥ ॥ ० ॥ ॥ अथ यथाः
नित ॥ ॥ ॐ नितिलाकृतियुद्धम् ॥ ॥ ० ॥ ॥ अथ यथाः
रुद्रिगं च यत्कृतं च ॥ च ॥ ॐ नितिलाकृतियुद्धम् ॥ ॥ ० ॥ ॥ अथ यथाः

मयिगच्छतिगच्छति॥ ॐ ह्रीं श्रीं यद्वा रुद्रया ह्युपताम्नाय नमः॥ ननविमर्शने॥
मलुया॥ बहुवेदि॥ श्रीं शंकर॥ कीलक॥ अग्निविमर्शने॥ कममलुल॥ मूलकः
लसार्क॥ ननविमर्शने॥ ॥ धजाकाकाय॥ नेत्रयादिनिर्मोल्याय नमः॥ मलुयादि
कीलकादि॥ निर्मोल्याय नमः॥ ॥ न्यास॥ चं श्रीं शंकर॥ चं श्रीं गुहाय नमः॥ चं
मर्कन्याय नमः॥ चूं मधमाय नमः॥ चं श्रीं नामिकाय नमः॥ चं कनिष्ठाय नमः॥
चं कवगलपुष्पाय नमः॥ चं हृदयाय नमः॥ चं शिवसंस्कार॥ चूं लिखाय नमः॥
॥ चं कवचाय नमः॥ चं श्रीं गुहाय नमः॥ चं श्रीं शंकर॥ ॥ श्रीं यद्वाय नमः॥ ॥ न्यासपू

ॐ ॥ आसन ॥ यद्वासनययादुको ॥ शिवाभ्रलि ॥ ॐ कौं चों चों चों चों श्रीमहायागुय
तनिमाल्यचें ॐ ध्वनानमः ॥ ३ ॥ ॥ वलि ॥ ॥ यागुयतमूलनय ॐ जन ॥ ॐ कौं
ॐ यगुदू रूट्यागुयतासुयनमः ॥ धनं वलि ॥ ॥ आदूतिविय ॥ ॐ कौं ॐ यगुदू
रूट्यागुयतासुयस्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ कौं चों चों चों चों श्रीमहायागुयतनिमाल्यचें ॐ ध्वः ॥ ३ ॥
नायस्वाहा ॥ ३ ॥ युजिगं यरूनिमाल्यं रुद्धिगं ॐ चनूकं त्वया ॥ चो ॐ ध्वनमः ॥ न
यीयतां रगवननिवा ॥ त्वया ॥ ॥ आदूतिविय ॥ येतिस्म ॥ येतिस्मिनासिद्धवत्वं स्य
तिष्ठागुवनगुयी ॥ सानि ॥ ध्वं येतिगुक्तामियजमानादिवृद्धय ॥ सनामुद्विपदनित्यं स

ना नाशनाथेव च। यजमानसूक्तं गायं सूक्तं यजुर्वेदं ॥ नक्षत्रं सर्वकात्रसूक्तं ॥
हरि नवनभासुतं ॥ सुयतिष्ठावनदारवतु ॥ ॥ धूय ॥ दिव्यगन्धसमायुक्तं सर्वं द
वायि यावदं। आद्यार्षं सर्वदवां न धूयार्षं यतिगृह्यतां ॥ धूयाह नक्षत्रं गवानविश्वतू
यामरुष्वनी ॥ धूय नाननदवलि सुधीर्गायत्रमन्त्रनी ॥ ॥ दीय ॥ सूयका ॥ मन्त्रा न ज
सर्वरुतिमिनायदं ॥ सवास्त्राय न न आतिदीयार्षं यतिगृह्यतां ॥ आतिद्वेष्टादि ॥ ॥
नेवश ॥ गृह्यं मन्त्रं सदिवां ग्राह्यं सर्वसन्नितां। मयानि वदितं रुक्मा गृह्यं हयत्रमं
न्यत्रि ॥ नेवशं गृह्यतां दविरुकि मन्त्रं च न कूतू। गृह्यं मुहुर्न दवि यत्र च यत्रादिति ॥

रुलपूयताम्वलधूयदाय० दं नवयन्नमः॥ ॥ जाय॥ च्वा॥ स्वाहा॥ १०॥ स्फा॥ यूजि
तंयहूनिमाल्यं रुद्धिर्नववृत्तं त्वया॥ च॥ सु॥ ध्व॥ नमः॥ ॥ नै॥ या॥ यता॥ रग॥ वन॥ नि
व॥ ॥ ॥ नि॥ य॥ पृ॥ क॥ न॥ नि॥ य॥ य॥ ग॥ व॥ वि॥ व॥ न॥ ॥ वा॥ जा॥ वि॥ ज॥ य॥ मा॥ ध्वा॥ नि॥ स॥ च॥ सि॥ द्वि॥ रु॥ ल॥ य॥ दं
॥ ॥ स॥ म॥ या॥ दि॥ ॥ न॥ व॥ य॥ ॥ नि॥ म॥ ल्य॥ वि॥ स॥ र्ज॥ न॥ ॥ न॥ क॥ य॥ य॥ थ॥ स्म॥ न॥ स्म॥ य॥ य॥ न॥ ॥ न॥ ज॥ वृ॥ ल॥ म॥ लु॥ ॥ ५८
या॥ दि॥ स॥ म॥ य॥ य॥ न॥ ॥ ॥ क॥ ल॥ क॥ स्त्रा॥ न॥ ॥ थ॥ ना॥ म्वा॥ वा॥ य॥ ध॥ र॥ ग॥ व॥ लि॥ वि॥ य॥ ॥ ह॥ य॥ धी॥ ॥ मृ॥ या॥ दि॥ ॥
वा॥ क्म॥ ॥ य॥ थ॥ ॥ ज॥ थ॥ ॥ ग॥ ग॥ ॥ य॥ थ॥ ॥ ज॥ थ॥ ॥ ना॥ म॥ दा॥ स॥ य॥ म॥ न॥ वां॥ ह्वा॥ मि॥ द्वि॥ का॥ म॥ न॥ ॥ ४॥ यी॥ ३॥ स्व॥ वृ॥ द॥ व॥ ना॥ य॥
ति॥ का॥ म॥ न॥ या॥ या॥ मा॥ हा॥ नि॥ मि॥ र्ति॥ न॥ वा॥ यी॥ या॥ सा॥ द॥ सू॥ व॥ ल॥ क॥ ल॥ ग॥ ध्वा॥ वा॥ ल॥ रु॥ न॥ सि॥ द्वा॥ नि॥ मृ॥ य॥ ना॥ दू॥

यहूचकुधिकर्मनिशागवत्याच्चैककर्तुकूलमागर्तुमहारेनवायमूर्धनिम४यूष्यंन
म४॥ ॥ वक्ष्मर्कंवीजम।धृष्टं गम्यायत्रिलिवनामग।आदिम।धृष्टवसानदु।आग्निगुयवि
रूपिगं॥ वर्ममहादायिगंरुत्वा गयणीविधरूपिगं।नेककूटवन।प्रष्टमहामारुहुरेन
व४॥ ॥ गुनूनमस्मान्।नंदांयीधुंको४॥ मुखदुमलुलाकारंवाफंयनचलाचरी।तत्तदं
दालगंयनतस्मैगीगुनूनवनम४॥ गुनूर्वकागुनूर्विष्णुगुनूदवमरु४वनी।गुनूदवजगत्स
र्वतस्मैगीगुनूनवनम४॥ नंजयनमगुनूखानम४॥ नंयनमष्टीगुनूखानम४॥ नंजयनमा
वायुगुनूखानम४॥ वलिप्त॥ यद्भासनाययादुका॥ धवक॥ कूष्मासनाययादुका॥ या।ध्व

मूदतविनही॥ नंजखुं सकलमकृपमथनिमूननकलकिधाम्नमूकायदुटयादुकां॥ व
कमूदया मुखवक्षाने॥ नंजखुं दूंदुट्टवदयपूअनखाहा॥ दहाद्वानस्यहीने॥ खुंचल
मकूलकूलमचलकोदूंदुट्टखाहा॥ न्यास॥ खुं सकलमकृपमथनिमूननकलकिधाम्न
मूकायां नमः॥ खुं निचोहमा॥ नैदवीरुकिधकिधाम्नतऊनीयां नमः॥ खुं विषमायष्ट ५२
वयहामनिमूनादीवाधहाकिधाम्नमाधमायां नमः॥ खुं सकनद्विगानिष्टक्रहादननी
खगलुहाकिधाम्नमूनामिकायां नमः॥ खुं सचोयदाभाधितनहिमूत्रुफहाकिधाम्नकनि
षायां नमः॥ ॥ खुं नमः सर्वसिद्धिवागिनीयां॥ युर्ववकुनाथयादुकां॥ खुं नमः सर्वसिद्धि

माहस्यादद्विषवकुनाथयादूको॥खुंनभानिखादितानन्दनन्दितायेडरुनवकुना
थयादूको॥खुंसकलकूलचकुनायिकोयेयाज्यमवकुनाथयादूको॥खुंरुगवले च
लुकायालिन्यडद्ववकुनाथयादूको॥ॐतिवकुन्यास॥॥खुंयनमरुसिनि सर्वज्ञाः
शक्तिधाम्नदद्यायनम॥खुंनिर्वीनमाग्नेदेवीरुकिधाम्ननिवसस्वरु॥खुंविषमा
यद्रवयसामनिमूनादिवाधशक्तिधाम्ननिखायेवषट्॥खुंसकलदूविताविष्टत्रैलोक्य
त्रनिस्वगुरुशक्तिधाम्नकवचायदू॥खुंसर्वायदाम्नापिगवितिमूत्रूफशक्तिधाम्ननग
यायवाषट्॥खुंसकलगुरुयमथनिमूनकशक्तिधाम्नमूत्रूफायरुट्॥ॐतिमूत्रूगन्यास॥॥

जलयागयूजा॥ खुँडों जलयागसनाययादूकी॥ खुँडों पीमूँ ॥ खुँडों दूँ दूँ दूँ दूँ दूँ
म॥ जलयागरुदोनकाययादूकी॥ खुँददयाययादि॥ ॥ आवाहनादि॥ (धनू
मूजा॥ गायत्रि॥ खुँगीसिद्धिलक्ष्मि विद्महे नवव्याधिकधीम
यात॥ मूरिषिभूने॥ ॥ जलयागयूजा॥ ॥ अर्घयागयूजा॥ खुँडों पीमूँ अर्घयागसः १०
नाययादूकी॥ खुँडों पीमूँ ॥ आनन्दरुनवायवोषट् डों पीमूँ स॥ स॥ स॥ यनादः
वीमूँ मूर्गवमवमस्वा ॥ ॥ दया॥ (धनू॥ ॥ शीयांजलि॥ खुँडों दूँ दूँ दूँ दूँ दूँ
म॥ खुँददयाययादि॥ ॥ आवाहनादियानिमूजा॥ ॥ अर्घयागयूजा॥ ॥ कल्लयमू

दायाहरगुडि॥ नंदोयीं हूं हों हों हूं यों नं॥ आत्मयूजा॥ हूं आत्मन च न्ननं पादुका॥
हूं अक्षरं पादुका॥ हूं वीनरुसमपादुका॥ हूं सचजनमाहना पादुका॥ हूं हों हों हों हों
नमः॥ आत्मनयूयं पादुका॥ हूं सकलक्षयमथनिगुमायहृत्॥ अन्ननमरुहा आत्मसि
वसिप्रियम्॥ ३॥ ॥ आवाहन॥ हूं हों यों आसायनाय नदवी खगलखगत्रयिणी॥ सून
लाकगता सोमा आयातुं मलुल॥ हूं आवाहिद आवाहयामि॥ हूं ति आवाहन॥ ॥
हिदवयूजा॥ हूं ननामनाय पादुका॥ हूं मयूनामनाय पादुका॥ हूं मूषासनाय पादु
का॥ हूं धूमं यमनायदरुकी देवीमहार्धं देवगालाय पादुका॥ वलि॥ ॥ हूं गों गों

गुंग ४। गौं कूल ग। एव नाय पां दुर्का ॥ वलि ॥ ॥ वटुक ॥ खुं डौं पीं कू नयू वटुक नाथ
य पां दुर्का ॥ वलि ॥ ॥ आवाहन स्थाय चन्द्र नाक्षत्र पूषी नमः ॥ दलु रङ्गी नी गजम
डा ॥ ॥ खुं डौं पीं आवा नक्षत्र कय नमः ॥ खुं डौं पीं मून का सनाय नमः ॥ खुं डौं पीं ना ना
सनाय नमः ॥ खुं डौं पीं यश सनाय नमः ॥ खुं डौं पीं केश ना सनाय नमः ॥ खुं डौं पीं क ११
ल्लिका सनाय नमः ॥ खुं डौं पीं यद्वा सनाय नमः ॥ ॥ वृद्धयता सनाय नमः ॥ ॥
धन ॥ खं ज खुं मरुता गजाम यील श्री नमि काद्य यतयरा यश्रव कादश रजा वि यश्रन
यनेयूता ॥ ॥ एत वल्लु मरुता देवी मरुताय विस्तिता ॥ मारुताय क म (धनु) सिद्धि या नि

नियूजिता ॥ दानिता स्या ललितामा काला यष्टं करं जगत् ॥ उच्छ्वासाश्चासया गन च
लयत्कलय चेतान् ॥ काञ्चिद्विवास्त्वच्चित्पूर्यस्त्वचित्सेरुनने वलात् ॥ कञ्चित्पुञ्जस्त्वच्चि
त्प्राप्त्यस्तृता कायं वेत्तेन ॥ गाना सा रुनलेयुका उवा गनु विरुचिता ॥ यासां कृष्णधना
दवी वनदारुयवातिना ॥ सव्यरुक्तेर्दृष्टं स्वप्नं जला कदारुका नका ॥ वामखट्वाङ्गमस्य
गुं दद्वि ॥ एतन्मूलं मूलमं ॥ मूयनं कधनं गोदं दत्तं जाम च यूनितं ॥ सव्यरुक्ते सव्यं वं
मूलं ॥ गानिता सा द्वका ॥ वामे शुक्ललङ्का दिवा मरुतत्तयुदायका ॥ नयायत्यङ्गिना दवी ॥ त
नुना जाय ददा ग ॥ एका सा भकरुदन दिवा वायव्यवहृता ॥ यत्यङ्गिना मरुदवी सिद्धि

ॐ ३

ॐ ३

हिरण्यलूननरिन्दिश्चिन्दिश्वागनतायश्चुदयश्चावममसकलमनात्रर्थ
नसाधयश्चलमकालूलिकरुगवत्येमहारेनवचूयधविहीदिदधवचनमिगसक
लेमनुमागधयगतजलवसलदेवीमहाकालिका लनाधविद्रुंयहीदमदनाकुला क
लीकनूश्चुनासूचकनकाकाधीद्रुंरुद्रश्चारा॥ धर्मसंवलि॥ ॥ ग्निमालामरु॥ ॥
खुंददयस्यादि॥ वलि॥ ॥ आवाहनादिमूडा॥ ॥ नूदचलुदि॥ खुं नूदचलुदेवीया
दुकी॥ खुंयचलुदेवीयादुकी॥ खुंचलुयायादेवीयादुकी॥ खुंचलुनायेकादेवीयादुकी॥ खुं
चलुदेवीयादुकी॥ खुंचलुवत्येदेवीयादुकी॥ खुंचलुनूयादेवीयादुकी॥ खुंशुनिचलुकादे

[illegible]

य॥ स्वाकमहावलि॥ दौं दौं दौं दौं ४ दौं ग्यालायवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ श्रीं श्रीं कनकयूगवद्रक
नाथायवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ गं गौं गूं गं ४ गौं श्रीं कलगा (ल) यनायवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ दूं मः
हाकनवीलमः॥ नाधियगयवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ श्रीं श्रीं सिद्धि वाम् (गु) वनीवलिं गृह्ण २
स्वाहा॥ आकाशवावलिं सव (ग) स्वावलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ सर्वस्वा रतग्या सर्वस्वा पिर्ग
वस्वा सर्वस्वा नूदवग्यावलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ आवाह सायवदनादगयूषीनमः ॥
यानिमूडादस्य॥ ॥ धूय॥ दिवागधसमायूकं सर्वदवापिमानुदं। आद्यार्तं सर्वदवा
नां धूयायैयतिगृह्ण ॥ धूयाह नयूरगवान् विष्व नूयीमहस्वनी। धूयनाभनदवाजसू

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ दीप्यते ॥ सुखका ॥ मरुतं ज्ञेयं सर्वं गुणमिन्द्रियैर्न
 नानादिदीपायं यन्निगृह्यतां ॥ अग्निर्दग्धमिन्द्रियं ॥ नेवद्या ॥ मूर्धनं मरुतं संप्रदिष्टं मूर्धनं
 यमसर्वसंनिधौ ॥ मयानि वदितं रुक्मं गृह्यते यनमभवत् ॥ नेवद्यं गृह्यतां दवि रुक्मिः
 ममूर्धनं कनू ॥ मयमृत्पूज्यं दवि यनं यनं यनं ॥ रुक्मयुक्ता मूर्धनं धूपयता यः ॥ १४
 दं नेवद्यन्नमः ॥ ॥ जायते ॥ दां स्वाहा ॥ १० ॥ यौं स्वाहा ॥ १० ॥ हूं स्वाहा ॥ १० ॥ हुं स्वा
 हा ॥ १४ ॥ हुं स्वाहा ॥ हुं स्वाहा ॥ हुं स्वाहा ॥ हुं स्वाहा ॥ १४ ॥ ॥ स्वाहा ॥ मूर्धनं मरुतं का
 यार्कं यनं चलाचनं ॥ गत्यदं दग्धं यनं गत्येयं यनं यनं ॥ ॥ श्रीसंमर्कं मरुतं का

कमपदसहिता। नन्दः। किः। सुरिमा। सुष्टं। न्यायचतुर्लक्षं। अकूलकूलगतं। यंचकंचा
न्यसर्गं। चत्वा। प्रायः। स्वकां। नयूननयिचतुर्लक्षं॥ तर्हि। मा। मधुलदं। ससुष्टं। अनतस्मेन
मधुगुनवचनं। **रनवकीकूजः॥** ॥ मा। के। लु। या। वि। य। गुरु। वता। नृ। य। का। या। वता। नृ। च
कयस्ययचतुर्लक्षं। वक्र। वी। वक्र। कल्य। दे। द्या। च। दय। म। दि। त। सि। न। का। त। ग। द्य। य। रा
वा। सा। यं। द। वा। रु। व। गुरु। वता। शी। य। स। य। च। दि। का। या॥ ॥ उ। त्कृ। त्ता। म्बु। ज। क। लि। का। य। वि। ग
ता। शी। सि। द्वि। ल। श्री। य। ला। कं। त्यु। न। रु। टि। के। न्दु। कू। लु। न। ध। न। नि। य। के। या। वा। य। द। ॥ सं। सा। ना। त्तः
वदः॥ स्वयं। कू। ज। रु। वि। नि। रु। क। म। स। सर्व। दा। शी। म। ल्य। म्बु। ज। द। श। रु। जा। य। न। हि। ता। या। रु।

व०॥ ॥ मृगुगन्धदि॥ ॥ यमुयाग॥ खड्गयूजा॥ वृषसल॥ चतसिन्दुनखानख
ल॥ ॥ न्यास॥ कलिकाये मृगुयरुट्॥ कलिकाये ददयाय नमः॥ कलिकाये निव
सखाहा॥ कलिकाये निखाय वोमट्॥ कलिकाये कवचाय द्रुं॥ कलिकाये नरुगुया
य नमः॥ ॥ ल्यादिकवमृगुन्यास॥ ॥ जैजकालीवर्ज॥ श्वनीलारुदधुय नमः॥ ३ ॥ १३
॥ मृगुगनयूजा॥ ॥ खड्गाय खड्गनासाय॥ किकोल्याय गत्यनीयमुचुदखयानीय
खड्गनाथनमामुग॥ मृगुगन्धदि॥ वाक्॥ ॥ यमुयूजा॥ दन्दुनदुतगयाव॥ चायः
क॥ ॥ खुंसकल॥ कृपमथनि मृगुयरुट्॥ मृगुमलुहा॥ वलि॥ विधान॥ ३॥ रूगा

यविविधाकात्रा रुमिदीवान् नीदकाः यातालगतलवासिन्यासस्त्रिणाचलितवाह्या
॥ वलि ॥ ॥ मताविय ॥ सुयकाः ॥ मरुतजं सर्वगस्मिन्मित्रायदं । गवाश्चयननेया
तिदीवायंयतिगृह्णतां ॥ अतिदक्षामि ॥ वलिच्छाय ॥ ॥ लखनका ॥ उकारंयादि॥
चत ॥ पीरुचुचुर्नदीवर्गं ॥ दसमनादं ॥ आरुद्धिर्गललाता ॥ गचन्दनंयतिगृह्ण
तां ॥ चन्दनंलघिर्गयू ॥ अयविर्गयायनासर्न ॥ आयदाहवर्गानिर्गलञ्चिनायसुखयदं
॥ ॥ सिधन ॥ वीरवर्गमीमरुवाववीररुस्मविहृषिर्गुलाञ्चकयर्गदवीसिन्दुनात्रुह
मूरुर्ग ॥ ॥ खान ॥ नानायूषासुगन्धानिमाननिकूसुमादयः । सोरागसिद्धिर्दण्डयूषा

ब्रह्मनमस्कृतं ॥ ॥ धर्मदत्त ॥ ॥ साकश्रियाता ॥ चतुर्विधनस्वानवित्य ॥ ॥ ग्यास
॥ यशुयूजा ॥ द्वांश ॥ यतीत कलायेनमः ॥ मांश ॥ द्वांश ॥ निक कलायेनमः ॥ लूयु
स ॥ द्वांश ॥ विद्या कलायेनमः ॥ द्वांश ॥ युगिष्ठा कलायेनमः ॥ लिङ्ग ॥ द्वांश ॥ निवृत्ति कः
लायेनमः ॥ द्वांश ॥ लामविलामन ॥ ५ ॥ मूलवर्ग (गह) ॥ द्वांश ॥ यानां जाटाः १५
व. गायत्री ॥ ॐ यशुयासाय विद्महे विष्णवे नमः ॥ यक्षी महे नना जीवय चादया न
॥ मूर्धन्याय सधु द्वाव समयनक ॥ ॥ कर्ग्वल लंघ यजमानयता वित्य ॥ धर्मं ओ
दावतय ॥ ॥ ॐ नमः ॥ वाक् ॥

॥ श्री ३ स्वस्त्यस्तु दत्तवर्मा तिका मनया या सा हनिर्मित वा या या सा
दसूतवर्मा कलशध्वजावला रुन सिद्धान्तिभूयता दृष्टियह चतुर्थिकं मनिशगः
वलिनिमित्ताथ न च्चागवलिं उच्यते दद्यामि ॥ ॥ यस्तु गृह्णति दत्तवलिं याग्यया उ
च्यते चित्तं । भूयाधिस्वर्गसंयाकि सिद्धिलक्ष्म्ययचक्रम् ॥ मूला ललाटवस्याय ॥ यथा द
त्तवस्तु गंत्यथ ॥ ॥ हिरुय ॥ ॥ नित्यगुजागविधि समाकं ॥ ॥ मूथलित्रहामदृष्ट
या कवनं तं मंतस्य भूलागस कवनं जादावथा न ह सतय ॥ अवस्ववमदाचकं ॥
नयी ॥ २ ॥ लाहाननया ॥ अवस्वव ॥ स्ववस्यवा ॥ दधुलूगदगं ॥ चतुर्वा ॥ भूना ॥ कू

सुसनीयंगत्वा ॥ मांसकाट ४०० ॥ जिन मांस खान ॥ यश्च मृत ॥ मृतमनुष्टु मृति
स्नान ॥ लंखनकाय ॥ खुं सकल गुरु मथनि मृत्पाय रुट् ॥ तं गुरुं जो दू हं रुं दों
कों नमः ॥ निविद्धन ॥ खुं सकल गुरु मथनि मृत्पाय रुट् ॥ यादने ॥ खुं सकल न
विता निग ज्ञे द न निखन क व वाय दू ॥ मृतगुह न ॥ खुं सकल गुरु मथनि मृ
पाय रुट् ॥ ता गृही ॥ ॥ मृद्यया गुनकाय ॥ गंगा जल न वाल ॥ ला सं कल न सं वाल
॥ ची चक न रु व दी ॥ द्युग मृलि धन न वाल ॥ ॥ जिन द्वाय लय ॥ यन ॥ सिंधू न ॥ न
क व नदन ॥ यज मका ॥ दृष्टि ॥ कर्षण का ॥ मृदू वाल ॥ लूधन ॥ मृधू सयश्च वत्तन

॥ मनु ॥ निं गूं मूं नूं मूं नूं यादू कां ॥ आदू खान मान ॥ आदू मू दन ॥ खगा च्छु गा ३ आ
दू याट ॥ आदू याट नयय ॥ धनं च्छा यल य ॥ ॥ विधि थं यश्च क्षाला यूजा ॥ यूचं ममुन
॥ निं जखूं यादू कां ॥ दक्षिण वक ॥ निं जको खूं यादू कां ॥ यत्थिम दान ॥ निं जगी खूं यादू कां
॥ डरु न सुगन्ध ॥ निं ज झूं खूं यादू कां ॥ मध ॥ चिकामलि समय ॥ निं ज झूं खूं यादू कां ॥
रुडा निं ज को को दूं ॥ ६ को को दूं ४ वरुं ॥ गन यूजा ॥ मास निन यूजा ॥ चरु सै खा
न ॥ खूं सकल नयय मथ निमू माय रुट् ॥ लेखन हाय ॥ निं ज गूं को दूं ६ रूं को को
नम ॥ निना दक्ष ॥ खूं सकल नयय मथ निमू माय रुट् ॥ पादन ॥ खूं सकल न्द वि

तानि गङ्गा दन निखर नु कव चाय दूँ ॥ अत्र युल न ॥ खुं सकल न कय मथ निः
अमु यरुट ता ठ ह ॥ **धन मूडा अम ता क व न ॥ खुं द द या य ॥ व ठ ग यू जा ॥** ॥
माला मनु ह ज य ल य ॥ १० ॥ न वा द वि ह क्ष न ॥ अ वा रु ना दि ॥ **धन आ नि मू डा** १८
॥ ॥ य ज मान या य य क ॥ वा क् ॥ सरु ग्र न क लं या नि च्छा ग य पि ज त दू न ॥ शि का
लं मां स म क ठु सरु स दू न ग स्व या ॥ सिद्ध त मां स ह म न दो रु अ द वि स य र्ग ॥ य व
क्षो ना न ह म न सो लि त न्द ल सा मि रं ॥ यो म ता ठु लि सा द व ४ स्व च्छन्द या न नू य व
क ॥ च्छा ग मां स द ल द्य श्र पि ज रं व ज या नू ज ॥ क्षो वा व न रु व त् ॥ नि द धी यू छि य

आयत॥ यजमानन आचार्यो लवलाय॥ वाक्॥ आचार्यो ह्यगतिवर्मा ह्ययदाः
 हयामि॥ ॥ यश्चक्षुषा ज्ञाय॥ वाक्॥ मम लया चक्षुषा विद्वन्नाह रुलपदं ।
 न कक्षानुजाम्यायां वाधिनाह रुलपदं॥ दोनयन्विमक्षनाया आयुवद्विरुल
 पदं । उरुनसुगंधक्षनायां लक्ष्मि वद्विरुलपदं॥ म(क्ष)वीनया हक्षयायां मक्ष
 सयि सक्षनकं । यश्चक्षुषा य सिद्धानि य ह्यकर्म नि सिद्धिनि॥ ॥ मां सादृति वि
 य॥ अग्नि सदाय॥ शिदव॥ धूमं युक् न द्वापद मुक्ता दवी मरुक्षं दक्षयया ला
 य स्याह॥ यीं जो कूल यशवद् यी कनाथ स्याह॥ नैज गंगी गूंग ४ ग्ने कूल गः

(६५) वायु स्वरु ॥ यां यागिनी स्वरु ॥ ॥ जां मृषिगा मरे न वा स्वरु ॥ जां
नृनरे न वायु स्वरु ॥ जां वधुरे न वायु स्वरु ॥ जां का मरे न वायु स्वरु ॥ जां ड सं रु
न वायु स्वरु ॥ जां कयाली हरे न वायु स्वरु ॥ जां री स हरे न वायु स्वरु ॥ जां संह नरे
न वायु स्वरु ॥ ॥ जां मं वक्रा (६६) देवो स्वरु ॥ जां कं मा रु ६५ न देवो स्वरु ॥ जां वं को मा
त्रि देवो स्वरु ॥ जां टं वेष्नु वी देवो स्वरु ॥ जां रं वा ना ही देवो स्वरु ॥ जां यं ०० न्याय ही देवो
स्वरु ॥ जां यं वा मृ ६५ देवो स्वरु ॥ जां ६५ महा लक्ष्मी देवो स्वरु ॥ ॥ लूं ०० न्याय स्वरु ॥ मूं
मृ नय स्वरु ॥ मूं य मा य स्वरु ॥ दूं ने स त्या य स्वरु ॥ वूं व नृ ६५ य स्वरु ॥ यूं वा यू व य स्वरु

हा॥ सुं वृत्त वा य स्वाहा॥ दूँ श्रीं॥ ना य स्वाहा॥ मूं मून ना य स्वाहा॥ तुं वृत्त॥ ए स्वाहा॥॥
कां य या ग म हां दं ग या ला य स्वाहा॥ कां व नृ ए दं ग या ला य स्वाहा॥ तुं का ला यू ल म हां दं
ग या ला य स्वाहा॥ कां मू द हा स म हां दं ग या ला य स्वाहा॥ कां ज य नी म हां दं ग या ला य स्वा
हा॥ कां व नी र म हां दं ग या ला य स्वाहा॥ कां उ का म क म हां दं ग या ला य स्वाहा॥ कां द वी काः
ट म हां दं ग या ला य स्वाहा॥ ॥ हं रु का दि॥ कां हं रु क दं ग या वा य स्वाहा॥ कां रि पू ना न क क दं
ग या ला य स्वाहा॥ कां मू नि व ता न दं ग या ला य स्वाहा॥ कां मू नि जि क्ता दं ग या ला य स्वाहा॥ कां
का ला द दं ग या ला य स्वाहा॥ कां क ला ली स दं ग या ला य स्वाहा॥ कां उ क या द दं ग या ला य स्वाहा॥

कांरी मनुष्यदण्डया लाय स्वाहा ॥ कांरुट कदण्डया लाय स्वाहा ॥ कांगगल दण्डया ला
य स्वाहा ॥ ॥ वक्रान्यादि ॥ कांमू वक्राणी देवो स्वाहा ॥ कां कं माह्व नी देवो स्वाहा ॥ कां
चं को मानो देवो स्वाहा ॥ कां टं वे सु वी देवो स्वाहा ॥ कां रं वारु नी देवो स्वाहा ॥ कां यं ॐ न्या
लो स्वाहा ॥ कां यं चामु दवो स्वाहा ॥ कां रं मरु लक्ष्मी देवो स्वाहा ॥ ॥ वक्रा ॥ ॐ वक्र ८०
॥ स्वाहा ॥ ॥ यही न ॥ ॐ कां यही नाय स्वाहा ॥ ॥ वेदी ॥ ॐ खुं कां यी वक्र ॥ स्वाहा ॥ ॐ
खुं कां यी सिद्धि देव नाय स्वाहा ॥ ॐ खुं कां यी निवाय स्वाहा ॥ ॐ खुं कां यी मायाय स्वाहा ॥ ॥ कू
बुद्धावला कया ला ॥ ॐ ॐ न्याय स्वाहा ॥ नूं भू नय स्वाहा ॥ मूं यमाय स्वाहा ॥ दूं ने मयाय स्वा

ह॥ वूँ व नू नाय स्वाहा ॥ यूँ वाय व स्वाहा ॥ सूँ कू व नाय स्वाहा ॥ दूँ शी ल नाय स्वाहा ॥ मूँ
मून नाय स्वाहा ॥ लूँ व कू ल स्वाहा ॥ सिद्धाग्नि ॥ यूँ च ॥ लूँ दूँ म कि ना व नाय स्वाहा ॥ लूँ
दूँ मूँ मंगल दा नाय स्वाहा ॥ लूँ सूँ लूँ दूँ नाय स्वाहा ॥ ॥ अग्नि या ॥ लूँ दूँ त्रिद्वि ना व ल नाय स्वा
हा ॥ लूँ मूँ त्रिद्वि दा नाय स्वाहा ॥ लूँ यूँ मूँ ग नाय स्वाहा ॥ ॥ दक्षिण ॥ लूँ दूँ विद्या ना व ल नाय स्वा
हा ॥ लूँ दूँ मूँ लूँ दूँ दा नाय स्वाहा ॥ लूँ मूँ य माय स्वाहा ॥ ॥ नमः ॥ लूँ दूँ कीर्ति ना व ल नाय स्वा
हा ॥ लूँ दूँ कीर्ति दा नाय स्वाहा ॥ लूँ दूँ नमः स्वाहा ॥ ॥ यन्त्रि म ॥ लूँ दूँ निवृत्ति ना व
ल नाय स्वाहा ॥ लूँ कल्याण दा नाय स्वाहा ॥ लूँ दूँ वूँ व नू ल नाय स्वाहा ॥ ॥ वायू च ॥ लूँ दूँ यूँ च

नायस्वाहा॥ ॐ कौं पृथिव्या नायस्वाहा॥ ॐ यैवायवस्वाहा॥ ॥ उरु॥ ॐ कौं यतिर्व
गान्नायस्वाहा॥ ॐ कौं सुवनायस्वाहा॥ ॥ ॐ ॥ ॐ कौं सिद्धिगान्नायस्वाहा
॥ ॐ कौं सिद्धिगान्नायस्वाहा॥ ॐ कौं दू० ॥ ॐ ॥ ॐ कौं मृद्व्या॥ ॐ कौं मृद्व्यानाः
यस्वाहा॥ ॐ कौं मृद्व्यागान्नायस्वाहा॥ ॐ कौं मृद्व्यानायस्वाहा॥ ॥ उद्व॥ ॐ कौं उद्व्यागान्नाय
स्वाहा॥ ॐ कौं उद्व्यागान्नायस्वाहा॥ ॐ कौं वद्व्यागान्नायस्वाहा॥ ॥ गद्व्या॥ ॐ कौं गद्व्यागान्नायस्वा
हा॥ ॥ गुद्व्या॥ ॐ कौं गुद्व्यागान्नायस्वाहा॥ ॥ दद्व्या॥ ॐ कौं दद्व्यागान्नायस्वाहा॥ ॥ आगिना॥ ॐ कौं आगिनाः
गिनीत्यस्वाहा॥ ॥ यद्व्या॥ ॐ कौं यद्व्यागान्नायस्वाहा॥ ॐ कौं यद्व्यागान्नायस्वाहा॥ ॥ ॐ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ लक्ष्मीस्वरा ॥ ॥ अम् ॥ ॐ कौं अम् कलसाय स्वाहा ॥ ॥ वायु ॥ ॐ
कां कां कुं वाह्विषियतयवन्म (ह) स्वाहा ॥ ॥ मानिक ॥ ॐ कौं मानिकलसाय स्वाहा ॥ ॥
यूक्तिक ॥ ॐ कौं यूक्तिकलसाय स्वाहा ॥ ॥ नागध ॥ ॐ ईं सः वनूतय स्वाहा ॥ ॥ मृत्युं ॥
य ॥ ॐ ईं सः मृत्युं जयाय स्वाहा ॥ ॥ आदित्य ॥ कौं आदित्याय स्वाहा ॥ ॥ थलुल ॥ ॐ कौं
हं हं कौं नमः ॥ ॥ ममयलिंग ॥ ॐ ईं सः मृत्युं जयाय स्वाहा ॥ ॥ श्वयानाय ॥ ॐ ईं
सः वनूतय स्वाहा ॥ ॥ कलस ॥ ॐ ईं सः मृत्युं कलसमृत्युय स्वाहा ॥ ॥ कम् ॥ ॐ कौं
हं हं कौं नमः स्वाहा ॥ ॥ यंचव ॥ ॐ ईं सः मृत्युं कलसमृत्युय स्वाहा ॥ ॥ वदक ॥ ॐ कौं कलसमृत्युय स्वाहा ॥

रु॥ ॥ दे॥ ॥ थुं॥ पु॥ नदी॥ य॥ द॥ मु॥ की॥ द॥ वी॥ म॥ रु॥ धी॥ द॥ दे॥ गु॥ या॥ ला॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ या॥ गि॥ नी॥ ॥
 यां॥ या॥ गि॥ नी॥ ख॥ ॥ ४॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ वाम॥ ॥ ध्रुं॥ गी॥ सि॥ द्वि॥ चाम॥ ध्रुं॥ ये॥ खा॥ रु॥ ॥ ग॥ हा॥ ॥ गं॥ गीं॥ गुं॥
 ग॥ ४॥ गं॥ कूल॥ ग॥ ॥ ६॥ व॥ ना॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ हि॥ दे॥ ॥ व॥ ॥ दे॥ ॥ दां॥ दे॥ गु॥ या॥ ला॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ व॥ दू॥ क॥
 ॥ यां॥ दां॥ कूल॥ य॥ गु॥ व॥ दू॥ क॥ ना॥ थ॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ ग॥ हा॥ ॥ गं॥ गीं॥ गुं॥ ग॥ ४॥ गं॥ कूल॥ ग॥ ॥ ६॥ व॥ ना॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ ॥ ॥ या॥ गि॥ नी॥ ॥ यां॥ या॥ गि॥ नी॥ ख॥ ॥ ४॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ व॥ दा॥ ॥ पू॥ र्वी॥ ॥ लुं॥ व॥ द्वा॥ ॥ ६॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ द॥ दि॥ हा॥ ॥ लुं॥ सि॥
 द्व॥ व॥ ना॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ या॥ त्व॥ म॥ ॥ लुं॥ जि॥ वा॥ द॥ वी॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ ड॥ रुं॥ त्र॥ ॥ लुं॥ मा॥ या॥ द॥ वी॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ की॥
 ल॥ का॥ ष्ट॥ क॥ ॥ लुं॥ न्द॥ या॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ नू॥ ग्न॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ मू॥ ज॥ मा॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ दू॥ ने॥ म॥ या॥ य॥ खा॥ रु॥ ॥ ॥ वू॥ व॥ नू॥

॥ यस्मात् ॥ यं वायुं वस्त्राह ॥ सर्वं वनायस्माह ॥ दूँ ॥ नानायास्माह ॥ ॥ नन्दादि ॥ आ
मय ॥ नृन् नन्दायेस्माह ॥ ॥ नेमय ॥ नृन् रुदायेस्माह ॥ ॥ वायव्य ॥ नृन् जयायेस्माह ॥
॥ ॥ नृन् नाना ॥ नृन् अकायेस्माह ॥ ॥ म(वा) ॥ नृन् युष्मयेस्माह ॥ ॥ म(ग) ॥ नृन् दौ दूँ हों
रुँ दों कों नमः ॥ ॥ वलि वेसुवी ॥ नृन् दौ दूँ वेसुवी दयस्माह ॥ ॥ द्वापिस्वा ॥ म
वस्या रुगय ॥ सर्वस्यापि ॥ वय ॥ ॥ वचुसा दवी ॥ नृन् ज दूँ दूँ ॥ नृन् दौ दूँ
हों रुँ दों कों नमः ॥ ॥ गवाल लं म ॥ नृन् दौ दूँ हों रुँ दों कों नमः ॥ ॥ ॥ दमाश लं म ॥ नृन् ज
॥ नन्दराकिरे ववानन्दवी वाधियत ॥ ॥

श्रीयत्त्रिममूलस्त्वनरुदाविकायस्वाहा॥ ॥ गहा॥ गं गी गूं ग४ गूं पी कूल ग (ह) व नाय
 स्वाहा॥ ॥ ग्वयाम॥ कुं यश्च ग्वमाग स्वाहा॥ ॥ कोमाना॥ नं ज वं चूं जं मं जं कूं वां को नी
 विञ्च स्वाहा॥ ॥ कवा॥ श्रीसूर्याय स्वाहा॥ श्रीयशुयगिरुदानकाय स्वाहा॥ वूं श्रीगनूठ
 नानायस्वाहा॥ श्रीमानज्यनीसूदवताय स्वाहा॥ स्वसूदवताय स्वाहा॥ ३॥ श्रीवे ८३
 नूनाय स्वाहा॥ ॥ नवात्मा॥ श्रूं आनन्दः किरो जवानन्दविनाधियनयश्रूं नवात्मागु
 नमस्तुलरुदानकाय स्वाहा॥ ॥ कर्म॥ श्रूं आनन्दः किरो जवानन्दविना
 धियनयश्रूं कर्मरुदाविकाश्रूं स्वाहा॥ ॥ मूल॥ नं जं जं जं जं जं

[illegible]

[illegible]

कौं दूँ दूँ रुट् खाह ॥ ॥ नें ज मूचा न को थ धा न क्रुं धा न २ त न को को स च्वे त स च्वे स च्वे
क्रुं न म सु नू दे नू य को खाह ॥ ॥ नें ज को उ को लि य स म दि या को स व य ल वि य वा ध
रु या को दि लि या मि उ लि खि या को स च्वे दू व द लि खि या खाह ॥ ॥ नें ज दूँ गुं अ कृ डि क
दूँ रुट् को न क म रु न क वा मू लु ध व नी नें खाह ॥ ॥ नें ज क्रुं दूँ को को दूँ स च्वे य द वा त म
क य नें वू लु य पा ग दि क य न क रं का लि रं क लि यो ति ता ॥ ॥ नें ज न २ द द क वा लिः
को को दूँ को दूँ म खाह ॥ ॥ व ग ल मू खि ॥ नें ज दूँ को व ग ल मू खि स च्वे दू व नी मू खं वा च म
य जि को को ल य २ वू द्वि ना य दूँ खाह ॥ ॥ लि ग कि ॥ ॥ को को दूँ नें व द वे ला व नी य दूँ २ रु

[illegible]

३॥ ॥ कालि ॥ ॐ ह्रीं सिद्धि क नालि कौ चै द्रौ ह्रीं नमः ॥ ॥ विपु न सुन्दरीया ॥
व्रौ विष्णु चक्रा उ यानमहायी ॥ ० चया सनाथ सिक्की मरु विपु न सुन्दरी दवी
३ यनं वक्रात्मिका किरी स्वाहा ॥ ॥ यं च वक्रया ॥ नं गं ॐ मरु चतुर्गज सं कर्षलिः
कं कृ लिमन्मान रु स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं ॐ कौ ह्रीं मरु सिद्धि स मय ह्रीं न विद्या न लक्षा
व नृ वयं रु स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं मरु सुष्टि चतुर्लक्षी ध्वनी रुट् स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ट्ट रु स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं नमो रगवति सिद्धि लक्ष्मी ध्वनी रुट् स्वाहा ॥ ॥ सिद्धि ध्वनी नं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ नन्द रे व व सिद्धि ध्वनी य स्वाहा ॥ ॥ दश याग नाय स्वाहा ॥ कालाया

तनायस्वारा॥ वहिद्वानांगलस्य ४ स्वाहा॥ धवदयुलिया मालकाविय॥ ॥ दूमाइ॥
॥ वंकूल॥ ३॥ मानध्वनी॥ ५॥ पिथू॥ १॥ दधुतनइ॥ २०॥ आचार्यमनुसिद्धिप्रमुखा
हा॥ धानदवीसा॥ १॥ मालामनुएवा मूलस्य संख्या दूति॥ १०८॥ ॥ लाजवया॥ नृंजखु
यं नमरुं सिनी सव्वेसगा॥ किं धाम्नदुदयाय नमः॥ जवया लाजवसंदय॥ ॥ जवया
०॥ नृंजखुं निर्वोहमाग्नरुकि॥ किं धाम्नजसंस्वारा॥ जवया ० जवसंदय॥ ॥ लाखवया
॥ नृंजखुं विषमाय द्रवपुं मनिमना दिवाध॥ किं धाम्नखाये वषट्॥ खवया ला
खवसंदय॥ ॥ खवया ०॥ नृंजखुं सकलद्विगाविष्टकृणदलनी खगनु॥ किं धाम्नः

कवचायद् ॥ खवया ॥ खवसंदय ॥ ॥ सां ॥ नेंजरुं सच्चिदाभाधितनलिमूलक
किष्कामनगुयायवोषट् ॥ सां ॥ खवसंदय ॥ ॥ सै ॥ नेंजरुं सकलक्षयमथनीमू
नकः ॥ किष्कामनमूयायवोषट् ॥ सै ॥ खवसंदय ॥ ॥ आरुनलजगताधनवादनल
दाय ॥ लंग्वरुदधुस नवादनलदाय ॥ निजजयनयमकु ॥ आरुमकुन ॥ १० ॥ नवादनल ॥
१०८ ॥ मालामकुनरुका ॥ धवमानवानजयनय ॥ मूखाययादाव ॥ अलिवलिद्युगसाहियनमूस
दाय ॥ मासाद्रजियुत् ॥ क्वासकपूरक्षयायां वृषुवृशतय ॥ दृगगयक्वास ॥ यूर्वावाक् ॥ जेंगदिग्वाव
वसंस्कंगवदकसरुसुलमलुलवादनय ॥ ॥ भयय ॥ १० ॥ सगलगतयुग ॥ मलुलं सिद्धचक्र ॥

आशंयुक्तं च पूर्वमलि वलि सहिर्गं यश्च यानादियुक्तं संतुष्टं स चैव दवा कलनम्
 खयुर्गं वा तु मां सिद्धि लब्धम् ॥ ॥ युनादास दयकं ॥ सलाघनं मा मनसं ॥ ॥ गं व
 साहनं ॥ जी व ॥ मन व ॥ लवाढ ॥ मूक्त क नू व ॥ जि व र्हा व ॥ धर्त युनादास या य वि
 धि ॥ ॥ धनास्वग्वलं हि समून ॥ ला वलि स च्छका ट ग य ॥ धना समूहा व त या व लि ॥
 धनू य ॥ चरु मा ध श्रुति सं दू य ॥ वज्रि युनादास मूल मनु द स फ धा दू न त ॥ सम य युना
 दास यश्च धनादाया कं धन विय गं का मु ॥ आचार्य न युनादास सम य आ द व ॥ त य
 व ॥ चिंतय ट टा दि ॥ युनादास सम य च य न धि य ॥ ॥ नृति मां सा दू ति ४ ॥ ॥

यजमानयतिष्ठ॥ न वाक् न मनु न आकूति॥ ५४॥ उत्कृत्वा ॥ चतुर्वानवाय॥ प्रवान
न वाक् न मनु ५४॥ दिग्दानं चैव संखं गणवद्वक् स कृत्स्नं लुप्तं मधुलं वाक् कृत्वा ॥ ५५ ॥ य
॥ ० ॥ स गणायुगं मधुलं सिद्धवक् ॥ आर्षं यूकं वयूकं मलिवलि सहितं यश्च यानादि यू
कं ॥ स उष्ट्रा सर्वदवाकल न मुखयुगं यातुमां सिद्धिलक्ष्मी ॥ तायहान प्रवानवाय ॥ ॥
॥ शक्तिकाकूति ॥ न वाक् न मनु ॥ १०८ ॥ कामयागस वाक् समिधे वा दाय ॥ जे ५ ॥ शक्ति शोचन
निर्द्वन्द्विति नयि च तथा ॥ शक्ति न तोषधीश्च ॥ विषेय वा शक्ति विधिनयि च वनावक्रिन्
दध ॥ शक्ति ॥ वा ॥ श्रयश्च सा की न विगलिह निस्तं वसा हं सगर्व ॥ शक्त्या कृत्या यथार्थां स्वयु

१
नूक विधिना ॥ नूक सुकृत्या स्वाहा ॥ ॥ पूष्टिका कृत्या ॥ नवा कृती न १०८ ॥ कामया उमवा
कसनिधत्वा ॥ दाय ॥ ॐ न द वामुय ३३ या स्वाहा निविधि कमला पावती स्कन्धमा रुजिष्क
रुजम्वना ॥ ॥ मनसि जयवना संगलाष्टोषधी ॥ न वः कृवदुयष्टिं धनसूत वनितासं
शता सर्वदा हि पूष्टिका कृत्या वयं नू नू सुखविधिना पूष्टि पूष्टिका कृत्या स्वाहा ॥ ॥ आवाः ६८
यष्टिजा ॥ ॥ यायश्चिठ कामवत्वा ॥ ॐ कालं स आजाता यपश्चि स वका यया यश्चि लाय स्वा
हा ॥ ॐ कालं व वाम द वाय उरु न वका यया यश्चि लाय स्वाहा ॥ ॐ कालं न अद्या नाय द कि लाव
काय याश्चि लाय स्वाहा ॥ ॐ कालं यं न त्प नू मा य पू व वका यया यश्चि लाय स्वाहा ॥ ॐ कालं क

ॐ गानाय दुर्धवकाय याश्चिठियस्वाहा ॥ ॐ तिषाश्चिठिहाम ॥ ॥ काममूलया ॥ अमि
दाय ॥ सनेयसचिराय २ सनेससतय ॥ ॥ यव ॥ धन्या ॥ लाजा ॥ समिध ॥ गुडादन ॥
किम्बादि ॥ जयलथमकु ॥ नवाकनीन २ ॥ मालामकुन २ ॥ आहामकुन २ ॥ धनन
जयलथ ॥ जाम्विल १ ॥ का १ ॥ किम्बा ॥ का १ ॥ सादवग्वय १ ॥ का १ ॥ विल्व १ लंका १ ॥ नालिक
लसादव १ का १ ॥ द (ध्वादन ॥ वदलिरुल ॥ चियंगु ॥ सुमुख ॥ गगय ॥ धनतिल ॥
दधुतिल ॥ सधय ॥ विकडु ॥ विरुला ॥ वृषकसल ॥ पद्मकगन ॥ चन्दनगुनि १०८ ॥ गु
गुनिगुनि १० ॥ सर्वधधि ॥ अगुन ॥ धीरुगु ॥ कथूत्र ॥ कमुनि ॥ कन्द ॥ मूल ॥ रुल ॥ यका

न॥ॐ॥ ॥ पूर्वोक्ततययसा अष्टाह नगर्गं शक्यात् ॥ बाह्यलखान १०८ ॥ अन्नसंकल्प
 ॥ दृष्टदीपवृत्तीका अग्निसंवाय ॥ गायत्री नञयनय ३ य ११० ॥ नयसनेसमतय ॥ थ
 वश्वशाचकं दूय नवाकनी नदाय ॥ जं गान्किशो नननि न्नि निति नयि वगथा गान्कि
 नलो मधीनां विष्वक्वाथ गान्कि विधि नयि पवना वद्वि नूयथ गान्कि १ वा १ स्यात्थयथ ग
 की न विगानि रुनिस्त्वं वशा रुं सगर्वं गान्क्या कृत्वा त्या वथर्षां स्वयु नूक विधिना गान्कि य ६८
 भू सूर्यास्वाहा ॥ ॥ मूलं मनु ६ ॥ नवाकनी १ दृष्टा कृति ॥ १० ॥ ॐ द्यादि न १० ॥ ॥ याद नि
 क्षाम ॥ ॐ रुं १ स्वाहा ॥ ॐ उ व १ स्वाहा ॥ ॐ स्व १ स्वाहा ॥ ॐ रु उ व १ स्व १ स्वाहा ॥ ॥ आ वा यं यं आ

[illegible]

१ स्वाहा ॥ मध्या ॥ वैंजकां नासिह्य १ स्वाहा ॥ उर्ध्व ॥ वैंजकां विध्वस्य १ स्वाहा ॥ अर्ध ॥ ॐ ति अ न्न व
 लि ॥ ॥ अथ वहिर्बलि ॥ द्यादि न वि य ॥ वैंजकां ॥ द्या य स्वाहा ॥ वैंजकां अग्नय स्वाहा ॥ वैंज
 कां यमाय स्वाहा ॥ वैंजकां नोमयाय स्वाहा ॥ वैंजकां वनूषाय स्वाहा ॥ वैंजकां पवनाय स्वाहा ॥
 वैंजकां कवनाय स्वाहा ॥ वैंजकां ॥ गी ॥ नाय स्वाहा ॥ वैंजकां वक्त्रे स्वाहा ॥ वैंजकां विष्णवे
 स्वाहा ॥ वैंजकां क्षणाय स्वाहा ॥ दानस वि य ॥ वैंजकां डायानपीठाय स्वाहा ॥ पूर्व ॥ वैं
 जकां जार्यधनपीठाय स्वाहा ॥ दक्षिणे ॥ वैंजकां धूर्ध्वगिनिपीठाय स्वाहा ॥ अग्निम ॥ वैंज
 कां कामधूयपीठाय स्वाहा ॥ उद्व ॥ ॥ वदियावलि ४ ॥ लाकपाल अग्नि कृष्टु दूव १०

॥ धर्मयावतिं ॥ घृणयघद्वयवलिह ननं ॥ ॥ दक्षिणादानं वाचनं तथ ॥ कथावलिः वि
सर्जनं ॥ घनिवालपूजाश्चाय ॥ संघट्टाशनं ॥ यविगुभावनं ॥ ॥ अथष्टौ क्रिया
नयत ॥ नवाकानिन आकृति ॥ १०८ ॥ प्रवासद्यनद्याल्लर्थं न स्वानमालप्रवासर्थं
कहायेकं तयकंतयाव अद्रवालतय ॥ ॥ यजमानधवकशानकंतय ॥ प्रकुप्र
वाओकाव नाकिबूलिन दिवकंतयाव ॥ वाद्य ॥ धीसंवहो ॥ उरुज्ञा ॥ सहआनाकेति
॥ गऊकालदा ॥ ऐं ज्ञां म्मी ॥ मालामकुलस्वाहो वोषट् थाय ॥ यक्षमा ॥ आवमनं च
दन नाम्बूलपदानं ॥ ॥ प्रवाधवकश्रद्धामूर्खकवा ॥ ॥ नित्यं ॥ ॥ आसंसा

(॥ कं प ० ॥ मं ल द य क स न न य ॥ अथ ग्रीष्मि सिद्धा नि य ह या आ स सं सा ॥ कं
 प ० ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ग्रीष्मि सिद्धा नमः कुरु न वा य ॥ ॥ कुरु या य ॥ ॐ कं ग्रीष्मि ॥ ॥
 कल गं या ॥ व द्मा दि मू खे स न ला क पा ले ह र्य वि ता यं प्र ण त मु त थ ॥ ख म व र्ज रु न वः
 मा दि द वं मृ ह्य अ या र्जं ग न र्जं प्र य र्जं ॥ ॥ ॐ द्या दि ला क पा ल या ॥ ॐ द्या या ला क पा ल
 ला ॥ स्व स्व दि ग व गि ता ॥ स्व स्व मू द्रा स्व यू का आ दि या दि य द्वा ग व स ति रु वि स द्वा ज न म द
 व स्व नृ या ॥ म द्वा या ग मृ गी था ग ल गु न व द्का कृ णि ल मा रु क वा सि द्धि ॥ अथा द द
 उरु व उ मृ म ती य हृ पू ष्मि उरु ॥ ॥ अथ य हृ मृ सं कृ दि नि वि दि नि नि वा सं कृ

तादवताया. कृष्णवावक्रिम. (ध) कलसपनिगतामधुलथलित्वा. नसर्वसुदवा
श्रुमिगलुलदामकसंतामनूया. मूढामकविहीनायजनपनिविधिः दीपदामा
ः कसम् ॥ ॥ न्यसंभकृष्णम. मनलयववयावक्रि कृष्णमूधाय. गराधानादिपू
र्वददययलुनयः ॥ किं स्यागकम् ॥ आजायुकाववयदिगयनिसगलेरुनव
नाष्टकं. आगिन्यष्टसकं. वदकगतिशून्याउमांजातवदः ॥ ॥ वक्रविष्णुश्च
॥ काकलतिथमकना नदः ॥ पाणीसमीनः ॥ श्रीनकास्यानकदूर्गाग्रगलसहितं स
यूतं सर्वनागाह नम्वा सिद्ध्यादूनिगुरुयह नाधनु ह्यो मिदवा. आगिन्यः सर्वदवा

प्रयागपहासं सानाधु वदुःखं कदरुनी निष्कम्य न सर्वदा श्रीमत्यश्च मूखान्
 जादुःखं रुजाय न स्विता पातु न ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ तज्जाख्यं दानि विभवं रुवकल म
 रुनं पावनं रुव वः स्वः स्ववीय विभवाय मूनिजन नमि तं रुखनं ॥ किं रुकं । जनाश्च
 ह्यनं नात्मा कः । मयि क नं मूखं स्रुत्वा निरुत्तं वयं वधुश्च कडुं द्विज निखिल गुण्य
 विक्रं रुवकं ॥ ॥ अस्मत् सकाथं सनु सकल थ श्रुत वेधन नादि दिग्दवता ॥ मूखी
 तावनदारु वनु ॥ यश्चि मश्च छां अष्ट महा माया श्री सिद्धि लब्धि दया श्री गुप्ता कालिका
 या विष्णु नमः य नीयथा ॥ सिद्धाग्नि अज गि नमो सा दूति यरु निमित्ता येन स्वस्व न दो

कृपालाय वक्ष्यामि अस्मिन्महाकुरुनवाय प्रयागादि जयादि आग्निनीसहिताय
 गण वद कुरु उकाय साक्षाय सगणपनिवा नाय दिविदिगं व्यादिला कपालास
 यीगावनदारुवंतु ॥ श्री ३ सिद्धामिरुदानक यथागाभाका कुरुते दायि नारु वदु ॥ ग
 युनूवक्ष्ण (१) गुरुं रुवदु आचार्यमरु सिद्धिनरु नाजाधर्मविजयीरुवदु प्रजा
 सुखिनः सन्तु (१) गुरुं दयासु सर्वसत्ताः सुखिभारुवदु यथैन्य कालवशीरुवदु
 ॥ नाक्षः १ गुरुं रुवदु दियदवदु स्यदानागा निरुवदु धृष्टिरुवदु ॥ अस्मत् नाजाधिना
 जयनमः नवनमनमरुदानक नाक्ष विपनिधीधी जय रूपगीत्यमल्ल देव सखप्रसि

दिनमु प्रतापादयामु अस्मदाचार्यादीनामनुसिद्धिनामु द्विपदवदुःपदस्य
१७ रुंरुवदुः सर्वसत्तासुखिनः सनु सर्वविधिपनिषूक्तु ॥ यजमानस्य यज
मानीनां अचलसिंदूर सत्तानवृद्धिनामु ॥ यजमानस्य सगनपनिवानां आ
यूनानाय मेधयज न धनल श्रीसंतति सत्तानवृद्धिनामु ॥ यदि दायास्त्रियरू स्य
आचार्यस्य विष्णुमतः ॥ मनु मूढा विहीनश्च साधु ० न दावतः ॥ मनु कदादिहीन
त्वादवनादिविष्णुमतः ॥ पुत्रिपुलादिरुः जन याजन ० न कर्मसु ॥ वदः ॥ कायपु
धन क्रियाहीन न दहिनी ॥ कसु मरु सित सर्व कर्तुं निवमनलं ॥ ॥ स नः स वुः

निनननं सुकृतिना विद्वत्कृपाया दयाया राजानः प्रणिपालयन्तु वसूधाधमो दिता स
 च्चता। कालसं नतिवधिना जलमूत्रः सन्तु यजामादिता मा दन्ता धनदृष्टिवाधवसू
 द्र (गोष्ठीयमादासदा) ॥ स्वस्ति यजामादिताः प्रणिपालयन्तु न्यायनमा (नमसर्गं मरु
 ग) ॥ (ग) वाक् (ग) ॥ गुरु ममुनिह्यं लाकाः समस्तः सुखिना रुवन्तु ॥ ॥ कालवर्ष २५
 उद्यम्य न्यः पृथिवी गण्य गालिनी। द (ग) यं का रु नहिता वाक् (ग) ॥ सन्तु निरुज्या ॥ ॥ अ
 हाना हानता वा दत्त मरुतं यत्तं वान्तीर्द्धं मूद्राष्टा विधान कुमयज नविधि
 स्ता ग मरुत नमः ॥ यद् यद् मूद्राष्टा विनयिन दत्तं सर्वे ला के कनाथं सर्वसंघः

ॐ म वक्रलनदुगवहः ॥ या ॥ अति ॥ सूयसत्र ॥ ॥ दावननाहानवरुकि रावाचाप
ल्यदाघाननयप्ररावाः ॥ न्यूनाधिकं मनुकपाक्षयः ॥ कमस्रद्वाममदावहका ॥ ॥
तंगतिः ॥ सवहतातां संस्तिनं सवनावन ॥ अकथावननहतातां दद्यात्तपनमध्वनी ॥ ॥
कर्मोममनमावायागतान्यायादियत्कर्म ॥ अहर्तं वा अहीनन ॥ तपयुजद्वतागन ॥
॥ ॥ मनुकीनक्रियाहीनं रुकिहीनं तथेवव ॥ जयदामावेषाहीनं दम्यतां यनमध्वनी
॥ ॥ याथाहं यायकमोर्गा ॥ यायात्मा यायर्हं रुवा ॥ जाहिमां दवद वधि ॥ सव्वयायाहनाह
न ॥ ॥ अगमश्च ॥ धूय ॥ धूयदी ॥ अवन ॥ धूजाविधानं ॥ तस्यैव निष्पन्नं मधु ॥ ॥ इति श्री

सिद्धानिहामासंसाक्षात्प्राप्तंसाविधिःसमायुक्तं॥॥अंगीकृतं॥॥अष्टादशति॥मूल
नवाक्षरीन॥३॥॥वज्रप्रणीत॥वदित्प्रकृतंविस्तृतं॥प्रणीतारिषकवदित्याक
ण्यद्विष्टुष्टावधितलंखनहाय॥डकारंवायुवीजं॥वज्रसिद्धाय॥ॐ हताय क
र्मलेश्वरा॥ॐ श्रुतनाय कर्मलेश्वरा॥वदित्याय॥प्रवानरुत्तनतिलकं कालाय
न॥वाहुवायुधयश्चाकावज्ज्मिकानसकाय॥धमनयजवखववाहाय नूगन स
वसाधनसुतय॥यजमानसकलंगवक॥॥वलिविस्तृतंनयाय॥ॐ प्रांनो नूं
श्रुतिप्रसादा॥३॥चुतादृति॥३॥नकावीदि॥लकाचुतदाय॥गिनावष्टनकाकाय

॥ नाम्न न दाय ॥ अथ यथा शक्यं कनकं पुष्पिणाम् ॥ ४ ॥ अथ मूर्खं दत्त्वा ॥ ॐ ह्रीं गङ्गा गङ्गा
सूनुं प्रष्टुः ॥ आत्मा संसाधनं वाहनं ॥ अथ ब्रह्मालयादवा ॥ तत्र गङ्गा दूना सना ॥ ॥ अथ अ
ग्निः ॥ आग्नी चोद ॥ कलशं जलनं ॥ आग्नि चोदामि ॥ चन्द्रमूय ॥ अदानं ॥ ॥ अग्निष्ठा कर्मजन
सा ॥ नना ॥ कोमाना चने ॥ यजमानं मूय रुजने ॥ लखन दाय ॥ चन्द्रनादि दृष्टि कर्षुप
ताका ॥ अद्भुतं बाल ॥ ॥ अथ अथ ॥ जां आत्मनं दाय स्वाहा ॥ जां विद्यां दाय स्वाहा ॥ ह्रीं गिव न
दाय स्वाहा ॥ अथादि ॥ वाय ॥ सूर्यादि ॥ वक्ष्मन् विजमूद ह्य नथाप विगिव न सना ॥ आदि
मथा वक्ष्मन् नु ॥ अग्निं य विरुधितं ॥ वक्ष्मन् नादीपितं दत्त्वा ॥ सा विद्या च वमूद नना ॥ ५

यकदवनः। प्रथममहाभारतं नवः॥ गुनूतमस्तान्॥ वेङ्कां श्रीं शुं श्रीं॥ अस्वधु
मधुलाकारं, याकं यनवनावनं नत्यदं दलितं यन, तस्मै श्रीगुनूवनमः॥ गुनूव
म्हा गुनूविष्णु गुनूदयमरुध्वनं। गुनूदवजगत्सर्वं, तस्मै श्रीगुनूवनमः॥ यनमधु २७
नूस्थानमः॥ यनमष्टीगुनूस्थानमः॥ यनमावाय्यगुनूस्थानमः॥ वलि॥ यन्मासनाः २८
ययादूकां॥ यवकं, कुम्भासिनाययादूकां॥ याभ्यश्चरुतविकनर्षं॥ किञ्चिद्विचित्रं का
दृशयेद्वा॥ अस्माय रुद्रा वज्रमूढया मूरववष्टनं॥ वेङ्कां शुं रुद्रं वज्रपञ्चनखाहं॥
दृशयान्मयर्षनं॥ ज वलमकुलकुलमवलङ्कां शुं रुद्रं स्वाहं॥ न्यास॥ किञ्चिद्विचित्रं

काकलायेकः अक्रायरुट्पादकां॥ कललाधनं॥ जनमारुगवनिहकमलायेकां
शीर्षगुष्टायांयादकां॥ शुं कृद्धि कायेकलदीयायेकां श्रीनर्कनीयांयादकां॥ जांजां
शुं वर्वनगिश्च शुं श्रीम (य) मायांयादकां॥ धानअधानअधानामुखी वदुवृपाये
कां श्रीअनामिकायांयादकां॥ शुं शुं मरुनामिकायेको श्री कनिष्ठायांयादकां॥ कि
मि२ विचकाकलायेकः श्री कनननयुष्टायांयादकां॥ कनन्यायः॥ ॥ वे० जनमारु
गवतीहकमलाये श्री दुष्टवकायेयादकां॥ शुं कृद्धि कायेकलदीयाये श्री वृ
वकायेयादकां॥ जांजां शुं वर्वनगिश्च श्री दक्षिणवकायेयादकां॥ धानअधान

म्रधा नामूखी वदू नृपायेणी डरु नवकाये पादूकां ॥ च्वां च्वां मरु नानिकाये थीपधि
 मवकाये पादूकां ॥ किलि २ विच्च का दक्षये थीपना घनवकाये पादूकां ॥ नुति वज्र
 न्यासः ॥ ॥ वैं जनमारुग वति दक मलाये जां थी द द या य पादूकां ॥ ध्रुं कृद्रि का
 ये कलदी पाये जां थी नि न सखा रु ॥ जां जां दू व व न नि ख दू थी नि खा य वो मट ॥ या
 न अ धा न अ धा नामूखी वदू नृपाये थी क व वा य दू ॥ च्वां च्वां मरु नानिकाये जां
 थी न रु य या य व मट ॥ किलि २ विच्च का दक्षये द ४ अरु य रु ट ॥ नुति अंग न्यासः ॥
 ॥ ॥ जल पा न पूजा ॥ जल पा न स ना य पादूकां ॥ वैं ज वं च्वां जं जं च्वां को को कूं कूं थी ज ३

लया रुद्रा निकाये पादुकां॥ मठंग॥ कांद दयाय नमः॥ कां नि न सखा ह॥ कृं नि
खाये वो मट॥ के क व वा य दू॥ को न ग य या य व मट॥ कः अ म्मा य रु टा॥ आ वा रु
न स्का प न च न ना क न यूर्यं न मः॥ (ध नू मू डां द श ये त॥ गायत्री॥ वं ज कूल कामा
नी वि द्य ह् म नु का य स्य धी म हि न नो को मा लि य वा द या ता॥ ॥ अर्ये पा र य ज॥ अ
र्ये पा र स ना य पा दू कां॥ वं ज वं च्छं जं मं षं कां कां कूं कां थि अर्ये पा र रु द्रा निकाये पा
दू कां॥ मठंग॥ कांद दयाय नमः॥ कां नि न सखा ह॥ कृं नि खाये वो मट॥ के क
व वा य दू॥ को न ग य या य व मट॥ कः अ म्मा य रु टा॥ आ वा रु न स्का प न च न ना क न

प्रथमं नमः॥ आनिमूडां दर्शयता॥ हनं तुष्टि॥ वेङ्गो धीं धुं श्रौं श्रौं धुं धीं वे॥ आत्मपू
 जा॥ आत्मनः वंदनं नमः॥ अद्वैतं नमः॥ वीनरुत्तमं नमः॥ सर्वजनमाहूती नमः॥
 प्रथमं नमः॥ कृशो घादकां॥ ३॥ आवाहनं॥ धीमन्मन्त्रो मधुला ककुमपदसहिता॥ न
 दगा किं सुरिमाहृष्टं न्यायं बहु कं श्रु कलकल गगं प्रश्रु कं वान्यद्वं॥ ववाभाषं च
 का न्यं पूनलपि बहु नं गुरुतामधुल नसे हृष्टं यनतमे नमः गुरु नू वनं रुन वं धी क
 र्जं॥ ॥ ॥ आवाहिष्य आवाहयामि॥ विद्वत्॥ जननासना यथादूकां॥ जमयूनासना
 यथादूकां॥ ॥ मृगा सनाय यादूकां॥ वेङ्गो धीं धुं श्रौं श्रौं धुं धीं वे॥

जया लाय पादुकां॥ वलि॥ धांकां कल यूग वद कनाथा य पादुकां॥ वलि॥ ऐं अ गौं गीं
मूं ग॥ ग्लौं श्री कल ग॥ लभनाय पादुकां॥ वलि॥ आ वा रु न स्था य न च द ना क त य र्थ
नम॥ कलु न ऊ नी ग ज मू डां द र्श य त॥ ऐं अ न न न्दि न नम॥ ऐं अ मं म हा का लाः
य नम॥ वलि॥ आ धा न ण क थ पादुकां॥ अ न का स ना य पादुकां॥ क च्चा स ना य
पादुकां॥ न ना स ना य पादुकां॥ य णा स ना य पादुकां॥ क ण ना स ना य पादुकां॥ क
र्त्तिका स ना य पादुकां॥ य द्मा स ना य पादुकां॥ म यू ना स ना य पादुकां॥ अथ धा नै॥
ऐं अ णं म हा म यू न मा नू टं को मा नी वा ल नू पि णी॥ न क व रु ध नि धा नां न क मां सा

[illegible]

[illegible]

लि॥ ॥ हं सासनाय पादुकां ॥ वृषासनाय पादुकां ॥ मयूनासनाय पादुकां ॥ गनूज
 सनाय पादुकां ॥ महिषासनाय पादुकां ॥ गजासनाय पादुकां ॥ खनासनाय पादु
 कां ॥ सिंहासनाय पादुकां ॥ ॥ वैं गजुद्या नजुमाद्य वनद्वी मलथी वक्राणी वि च्चयादु १००
 कां ॥ ॥ वैं गजुद्या नजुमाद्य वनद्वी मलथी मरुध्वनी वि च्चयादुकां ॥ ॥ वैं गजुद्या नजुमा
 द्य वनद्वी मलथी कोमानी वि च्चयादुकां ॥ ॥ वैं गजुद्या नजुमाद्य वनद्वी मलथी वे
 ष्ठी वि च्चयादुकां ॥ ॥ वैं गजुद्या नजुमाद्य वनद्वी मलथी वानाहि वि च्चयादुकां ॥
 ॥ वैं गजुद्या नजुमाद्य वनद्वी मलथी वृद्धायणी वि च्चयादुकां ॥ ॥ वैं गजुद्या नजुमाद्य

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 हा ॥ दुं गिखाय वो मट ॥ दुं क व वाय दू ॥ दुं न रु रु या य व मट ॥ दुं अ म्मा य दू ट ॥ धर्त न
 वलि ॥ ॥ उरु न या ॥ शि या अ लि ३ ॥ दुं म हा ख गा स ना य वा दू कां ॥ दुं जां दुं हां दुं कां ॥
 कां न मः ॥ श्री सिद्धि लक्ष्मी देवी अम्मा या दू कां ॥ म उं ग ॥ शुं घ न म हं सि नी सर्व हा वा दू द
 या य न मः ॥ शुं गि न स स्वा हा ॥ शुं गि खा य वो म ट ॥ शुं क व वा य दू ॥ शुं न रु रु या य
 व म ट ॥ शुं अ म्मा य दू ट ॥ धर्त न वलि ॥ ॥ दुं गि वा स ना य वा दू कां ॥ शि या अ लि ३ ॥
 दुं सिद्धि क लाली जां दुं कां न मः ॥ स्वा हा धी यु अ कालि का र्थ ये अम्मा या दू कां ॥ म

[illegible]

२स्वाहा॥ श्रीं कौं कूल यूर वट् कना था य वलिं गृह्ण २स्वाहा॥ गां गौं गूंग ॥ (गौं श्री कूल ग ॥)
 धना य वलिं गृह्ण २स्वाहा॥ हूं मरु क न वि न भ म गाना धि य न य वलिं गृह्ण २स्वाहा॥ श्रीं
 प्राप्ति दि वा म ॥ शु धना य वलिं गृह्ण २स्वाहा॥ आ का ग वा नि नी स च गे त्या वलिं गृह्ण
 २स्वाहा॥ स च त्या रु गे त्या स च त्या पि षा य त्या स च त्या ॥ सु द व ना त्या वलिं गृह्ण २स्वाहा॥
 आ वा रु न स्त ष न यूर्य न म ॥ था नि मू डा ॥ नि नि र्दामू डा ॥ धू य ॥ दी य ग न्ध स मा यूर्क
 स च द वा पि था नू रु ॥ आ ध्या नां स च द वा नां धू या र्य य नि गृह्ण तां ॥ धू या रु न मू रु ग
 वा न् वि ध नू यी म रु ध वी ॥ धू य ना न्य य द वा सि सृ यी तां य न म ध वी ॥ ॥ दी य ॥ सू य

रुयं सर्वविद्वान्काय. गंगीगुं (गेश्वर) (२. गगनगतिगत, सिद्धि सर्वथराव ॥ ॐ
 द्रुं मूलागजाक्ष, गगनवनगतः आभूयानकसंस्कृतं. ॐ ह्रीं हूं हां गंग (१०) दिन द
 विश्वग (१०) विधिनाथं नमस्कृतं ॥ ॥ ॐ ह्रीं हूं हां गंग (१०) दिन द
 लाखा, सा (गोत्री) सा वदनी, रुगवतिगुरुदा, माह का धर्म मूला ॥ सा वदनी सा वदनी
 यरुग (१०) सकलारु नवीक्षु याला, सान कान कन्या विविध गुण दया, यागिनी वी
 नमामि ॥ ॥ वदनी कम नन्द सोम्य वदनी, माह धनी निनया को मानिनी वदनी ना
 मन कलि वकायु धा वदनी ॥ वानाहि यन द्या नय द्य न मुखि यदी वदनी युवा व

मू० ग० नाथरु नवगला नक्षत्रममाहका॥ ॥ आमानका विनशा सुलरुननति
नामरुमागममि, विन्वाहिवा नूनशाऽष्टुतलजयनामखना नलशा रु। दवांग
वक्रसारु वनवनकषमववनकषाशुय. सामश्री कृत्तिकाखावितनहुत नसा था
नदियाद्यमाद्य॥ ॥ इहून्नाम्बुज कर्त्तिकाय विगतापी सिद्धिलम्पना कथ्यूनरु
ठिकेन्द्रकुपुषवना, निप्रकपायायका॥ सीमाना नवदूऽखयद्वज्ररु निनीस्कम्यम
सर्वदा। थीमत्येऽमूखाम्बुजादगाडुजा, प्रतस्तितापाडुवा॥ ॥ यासानककाग्निकुरुवाहि
तिरुस्वनूपाऽशामाक वक्रिषिप०, दलम० सैऽह विचनचिरु विषया, दिविलीन

रावा. खा रावरा विघनां घनमामिकाली ॥ ॥ वेडी (वेवसदासनस्य न धनी. म. धेलला
ठयरां. सोः कां कां किमनूगवनी. वसीदस्यां मन्वमां सवतः ॥ ॥ एमा सो विपूला रुदिदि
निविवा. स्त्री सो सदा रुदिना. द्विं न्याद सदा सदा यं विपूनाय. याति मयि वा यय ॥ ॥ मा
या कृष्णलनि विद्याम धूमनि कालिकला मालिनी. मार्गंगी विजया ऊया रुग वनी दवीणि
वासा रु विग कि संकल वरा. जी नयनी वाग्वादिनी रु वनी. कां कालि विपूना यनम
यी माता कृमानि ययि ॥ ॥ वानरा वमरा नोडी. को मानि न कला वनी. न क वरु यनी
धनां. सिंदूना नू. विघरा ॥ वड्डडा ग कि धू. सिद्धि पाठ धनं पुरी को मानि यन

मंगकि, मयूनवनवाहिनी॥ नकयूयनगा दवी, नकमांसावसाहिनी॥ कालायूया
महाक्षु, वतवृक्षानिवाहिनी॥ ग्राम्यपी॥ ०॥ छिनानिशकोमानिचनमासुत॥ अरुग
धयूयधूपदीपअवनपूजाविधी, नत्सर्वधनिपूर्मसु॥ ॥ नयूया॥ नमः श्रीनाथ
या॥ नमः श्रीसिद्धिनाथाय॥ नमः श्रीकूजगनाथाय॥ नमानमः॥ हंसकर्म॥ हिंसा॥ दक्षि
॥ ॥ दक्षिणागिर्वाता॥ वकानक॥ वकामूलिल॥ एकव्यापी॥ जगनिपू॥ श्वरीवासव
रुत॥ गीगग॥ यमारुगवतिने॥ श्वरीदक्षि॥ हानागम्यकूजश्वरीकलग॥ वा
नू॥ दिक्षायिका॥ थीवामायनमामि॥ विश्वजनी॥ दक्षिणागिर्वाता॥ ॥ अम्वयूवगतं

पदं रुगवती, वेगन्यनूयात्मिका, हानं वदुना नथा रुनिहलो, वन्ममनी विरुक्तं,
राम्बरे नववर्षक जतन नूयणीया गिनी यश्चकं, वडाको वमनी विरुक्त कममलं सी
पातुनिह्यं श्रीकृजा ॥ स्वा मासि चोद ॥ धनं कामा निश ॥ ॥ दवत्राणी चोद ॥ एकानक
रुवनी मूली जगती, धृष्ट, धनी वास्तव रुनिगग, धमा रुगवती निः ॥ धनी रु
दि ॥ हाना गस्य कृज धनी कूल गना वानूय दिना यिका, धी वामां धमा मि विश्व ज
ननी रु ॥ धनी सिद्धि दा ॥ स्वा मासि चोदा ॥ वै ज श्रुत धूर्व गतं पदं रुगवती वेगन्यनू
यात्मिका, हानं वदुना नथा रुनिहलो वन्ममनी विरुक्तं, राम्बरे नववर्षक जतन

नूचधीयागिनीपक्षकं वलाको वमनीविषकममलं मांवाडुनि खं कूजा ॥ न्यास
 श्लिकाय ॥ अमन ॥ कृष्ण कलश विमलनयाय ॥ आचमनीयस्वाहा ॥ अजमा
 न ॥ निर्वर्द्धनादि ॥ कृष्णकनकनयावमृशिक ॥ कलशारिषक ॥ उकारं वायुवीजं
 ॥ वन्दन ॥ श्रीखण्ड ॥ शिं धनमूढवायावनयायुत्रियानय ॥ विमलधनीमहा ॥ भारु
 नि ॥ केलायमारुनी ॥ सुमन ॥ सिद्धार्थदधिषा ॥ धं वष्टुका ॥ स्वाननय ॥ उरुत्वा
 म्बुज ॥ यागाकका ॥ उदस्येव ॥ नमस्कृतवदवगी ॥ नाअदां धनदां दयी ॥ ॥ ध
 नं पठ्यं स्वानविय ॥ मानकाका स्वानविय ॥ आनगि ॥ यगिष्ठा यगिस्त्रिभासि ॥ यूर्ध्व

२०
वन्दनयाय॥ पूर्णचन्द्रनिरं॥ ॥ साक्षिधाय॥ ॥ धनामालकावलि॥ ग॥ ॥ गाय
सकीमानी॥ दूखापिखा मालका सकताकायशुभा॥ ॥ समयकाय॥ शशदिउथ
४॥ ॥ कलककाय॥ ॥ गानविय॥ ॥ ॥ निशिखानि बहुधीकर्मविधिः समाकृ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥

१००

आशा अरु काशि
1.621
ASHA ARCHIVES





१क →

→ गावा

→ शहागाव

नदिसुदिसुवजम

1-621

ASHA ARCHIVE

ममप